@NewsRotary /RotaryNewsIndia February 2019

रोटरी समाचार

Vol.18, Issue 4 | Annual Subscription ₹ 420

Rotary

IA में भारत

रो ई अध्यक्ष बेरी रेसिन, एस्थर, रो ई निदेशक सी भास्कर, RIDE कमल संघवी और सोनल के साथ भारतीय DGE और उनके जीवनसाथी।

कुछ अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि और RID कमल संघवी के साथ भारतीय दल।

चित्र सौजन्य : rotary.org और DGE गण

विषयसूची

12 एक रोटेरियन और एक कर्नल उत्तर-पूर्व में जीवन परिवर्तित कर रहे हैं

रोटरी क्लब बैंगलोर ओर्चाड्स के अध्यक्ष, डी रविशंकर, और कर्नल क्रिस्टोफर रेगो के मध्य साझेदारी ने मणिपुर के बच्चों की ज़िंदगियों को परिवर्तित कर दिया है।

22 सूरत ने किया मलोनी का स्वागत

RIPE मार्क मलोनी सूरत में रोटरी परियोजनाओं का दौरा करते है।

26 रोटरी और एस्टर समूह बाढ़ से तहस-नहस हुए केरल में घरों का निर्माण करेंगे

रोटरी मंडल 3201, 3202 और 3211, एस्टर डीएम, एक स्वास्थ्य सेवा प्रमुख, के साथ केरल में घर बनाने के लिए एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित करते है।

34 इम्फ़ाल में एक शानदार अखिल महिला बाज़ार

ईमा कैथल, 500 वर्ष पुराने एक अखिल महिला बाज़ार का दौरा करें।

42 IA में DGE यों ने शुरू की अपनी शानदार यात्रा

सेन डिएगो में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सभा 2019 के कुछ दृश्य।

48 दिलों को बचाने का आनंद

रो ई मंडल 3291 ने जन्मजात हृदय विकार से पीड़ित नन्हें बच्चों को नई ज़िंदगी दी।

52 मदुरै में रोटरी जीवंत हो उठी

रो ई मंडल 3000 का मंडल सम्मेलन, सदस्यों के मध्य बेहतर संबंध स्थापित करता है।

56 सुविधाओं से वंचित बच्चों के लिए शिशु सदन बनाने में एक इंटरेक्टर मदद करता है

इंटरेक्टर तन्वी ने अपने दोस्तों के साथ मिलकर क्राउडफंडिग के ज़रिए एक शिशु सदन शुरू किया है।

कवर पर : रोटरी क्लब बैंगलोर ओर्चाड्स के अध्यक्ष डी रविशंकर और उनकी पत्नी पाओला मणिपुर के एक गाँव सिंगींगट के एक विद्यालय में बच्चों के साथ।

चित्र: रशीदा भगत

सीमाओं से परे सेवा

यह जानकर ख़ुशी हुई कि PRIP साबू, एक गैर-चिकित्सीय व्यक्ति, एक स्वयंसेवक के रूप में अफ़्रीकी देशों में लोगों की सेवा करने गए थे, और उन्होंने 1998 से लेकर अब तक अफ़्रीका में 67,000 से भी अधिक सर्जरियों का आयोजन किया है। उन्हें सलाम।

एन जगातीसन

रोटरी क्लब एलुरु - मंडल 3020

लेख *'सीमाओं से परे सेवा'* के 20 वर्ष बताता है कि कितने जूनून के साथ PRIP राजेन्द्र और उषा साबू रोटरी मंच के माध्यम से कार्य कर रहे है। मैं उनसे चंडीगढ़ में अपने PET/SET प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान मिला था। उन्होंने वंचित देशों से बीमार लोगों को इलाज के लिए PGI, चंडीगढ़ में लायी और उन्होंने डॉक्टरों के एक दल के साथ अफ़्रीका में चिकित्सीय शिविरों का आयोजन किया। उनकी वज़ह से मैं रोटरी क्लब दिल्ली मयूर विहार के एक सदस्य के रूप में समाज की सेवा करने के लिए रोटरी से जुड़ा। एक अफ़्रीकी बच्चे के साथ साबू की तस्वीर से मुझे सेवा जारी रखने की शक्ति मिलती है।

टी डी भाटिया, रोटरी क्लब दिल्ली मयूर विहार - मंडल 3012

जनवरी अंक में बढ़िया लेख

रोटरी न्यूज़ का नियमित पाठक होने के नाते इन दिनों के लेख मुझे रोचक प्रतीत हो रहे है। जनवरी अंक में, रशीदा भगत की सम्पादकीय *हमारे व्यथित किसानों को मदद की जरूरत है;* बेरी रेसिन का संदेश *व्यवसाय की विविधता - रोटरी की ताकत;* रो ई निदेशक सी भास्कर का संदेश *चार मार्ग परीक्षण;* जयश्री द्वारा लिखित एक *काली-टाई रात्रिभोज पर उदारता का जश्न* और यात्रा वृत्तांत *रंगीन कोलंबिया* सभी शानदार थे।

मैं रोटरी क्लब पूना, मंडल 3131, को महिलाओं को *आत्म-रक्षा के साथ सशक्त बनाने के लिए प्रशिक्षण कार्यशाला* आयोजित करने हेतु बधाई देता हूँ, जो आज के समय की मांग है।

डेनियल चित्तिलाप्पिळी

रोटरी क्लब कलूर - मंडल 3201

जनवरी अंक को पॉलिथीन कवर के बजाए एक पर्यावरण अनुकूल पेपर लिफ़ाफे में प्रदान किये जाने से मैं बहुत प्रसन्न हूँ, जिससे पर्यावरण के प्रति रोटरी की प्रतिबद्धता का पता चलता है। संपादक का लेख हमारे किसानों की दयनीय स्थिति को दर्शाता है। जैसा कि रो ई अध्यक्ष बेरी रेसिन ने कहा था, व्यवसाय की विविधता ही रोटरी की ताकत है। रो ई निदेशक सी. भास्कर उचित रूप से कहते है कि प्रार्थना करने वाले होठों से सहायता करने वाले हाथ बेहतर होते है। यह जानकर ख़ुशी हुई कि भारत के पास 4,000 मुख्य दानकर्ता एवं 92 एकेएस सदस्य है और रोई मंडल 3142 ने केरल के बाढ़ पीड़ितों के लिए घर बनवाने हेतु 25,000 डॉलर दान किये है। RIPE मार्क मलोनी द्वारा भारत में रोटारेक्ट गतिविधियों के विषय में की गई यह टिप्पणी पढ़ने योग्य है कि हमें सेवानिवृत्त व्यक्तियों को डीजीयों का पद देने से बचना चाहिए। शीला नम्बियार द्वारा 40 की उम्र के बाद फिट रहने हेतु दिए गए स्वास्थ्य सुझाव उपयोगी है। *रंगीन कोलंबिया* एक दिलचस्प लेख है। इतने ऊँचे दर्जे की पत्रिका प्रकाशित करने के लिए शुक्रिया।

एम टी फिलिप

रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन - मंडल 3211

मैं 30 वर्षों से भी अधिक समय से एक रोटेरियन हूँ, और *द रोटेरियन* और *रोटरी न्यूज़* का नियमित पाठक रहा हूँ। मेरी रिपोर्ट *मिरकल को मिला दूसरा जीवन* इतने शानदार संपादन के साथ प्रस्तुत करने के लिए धन्यवाद। *रोटरी न्यूज़* में संपादन आपके द्वारा संपादक का पद संभालने के बाद से विशेष रूप से बेहतर हुआ है। लेख सूचनाप्रद और पढ़ने योग्य है।

आर के बुबना

रोटरी क्लब बेलूर - मंडल 3291

रो ई निदेशक सी भास्कर का सन्देश *चार मार्ग परीक्षण* सार्थक रूप से सरल, अपनी शक्ति में अद्भुत, और इसके परिणामों में अविवादित है। यह परीक्षण तनाव और अनिश्चितता से भरी दुनिया में एक सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करता है। उच्च नैतिक और सदाचारी मानकों को विकसित करने और सफल बनने हेतु हमारा मार्गदर्शन करता है।

आर मुरली कृष्ण

रोटरी क्लब बेरहामपुर - मंडल 3262

आपके पत्र

तमिल अंक के लिए धन्यवाद

तमिल में रोटरी न्यूज़ को लाने के लिए धन्यवाद। सम्पादकीय निंदा हटाने के फायदे... बहुत बढ़िया है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि जहाँ हमारे पास रोटेरियन रविशंकर है जिन्होंने टीआरएफ को ₹100 करोड़ दान दिए है, वहीं हम परियोजना के कार्यान्वित होने में अनियमितता पाते है।

के पी बालसुब्रमण्यम

रोटरी क्लब अम्बासमुद्रम - मंडल 3212

हमारे क्लब के लिए विश्व हृदय दिवस गतिविधियों को प्रकाशित करने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। इसने हमें उतना ही आनंद दिया जितना आनंद हमें कार्यक्रम को आयोजित करने में मिला था।

डॉ विजय भारत

रोटरी क्लब जमशेदपुर - मंडल 3250

कृषि संकट

आपके सम्पादकीय *हमारे व्यथित किसानों को मदद की जरूरत है* के संदर्भ में, आपको पता होना चाहिए कि रोटेरियन चुनी गई सरकारों को सुझाव नहीं देते है। एक अनुभवी पत्रकार होने के नाते आपको आपकी हदे पता होनी चाहिए। रोटरी में हम केवल मानवीय सेवा करते है। भारत के हमारे किसानों की देखभाल करने के लिए हमारे पास एक सरकार मौजूद है। मीडिया घराने बहुत चीज़ों की रिपोर्ट करते है जो सही भी हो सकती है और गलत भी। लेकिन, मुझे लगता है, *रोटरी न्यूज़* ऐसा नहीं कर सकती। यदि सरकार अपने बाध्य कर्तव्यों के निर्वहन में असफल रहती है, तो उसे चुनाव में हराया जा सकता है।

के सी सेनन

रोटरी क्लब बीदर - मंडल 3160

मैंने सम्पादकीय *हमारे व्यथित किसानों को मदद की जरूरत है* को दिलचस्पी के साथ पढ़ा। महाराष्ट्र और तेलंगाना के किसानों द्वारा आत्महत्या किये जाने से इस मुद्दे ने मेरे मन को झकझोर दिया। तमिलनाडू के पूर्व मुख्यमंत्री एम. करूणानिधि ने किसानों के बाज़ार की शुरुआत करके उन्हें उपभोक्ताओं तक सीधी पहुँच प्रदान करके इस समस्या का समाधान किया था। अन्य राज्यों को भी इसे अपनाना चाहिए। किसानों को कम ब्याज वाले ऋण की भी आवश्यकता है।

लेख *रोटरी क्लब मद्रास साउथ को अपनी बाल चिकित्सा परियोजना के लिए मिला* एक मसीहा दिल को छू लेने वाला है। डॉ प्रशांत शाह ने अपने उदार दृष्टिकोण से बहुत से बच्चों को बचाया है। रोटेरियन आर सरवणन, मद्रास साउथ के रोटरी क्लब के अध्यक्ष, प्रशंसा के पात्र है।

एस मोहन

रोटरी क्लब मदुरई वेस्ट - मंडल 3000

RIDE संघवी ने सही बात उठाया

दिसंबर में अच्छे लेख थे; *वर्गीकरण विविधता सुनिश्चित करता है* में, RIDE कमल संघवी कहते है "रोटरी को दुनिया को बदलने की आवश्यकता है और हमें बहुत बड़ी जिम्मेदारी लेने की जरूरत है। पेशेवरों, उद्योगपतियों, डॉक्टरों इत्यादि, के साथ एक क्लब में बहुत क्षमता होती है, लेकिन हम अभी भी केवल किताबें और पेंसिलें दे रहे है।" वह रोटेरियनों से बड़ी सेवा परियोजनाओं को करने का आग्रह करते है।

रोटेरियन रविशंकर के ये शब्द प्रेरणात्मक है। टीआरएफ को य100 करोड़ दान देने के बाद भी वह कहते है: "मैंने कोई महान कार्य नहीं किया है... मुझे लगता है कि कुछ रोटेरियन एक किस्म के होते है जिन्हें मैं 'कॉस्मेटिक रोटेरियन' कहता हूँ।" एकदम सही! स्वास्थ्य पर लेख: चिंता करने की कोई बात नहीं वास्तव में बढ़िया है।

नवीन आर गर्ग

रोटरी क्लब सुनाम - मंडल 3090

टीआरएफ को ₹100 करोड़ का दान देने वाले रोटेरियन रविशंकर को यह कहते हुए सुनकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई कि, "मैंने कोई महान कार्य नहीं किया है।" इस दानकर्ता और उनके परिवारजनों को धन्यवाद देने के लिए मुझे शब्द नहीं मिल रहे है लेकिन मैं बस इतना कह सकता हूँ 'भगवान उनपर अपना आशीर्वाद सदैव बनाए रखें' और कामना करता हूँ कि हमारे रोटरी परिवार में ऐसे लोग और भी हो।

डॉ डी एच रामा - मंडल 3160

अध्यक्ष रेसिन कहते है कि *रोटरी न्यूज़* के कवर पर उनकी तस्वीर वास्तव में उनके लिए नहीं उस राजहंस को चरितार्थ करने के लिए है जो भीड़ के विरुद्ध जाना चाहता है।

सौमित्रा चक्रवर्ती

रोटरी क्लब टोल्लीगुंगे - मंडल 3291

रोटरी क्लब चंडीगढ़, मंडल 3080, को लगभग 150 परिवारों की स्वास्थ्य और स्वच्छता परियोजनाओं द्वारा सहायता करते देखकर बहुत अच्छा लगा जो कोई आसान काम नहीं है। रोटरी अपनी परियोजनाओं के माध्यम से समुदाय के लिए सच्ची प्रेरणा हो सकती है।

कार्यक्रम का बढ़िया परिज्ञान देने के लिए संपादक रशीदा भगत को बधाई।

विजय कुमार के एस

रोटरी क्लब बैंगलोर बसवेश्वरनगर - मंडल 3190

बेईमान रोटेरियनों के खिलाफ कार्यवाही

रोटेरियनों को ईमानदार व्यक्ति समझा जाता है। यही कारण है कि उन्हें इस सेवा संगठन के लिए चुना जाता है। लेकिन कुछ रोटरी क्लबों के सदस्य धन का उपयोग करने में पारदर्शी और ईमानदार नहीं होते और उनके क्लबों का नाम खराब करते है। ऐसे रोटेरियनों को बाहर निकाल देना चाहिए और उनकी सदस्यता तुरंत ही समाप्त कर देनी चाहिए। दिसंबर अंक की सम्पादकीय में 'निंदा हटाने की प्रक्रिया' के लिए आपके सुझाव को नेतृत्वकर्ताओं द्वारा जितना हो सके उतना जल्दी अंगीकार किया जाना चाहिए।

अरुण कुमार दास

रोटरी क्लब बारीपदा - मंडल 3262

अपने विचार संपादक को भेजें: rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com **पर ई-मेल करें।**

Governors Council

RI Dist 2981	DG	S Piraiyon
RI Dist 2982	DG	Nirmal Prakash A
RI Dist 3000	DG	RVN Kannan
RI Dist 3011	DG	Vinay Bhatia
RI Dist 3012	DG	Subhash Jain
RI Dist 3020	DG	Guddati Viswanadh
RI Dist 3030	DG	Rajiv Sharma
RI Dist 3040	DG	Gustad Anklesaria
RI Dist 3053	DG	Priyesh Bhandari
RI Dist 3054	DG	Neeraj Sogani
RI Dist 3060	DG	Pinky Patel
RI Dist 3070	DG	Barjesh Singhal
RI Dist 3080	DG	Praveen Chander Goyal
RI Dist 3090	DG	Dr Vishwa Bandhu Dixit
RI Dist 3100	DG	Deepak Jain
RI Dist 3110	DG	Arun Kumar Jain
RI Dist 3120	DG	Stuti Agrawal
RI Dist 3131	DG	Dr Shailesh Palekar
RI Dist 3132	DG	Vishnu S Mondhe
RI Dist 3141	DG	Shashi Sharma
RI Dist 3142	DG	Dr Ashes Ganguly
RI Dist 3150	DG	Ramesh Vangala
RI Dist 3160	DG	Konidala Muni Girish
RI Dist 3170	DG	Ravikiran Janradan Kulkarni
RI Dist 3181	DG	Rohinath P
RI Dist 3182	DG	Abhinandan A Shetty
RI Dist 3190	DG	Suresh Hari S
RI Dist 3201	DG	A Venkatachalapathy
RI Dist 3202	DG	Dr E K Ummer
RI Dist 3211	DG	E K Luke
RI Dist 3212	DG	K Raja Gopalan
RI Dist 3231	DG	C R Chandra Bob
RI Dist 3232	DG	Babu Peram
RI Dist 3240	DG	Dr Sayantan Gupta
RI Dist 3250	DG	Kumar Prasad Sinha
RI Dist 3261	DG	Nikhilesh M Trivedi
RI Dist 3262	DG	Bhabani Prasad Chowdhury
RI Dist 3291	DG	Mukul Sinha

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP	Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP	Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
RIPN	Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID	Sudarshan Agarwal	RI Dist 3011
PRID	Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID	Ashok Mahajan	RI Dist 3141
PRID	Yash Pal Das	RI Dist 3080
PRID	Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID	P T Prabhakar	RI Dist 3232
PRID	Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
RID	C Basker	RI Dist 3000
TRF Trustee	Gulam A Vahanvaty	RI Dist 3141
RIDE	Dr Bharat Pandya	RI Dist 3141
RIDE	Kamal Sanghvi	RI Dist 3250

Executive Committee Members (2018–19)

DG Rajiv Sharma Chair – Governors Council	RI Dist 3030
DG Pinky Patel Secretary – Governors Council	RI Dist 3060
DG Subhash Jain Secretary – Executive Committee	RI Dist 3012
DG A Venkatachalapathy Treasurer – Executive Committee	RI Dist 3201
DG Shashi Sharma Member – Advisory Committee	RI Dist 3141

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

Send all correspondence and subscriptions to

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers, 34 Marshalls Road, Egmore
Chennai 600 008, India. Phone : 044 42145666
e-mail: rotarynews@rosaonline.org
Website : www.rotarynewsonline.org

Printed by P T Prabhakar at Rasi Graphics Pvt Ltd, 40, Peters Road, Royapettah, Chennai - 600 014, India, and published by P T Prabhakar on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced, but with permission from RNT.

संपादक
का संदेश

लड़की को शिक्षित करना स्कूल खोलने के समान है ...

जब एक जैसी दूरदृष्टि, करुणा, उदारता वाले दो स्वप्नद्रष्टा, जो कर्ता भी हैं, साथ मिल जाते हैं, तब चमत्कार घटित होता है। मैंने इसकी खोज *रोटरी न्यूज़* के लिए किए गए सबसे अद्भुत कार्यभार् में से एक, मणिपुर की 3-दिवसीय यात्रा के दौरान की। यह रो क्लब बैंगलोर ओर्चाड्स के अध्यक्ष डी रविशंकर को सुनने के बाद हुई, जो इस नए रोटरी साल की शुरुआत में, द रोटरी फाउंडेशन को ₹100 करोड़ का अप्रत्याशित दान देने की घोषणा कर अचानक प्रसिद्धि के क्षितिज पर छा गए, उत्तर-पूर्व में स्कूलों के निर्माण की ज़रूरत के बारे में बताते हुए भावुक हो जाते हैं।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि मणिपुर हमारे अशांत राज्यों में से एक है जहां आतंकवादी, भारत राज्य से हुए मोहभंग की भावना का फायदा उठा कर कई स्थानीय लोगों का शोषण करते हैं और सेना की चौकियों पर हमले करते रहते हैं। लेकिन जब आपके पास सेवानिवृत्त कर्नल, क्रिस्टोफर रेगो है, एक आनंददायक कार्य में प्रयासरत जो यह निश्चित करते हैं कि गरीब से गरीब बच्चे, इस मनोरम क्षेत्र में, जिसे जवाहरलाल नेहरू 'भारत का रत्न' कहते थे - मणिपुर का शाब्दिक अर्थ है मरत्नों की भूमिम, गरिमा के साथ शिक्षा ग्रहण करें, तो उस क्षेत्र में हमारे सैनिकों को प्रोत्साहन मिलता है।

इस अंक में पढ़ें, कर्नल रेगो के चुनौती पूर्ण काम और बच्चों की लड़ाई के बारे में जो वे, पहाड़ों और घाटियों से भरे हमारे उत्तर पूर्वी क्षेत्र के दूर-दराज इलाकों में, जहां स्कूलों को जोड़ने वाली सड़कें अक्सर बाढ़ की चपेट में बह जाती हैं, बुनियादी शिक्षा पाने के लिए लड़ रहे हैं। और जो सुविधाजनक ज़िंदगी हम जी रहे हैं ज़रा उस के बारे में सोचें ... जिसमें हमारे बच्चे सर्वश्रेष्ठ स्कूल या कॉलेजों में पढ़ते हैं। हाल ही में रविशंकर ने रेगो के साथ मिलकर विशेष रूप से लड़कियों की शिक्षा और महिला सशक्तिकरण से जुड़े उपक्रमों में, ₹1 करोड़ का निवेश किया है, अपने ₹100 करोड़ के दान के अलावा।

लड़कियों और महिलाओं को अशिक्षा और गरीबी से बाहर निकालने के ऐसे दृढ़ संकल्प से आपका चित्त प्रसन्न हो जाता है, मणिपुर से 'विकसित' राज्य महाराष्ट्र की ओर बढ़ रही हूँ, इस सम्पादकीय को लिखते हुए, आज सुबह मेरी नजर *द हिंदू बिज़नेस लाइन* के फ्रंट-पेज के लेख पर पड़ी।

ये महाराष्ट्र के सूखाग्रस्त क्षेत्र में अवांछित लड़कियों के बारे में बताता है जिनका नाम *नकुशी* (मराठी में अवांछित) है और उन्हें पानी ढून्ढ कर लाने का दंड दिया जाता है। ''इस महीने की शुरुआत में,'' आगे लिखा है, ''थोड़े से पानी के लिए घंटों भटकने के बाद, नकुशी अहिरे को कुछ किलोमीटर दूर, नासिक के सर्दे गाँव के एक कुँए में पानी नज़र आया। इसे निकालते समय वो अपना संतुलन खो बैठी और कुँए में गिर गई, वहीं उसकी मृत्यु हो गई।''

प्रत्यक्ष रूप से यह रिपोर्ट कहती है कि महाराष्ट्र में इस नाम की या *धोंडा* नाम की (पत्थर, मराठी में इसका मतलब 'बोझ') हज़ारों लडकियां हैं जो महाराष्ट्र के सूखाग्रस्त क्षेत्र में पानी की तलाश कर रही हैं, जो उनकी जिम्मेदारी है। उस्मानाबाद से धोंडा बाई निम्बुले कहती है, ''जन्म से ही, हमें बताया जाता है कि हम अवांछित हैं। पानी के मटके के साथ हम इस उपनाम को ज़िंदगी भर ढोते हैं। या तो हम नकुशी हैं या फिर धोंडा हैं।'' और जैसे-जैसे गर्मियां आएंगी, ये काम करते हुए कई और लड़कियाँ/ महिलाएँ मर जाएँगी, लेख में आगे लिखा है।

रोटरी, इसके सदस्य आधार से नदारद महिला सदस्यों की तलाश में है, उधर रोटरी समूह के भीतर कई रविशंकर हैं (वो एक कन्नड़ कहावत का ज़िक्र करते हैं, एक लड़की को शिक्षित करने का मतलब है स्कूल खोलना) जो लड़कियों को शिक्षित करने के लिए पूरी लगन, निष्ठा और उत्साह से अथक प्रयास कर रहे हैं। अन्ततः शिक्षा ही, माता-पिता की भी, हमारे देश से इस *नकुशी* संस्कृति को जड़ से उखाड़ फेंकने का एकमात्र हल है, जो निश्चय ही सिर्फ महाराष्ट्र तक सीमित नहीं हैं।

रशीदा भगत

अध्यक्ष
की ज़बानी

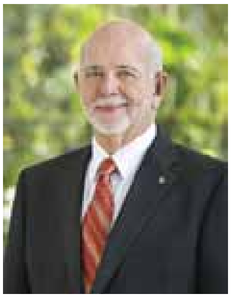

मज़बूत क्लब परिवर्तनकारी परियोजनाओं को लागू करते हैं

BE THE INSPIRATION

प्रिय साथी रोटेरियनों,

पिछले वर्ष की गई मेरी यात्राओं के दौरान, मैंने अनेक मजबूत, जीवंत क्लबों और मंडलों का दौरा किया है जो अपने समुदायों को परिवर्तित कर रहे है। जब मैं उनकी बैठकों में शामिल होता हूँ, तो मुझे एक ऊर्जा महसूस होती है। जब मैं उनके सदस्यों से मिलता हूँ, तो मैं देख सकता हूँ वे कार्यवाही करने वाले लोग है। और जब मैं उनके समुदायों को देखता हूँ, तो मैं उनके कार्य के प्रभाव को देख सकता हूँ।

मैंने ऐसे रोटरी क्लबों का भी दौरा किया है जो सामाजिक क्लब से कुछ अधिक नहीं थे। उन्हें कभी भी वैसा नहीं होना चाहिए। सौभाग्य से, एक सरल पद्धति है जो मुझे लगता है किसी भी क्लब को पुनर्जीवित करने में मदद कर सकती है।

मैं प्रत्येक रोटरी क्लब को कम से कम एक उच्च प्रभाव वाली सेवा परियोजना करने के लिए चुनौती देना चाहता हूँ। प्रत्येक क्लब में पहले से ही इसे करने हेतु क्षमता है, संसाधन है। इसमें लोगों की ज़िंदगियों को पूर्ण रूप से परिवर्तित करने की ताकत है।

इसमें लाखों डॉलर नहीं लगते है। सबसे परिवर्तनकारी परियोजनाओं में से एक थी हैती में दाइयों के एक समूह को एक जीप प्रदान करने की जिसमें मैं भी शामिल था। मैंने दाइयों से पूछा हम उनके लिए क्या कर सकते है, और उन्होंने हमसे कहा कि उन्हें देशभर में दूर दराज के इलाकों में स्थित गर्भवती महिलाओं तक पहुँचने का उपाय चाहिए। हमने एक जीप प्रदान की, उसे गुलाबी रंग दिया, और उसपर रोटरी का लोगो लगाया। तीन वर्ष बाद, हम वहाँ दोबारा गए यह देखने के लिए कि वे कैसे कार्य कर रहे है। वे परिणामों को लेकर उत्साहित थे: उन्होंने हमें बताया कि उस क्षेत्र में महिलाओं और नवजातों की मृत्यु दर में 50 प्रतिशत तक की गिरावट आई है।

इसे ही मैं परिवर्तनकारी सेवा कहता हूँ।

लेकिन जीप हमेशा नहीं चलती, और सड़क पर आठ साल तक दौड़ने के बाद, वह वाहन अपनी अंतिम सांसे ले रहा था। इसलिए हमने एक गुलाबी लैंड क्रूजर खरीदी। वह अभी भी चल रही है, जिससे दाइयों को दूर दराज के इलाकों में महिलाओं की प्रसव पूर्ण देखभाल करने में मदद मिलती है।

कोई परियोजना परिवर्तनकारी कैसे बनती है? आवश्यक नहीं है कि इसमें बहुत सारा पैसा लगना चाहिए, लेकिन इसे लोगों तक पहुँचना चाहिए और समुदाय पर इसका बड़ा प्रभाव पड़ना चाहिए। यही कुंजी है, और यहीं पर सावधानीपूर्वक योजना और गहन अनुसंधान की भूमिका होती है। इसलिए अपना शोध करें। अपने संसाधनों का लाभ उठाएं। ऐसे साझेदारों की तलाश करें जो आपके प्रभाव को बढ़ा सकें। और फिर कार्यवाही करें।

बेशक, सेवा एक मजबूत क्लब द्वारा पेश की जाने वाली चीज़ों का केवल एक हिस्सा है। इसमें अच्छे वक्ता भी होने चाहिए, नेतृत्व विकास प्रदान करना चाहिए, रोटरेक्ट और इंटरेक्ट को शामिल करना चाहिए, और अपने सदस्यों की क़दर करना चाहिए और रोटरी कार्यक्रमों में हिस्सा लेने के लिए उन्हें वजह प्रदान करना चाहिए।

यदि आपका क्लब परिवर्तनशील और सुव्यवस्थित है, तो बाकि सब ठीक होगा। सदस्य व्यस्त रहेंगे, और नए सदस्य आपके साथ जुड़ने के लिए उत्सुक होंगे। अनुदान संचयन आसान होगा: लोग तब देना पसंद करेंगे जब वे देखेंगे कि कैसे उनका पैसा परिवर्तन ला रहा है और जब वे यह जान जाएँगे कि संस्थान जवाबदेही है। आपका क्लब जीवंत, प्रासंगिक, और सजीव होगा - और यह अपनी कोटि के साथ-साथ उस समुदाय के लिए *प्रेरणा बनेगा* जिसकी यह सेवा करता है।

बेरी रेसिन

अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

रो ई निदेशक

का संदेश

सेवा के माध्यम से शांति

प्रिय रोटेरियनों,

एक प्रसिद्द अंतरिक्ष यात्री ने एक बार कहा था कि पृथ्वी के बारे में उनका दृष्टिकोण नाटकीय रूप से पहली बार अंतरिक्ष में जाने पर बदल गया। ऊपर से देखने पर, अंतरिक्ष में 650 कि मी की दूरी से, पृथ्वी एकदम शांत और सुन्दर दिखाई देती है। फिर भी उन्होंने बाद में याद किया कि जब अंतरिक्ष यान पृथ्वी के कुछ हिस्सों के ऊपर से गुजरा, तो वह उन क्षेत्रों में चल रहे संघर्षों पर विचार करके उसकी वास्तविकता से हिल गए। एक साक्षात्कार के दौरान उन्होंने एक ऐसे क्षण के बारे में बात की जब उन्होंने पृथ्वी को उस भाव से देखा जैसा उसे होना चाहिए - और उसे बेहतर बनाने के लिए उनके द्वारा हर संभव कदम उठाए जाने की चुनौती को महसूस किया। पृथ्वी को सुन्दर जगह के रूप में देखने और बनाने के लिए, शांति आवश्यक है। शांति के लिए, हमें आज दुनिया के सामने आने वाली चुनौतियों जैसे जलवायु परिवर्तन, कुपोषण, स्वास्थ्य, गरीबी और निरक्षरता को संबोधित करने की आवश्यकता है।

आर्च क्लम्फ ने रोटरी को ''एक ऐसा बल कहा है जिसने ऐसी गति पकड़ ली है जिसे कम नहीं किया जा सकता।'' क्लम्फ ने यह गहरी बात एटलांटा सम्मेलन में अपने भाषण में कही जब वह रो ई अध्यक्ष थे। रोटरी की शांति की तलाश में उनके शब्दों को भविष्यसूचक माना गया, क्योंकि यह उनकी दूरदर्शिता ही थी जिसने रोटरी संस्थान का निर्माण किया था।

वर्ष 1940 में, *द रोटेरियन* ने एक समीक्षा प्रकाशित की थी जो हवाना, क्यूबा में हुए रो ई सम्मेलन में सामने आई थी। संयुक्त राष्ट्र से बहुत पहले, और उस समय जब बहुत से लोग ''मानवाधिकार'' शब्द को समझते भी नहीं थे, हवाना में रोटेरियनों की बैठक में एक प्रस्ताव अपनाया गया जिसमें वचन दिए गए शब्दों की ''स्वतंत्रता, न्याय, सचाई, पवित्रता, और मानवाधिकार'' के सम्मान की मांग की गई। जब 1948 में, नवगठित संयुक्त राष्ट्र ने मानव अधिकारों का सार्वभौमिक घोषणा पत्र लिखा, तो उसने रोटरी हवाना सम्मेलन के प्रस्ताव को उसकी रूप रेखा के तौरपर इस्तेमाल किया। रोटरी और रोटेरियनों के लिए वह एक गर्व का पल था।

पूर्व कनाडियाई प्रधान मंत्री और सम्माननीय रोटेरियन लेस्टर बी पियर्सन ने 1957 में ओस्लो में नोबेल शांति पुरस्कार स्वीकार करते वक्त कहा था: ''दुनिया में शांति कैसे हो सकती है जब लोग एक दूसरे को जानते ही ना हो, और वे एक दूसरे को जानेंगे कैसे जब वे कभी मिले ही ना हो?'' रोटरी इसका उत्तर देती है। रोटरी *वसुदेव कुटुम्बकम* है, जो संस्कृत का एक वाक्यांश है जिसका अर्थ है पूरा संसार एक परिवार है। सामुदायिक कार्यों में रोटरी का जुड़ाव, जो दुनिया को करीब लाता है और इसे एक बेहतर दुनिया बनाने में मदद करता है, अपने क्लबों और मंडलों के वैश्विक तंत्र के माध्यम से संचालित होता है जो रोटरी संस्थान द्वारा अच्छी तरह समर्थित है।

मैं 27 अप्रैल 2015 को *द हिन्दू बिज़नेस लाइन* में प्रकाशित एक लेख का उल्लेख करना चाहूँगा, जिसमें संघर्षों के वर्षों के दौरान डढढए से युद्ध विराम को लेकर समझौता वार्ता में PRIP के आर रविन्द्रन की भूमिका का वर्णन था जिसके कारण श्रीलंका के उत्तरी हिस्से के युद्धरत इलाकों में शिशुओं का पोलियो टीकाकरण करना संभव हो पाया था। परिणाम यह था कि वर्षों तक चले गृह युद्ध के बावजूद, श्रीलंका इस क्षेत्र के पोलियो मुक्त होने वाले पहले देशों में से एक था। सेवा के माध्यम से रोटरी के शांति कार्यक्रमों पर प्रकाश डालने के लिए रशीदा को धन्यवाद।

चारों ओर एक संघर्ष मुक्त समुदाय को बढ़ावा देने के लिए *प्रेरणा बनिए*।

सी भास्कर

निदेशक, रोटरी इंटरनेशनल

District Wise TRF Contributions as on December 2018

(in US Dollars)

District Number	APF	PolioPlus	Other Restricted	Endowment Fund	Total Contributions	EREY Donors (in numbers)	EREY %
				India			
2981	28,968	3,029	0	8,000	39,997	188	4.1
2982	38,953	4,424	0	243	43,619	242	8.4
3000	10,168	1,000	17,766	4,265	33,198	17	0.3
3011	56,652	668	18,898	19,930	96,147	79	2.4
3012	64,222	50	248,069	8,800	321,141	73	2.2
3020	13,793	55,347	2,625	5,000	76,765	51	1.3
3030	9,171	0	0	0	9,171	5	0.1
3040	2,009	0	18,941	0	20,950	3	0.1
3053	37,507	0	0	0	37,507	2	0.1
3054	(18,582)	0	30,714	0	12,133	30	0.5
3060	1,777	324	115,232	71,500	188,833	459	11.2
3070	68,888	300	0	0	69,188	215	7.5
3080	56,148	7,702	15,657	5,000	84,506	48	1.5
3090	24,064	0	0	0	24,064	66	3.3
3100	18,923	475	0	0	19,398	74	4.5
3110	23,529	2,530	16,887	0	42,946	39	1.0
3120	53,310	0	185,397	0	238,707	51	1.6
3131	196,196	5,520	170,725	33,203	405,643	587	11.5
3132	6,592	310	11,471	40,000	58,374	11	0.3
3141	438,481	8,276	673,534	26,286	1,146,577	519	10.3
3142	211,833	50	(438)	0	211,445	429	13.6
3150	57,390	0	60,437	313,467	431,293	431	12.4
3160	13,628	580	0	0	14,208	40	1.7
3170	52,231	2,590	6,336	0	61,157	88	1.7
3181	63,531	691	0	103	64,325	215	7.1
3182	47,251	0	11,367	0	58,618	175	5.6
3190	46,330	3,797	10,005	1,449,359	1,509,491	297	6.2
3201	31,924	3,768	172,073	0	207,765	102	2.0
3202	9,687	4,065	0	0	13,752	21	0.4
3211	29,725	134	0	1,515	31,374	153	3.5
3212	81,489	6,501	5,250	23,000	116,240	87	2.2
3231	16,189	1,426	4,286	3,500	25,401	176	5.9
3232	88,746	535	85,795	1,000	176,077	108	2.5
3240	47,525	208	525	0	48,258	88	3.0
3250	11,186	1,834	6,444	0	19,464	38	1.0
3261	13,118	1,000	(1,492)	2,000	14,627	16	0.6
3262	$9,394	1,000	900	5,213	16,507	59	1.8
3291	71,125	0	60,840	800	132,765	173	4.8
India Total	**2,033,070**	**118,134**	**1,948,246**	**2,022,182**	**6,121,633**	**5,455**	**3.9**
3220 **Sri Lanka**	69,126	2,700	2,626	7,000	81,452	125	6.9
3271 **Pakistan**	32,622	27,599	2,275	0	62,496	19	1.4
3272 **Pakistan**	18,283	2,141	0	0	20,424	25	0.9
3281 **Bangladesh**	92,576	2,900	38,032	16,506	150,013	148	2.7
3282 **Bangladesh**	33,770	610	0	3,000	37,380	74	1.8
3292 **Nepal**	97,887	6,628	89,488	0	194,003	252	5.8
South Asia Total	**2,377,333**	**160,712**	**2,080,667**	**2,048,688**	**6,667,400**	**6,098**	**3.8**
World Total	**56,598,865**	**15,142,907**	**9,057,089**	**13,830,384**	**94,629,244**		

Source: RI South Asia Office

NiveshGuru™
SAMPATTI KI UNATTI

GROW YOUR WEALTH

NiveshGuru, a one-stop solution for all your investment needs.

Nivesh Guru Advisors Private Limited
68-B, Nariman Bhavan, Nariman Point, Mumbai - 400021

+91 22 2288 0808 | info@niveshguru.in | www.niveshguru.in

एक रोटेरियन और एक कर्नल

जीवन परिवर्तित

रशीदा भगत

रोटरी क्लब बैंगलोर ओर्चाड्स के अध्यक्ष डी रविशंकर और पाओला उनके द्वारा बनायी गई लाइज़ोन फ्रेंडशिप स्कूल, सिंगिंगट मणिपुर में।

उत्तर-पूर्व में
कर रहे हैं

जवाहरलाल नेहरू इसे भारत का रत्न कहते थे; यह पोलो और रासलीला की जन्मस्थली भी है, और अपने अद्भुत परिदृश्य के साथ-साथ, लहरदार पहाड़ियां, हरियाली से आच्छादित घाटियों, घने जंगलों और हाँ, अपनी अनूठी लोकटक झील के लिए भी प्रसिद्ध है। 2002 में पहली बार जब मैं मणिपुर गई थी, वहा के स्थानीय लोग इसे भारत का स्विट्जरलैंड कहते थे। लेकिन मणिपुर भारत के अशांत राज्यों में से भी एक रहा है और काफी समय से अन्य उत्तर पूर्वी राज्यों सहित यहां के लोग भारतीय राज्य के प्रति विरक्त रहे हैं।

कई दशकों से इस खूबसूरत अंचल को हिंसा, संघर्ष सहित और उग्रवादियों द्वारा थोपी गई एक समानांतर कराधान प्रणाली ने हिला कर रख दिया है। इस सब ने यहां के विकास को गंभीर रूप से प्रभावित किया है, हालांकि बिना चश्मे के साफ़-साफ़ दिखाई देने के बावजूद, हो सकता है ये मानव विकास सूचकांक के आंकड़ों में नज़र नहीं आये, क्योंकि इसकी आबादी मुश्किल से 30 लाख है।

लेकिन अगर इस राज्य का तीन दिवसीय दौरा, मेरे साढ़े चार साल के अंतराल में, *रोटरी न्यूज़* के संपादक के रूप में निर्दिष्ट सबसे यादगार कार्यों में से एक है, तो इसका श्रेय जाता है दो विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा यहां पूरे समर्पित भाव से किए गए कार्य को - क्रिस्टोफर रेगो, भारतीय सेना के रिटायर्ड कर्नल और आरसी बंगलुरु ऑर्चर्ड्स के अध्यक्ष डी रविशंकर, जिन्होंने रोटरी फाउंडेशन को चौंका देने वाला ₹100 करोड़ का दान दिया है।

इतनी अल्प साझेदारी में ही चुराचंदपुर जिले के गांव में एक खूबसूरत स्कूल का निर्माण भी हो चुका है, जो इंफाल हवाई अड्डे से लगभग तीन घंटे की ड्राइव पर स्थित

एक लड़की को शिक्षित करने का मतलब है एक स्कूल खोलन; लेकिन ऐसा लड़के के साथ नहीं है। मैं महिलाओंका बहुत बड़ा प्रशंसक हूं।

डी रविशंकर
अध्यक्ष, रोटरी क्लब बैंगलोर ओर्चाड्स्

है। इजरॉन्ग गांव में एक छात्रावास का विस्तार कार्य तथा बाकी सुविधाओं में सुधार कार्य और चुराचंदपुर गांव में - जो नशीली दवाओं की लत के लिए कुख्यात है, जहां सुइयों को साझा करने के परिणामस्वरूप एचआईवी फैल गया था, वहां एड्स प्रभावित बच्चों के लिए एक नए साफ़ सुथरे शौचालय का निर्माण।

एक सैन्य यात्रा

हालाँकि रविशंकर तो रोटरी की दुनिया में एक प्रसिद्ध नाम है पर रेगो को यहां परिचय की ज़रुरत है। बेंगलुरु से चौथी सैन्य पीढ़ी के व्यक्ति, एक कृषि वैज्ञानिक बनने का सपना संजोये युवा रेगो ने शहर के एक प्रतिष्ठित कृषि संस्थान में प्रवेश लिया था।

लेकिन एक दिन संशय से उनके दादा ने पूछा: ''क्या तुम वास्तव में अपनी बाकी ज़िंदगी जानवरों के पीछे थर्मामीटर डाल कर गुजारने की सोच रहे हो?'' एनडीए (नेशनल डिफेंस एकेडमी) की परीक्षा देने के लिए उन्होंने तुरंत बोरिया बिस्तर बांधा और कोर्स पूरा करने के बाद सीधे इंडिया मिलिट्री एकेडमी, देहरादून में प्रवेश ले लिया। 1984 में वे भारतीय सेना में शामिल हुए, और 2003 में, रेगो ने उन से पूर्वोत्तर की किसी भी इकाई में भेज देने करने का अनुरोध किया, और उन्होंने कहा: ''इससे पहले कि वह अपना विचार बदल दे, उसे दे दो,'' रेगो मुस्कुराते हुए कहते हैं, हम ऊबड़ खाबड़ सड़क के दूसरे विस्तार से होते हुए इम्फाल हवाई अड्डे से असम राइफल्स ऑफिसर्स मेस की ओर बढ़ते हैं जो चुराचंदपुर के तुइबोंग में स्थित है।

पूर्वोत्तर आने में ''मेरा निजी स्वार्थ था, मेरे शौक के लिए वहां बहुत कुछ है, जिसमें लोगों की संस्कृति और परंपराओं का अध्ययन, प्रकृति और वन्य जीवन, यात्रा और संगीत और हाँ, इसमें फोटोग्राफी भी शामिल है। मैं पियानोवादक हूं, माउथ ऑर्गन और गिटार मिलाकर सात वाद्ययंत्र बजा सकता हूं। अपनी सेना की पोस्टिंग पर मैं पियानो को साथ नहीं ले जा सकता था, इसलिए रेगिस्तान के बीच बैठकर मैंने बांसुरी और माउथ ऑर्गन बजाना सीखा'' रेगो मुस्कुराते हैं।

हमारी दो दिन की यात्रा के दौरान, सिंगंगट गाँव के एक स्कूल में, जिसमें रविशंकर ने स्कूल बनाने के लिए ₹42 लाख दान दिए हैं, और अगले दिन हैप्पीनेस होम में, जहाँ भाई राम एचआईवी/एड्स के बच्चों को संभालते हैं, रेगो ने अपने संगीत से बच्चों का मनोरंजन किया; इसका सबसे बढ़िया हिस्सा था गीत-संगीत में रविशंकर की पत्नी पाओला का जोश के साथ शामिल होना, बोनफायर पर, जिसकी दमक ने सर्द रात में

न केवल बच्चों के शरीर को गरमाया बल्कि उनके दिलों में भी सौहार्द भर दिया।

रेगो अपनी 35 साल की सेवा में (अपने प्रशिक्षण सहित), 2016 में सेवानिवृत्त होने से पूर्व, 2003 में पहले मेघालय में असम राइफल्स के मुख्यालय में और अगले वर्ष मिजोरम में नियुक्त रहे थे।

पूर्वोत्तर से सम्बन्ध की शुरुआत

वे कहते हैं, ''सेना के ज्यादातर लोग पूर्वोत्तर नहीं जाना चाहते थे क्योंकि वहां अच्छे स्कूलों की कमी थी लेकिन उस समय मेरे बच्चे छोटे थे और मुझे कोई समस्या नहीं थी।'' स्थानीय लोगों में उन्हें भारतीयों के प्रति बहुत आक्रोश देखने को मिला। ''लोगों में इतना आक्रोश देखकर, मैंने और मेरी पत्नी मर्ना ने यह पता लगाने का फैसला किया कि आखिर इस गुस्से की वजह क्या है।''

बाएं से : कर्नल क्रिस्टोफ़र रेगो, कर्नल मुकेश वर्मा और डी रविशंकर।

सेना के ज्यादातर लोग पूर्वोत्तर नहीं जाना चाहते थे क्योंकि वहां अच्छे स्कूलों की कमी थी लेकिन उस समय मेरे बच्चे छोटे थे और मुझे कोई समस्या नहीं थी।

उन्होंने जिन कारणों का विश्लेषण किया, उनमें से एक यह है कि सेना के अधिकारी उत्तर-पूर्व में कम समय के लिए आते हैं, इसलिए स्थानीय संस्कृति से नहीं जुड़ पाते या जुड़ने का समय और अवसर नहीं मिलता। यूपी या राजस्थान से आने वाले हमारे ज्यादातर लड़के शाकाहारी होते हैं और वे सांस्कृतिक भिन्नता और ऐसी कहानियाँ कि ये लोग कुत्ते का मांस खाते हैं आदि की वजह से इनसे दूर रहते हैं। वे लोग चना भटूरा या सचिन तेंदुलकर की बात कर के स्थानीय लोगों से नहीं जुड़ सकत! ''यहां पूर्वोत्तर राज्यों में क्रिकेट बहुत कम लोग खेलते हैं और मणिपुर में हिंदी फ़िल्में प्रतिबंधित हैं, एक तरह से उग्रवादियों ने फरमान जारी कर रखा है ताकि कहीं उन पर हिंदी हावी ना हो जाए। इसलिए हमारे सैनिक कठिनाइयों को झेलते हुए यहां रहते हैं और इससे पहले कि वे कुछ जानें उनका कार्यकाल खत्म हो जाता है, रेगो कहते हैं।

लेकिन उन्होंने और मर्ना ने मेलजोल बढ़ाने का अथाह प्रयास

किया, वे स्थानीय लोगों के घर गए, उन्हें आर्मी कैंप में बुलाया, उनके बच्चों के साथ खेले, इत्यादि और कुछ ही समय में उनके साथ दोस्ती हो गई। स्थानीय लोगों से उनके जुड़ाव और दिलचस्पी को देखते हुए, उनके अफ़सरों ने उनसे स्थानीय लोगों में भारतीय राज्य और सेना के प्रति पनपा आक्रोश और अविश्वास दूर करने की दिशा में काम करने को कहा। ''मैंने पाया कि इस पीढ़ी ने विद्रोह का सबसे बुरा दौर देखा था, सेना और आतंकवादियों के बीच लड़ाई में निर्दोष लोग पकडे गए थे। वे अपनी ही ज़मीन पर ''मुख्य भूमि'' से आये सैनिकों द्वारा, खुद की जाँच पड़ताल से नाराज थे, पर ये ज़रूरी भी था क्योंकि ये पड़ोसी देशों जैसे म्यांमार और बांग्लादेश की संवेदनशील सीमाओं के करीब है। (मिजोरम के साथ इन दोनों देशों की 722 किमी सीमा लगती है।)''

तब मालूम चला कि ''वे अपने राष्ट्रीय त्योहार तो मनाते हैं पर क्रिसमस नहीं मनाते, और मिज़ोरम में ईसाई आबादी काफी बड़ी तादाद में है।'' रेगो को क्रिसमस उत्सव की यथोचित तैयारी करने को कहा गया।

कर्नल रेगो अपनी टीम के साथ।

क्रिसमस उत्सव

उन्होंने बंगाल और बांग्लादेश की सीमा से दुर्गा और सरस्वती की मूर्तियाँ बनाने वाले कुछ मूर्तिकारों को बुलाया ; उन्हें यीशु, मरियम, जोसेफ की आदमकद प्रतिमाएँ बनाने और यीशु के जन्म के दृश्य को जीवंत करने को कहा। ''उन्होंने बहुत सुंदर मूर्तियाँ बनाइं और लड़कों की एक पलटन ने मुख्यालय से मिज़ोरम की राजधानी आइज़ोल तक मूर्तियाँ पहुंचाने में मदद की। वहां एक लोकप्रिय बाज़ार में पूरे दृश्य को रचा गया जहाँ मिज़ोरम के अधिकतर लोग क्रिसमस मनाने आते हैं, एक विशिष्ट संदेश के साथः ङ्गअसम राइफल्स आपको क्रिसमस की शुभकामनाएं देता है। यह इतना ज़बरदस्त हिट हुआ कि पहले से सूचित नहीं करने पर पुलिस सेना से नाराज़ हो गई, क्योंकि भीड़ की वजह से सड़कें जाम हो गई थीं और दूसरी तरफ फ़ोटोग्राफ़र नोट बना रहे थे क्योंकि लोग ईसा मसीह के जन्म के इस खूबसूरत उत्सव के साथ जम के फोटो खिंचवा रहे थे।''

उधर मिजोरम में असम राइफल्स की सभी पोस्ट पर 'मैरी क्रिसमस' की शुभकामनाओं के साथ एक स्टार का प्रदर्शन किया गया जिसने ढेर सारे दिलों को जीत लिया।

हमने सोचा कि जब हम किसी का जीवन बदल सकते हैं तो हम अपना पैसा बैंकों में क्यों जमा रखें? हमारे भाई-बहन, दोस्त आदि भी इसमें जुड़ते गये और ये संख्या बढ़ती गई।

क्रिस्टोफ़र रेगो
सनबर्ड ट्रस्ट

बच्चों की शिक्षा का प्रायोजन

मिजोरम की पोस्टिंग रेगो के लिए अनुभव अर्जित करने से कहीं अधिक रही थी। यह दंपति स्थानीय बच्चों के लिए कुछ करना चाहता था। उन्होंने अपनी बचत व दोस्तों और परिवार से धन इकट्ठा कर उनकी शिक्षा को प्रायोजित करना शुरू किया । उन्हें मिजोरम जाने के लिए मुआवजे में ₹10,000 मिलने के बाद, एक दिन एक वंचित आदिवासी लड़के ने मुझ से कहा कि उसे एक अमेरिकी विश्वविद्यालय में प्रवेश मिल गया है और वीजा भी। टिकट के लिए उसे पैसे की जरूरत थी और हमने अपने दोस्तों की सहायता से उसे रुपये देने का फैसला किया। लेकिन इसके साथ ही एक कड़ी शर्त भी रखी कि जैसे ही वह कमाना शुरू करेगा, उसे ये पैसे लौटाने होंगे, ताकि दूसरे बच्चे की मदद हो सके।''

अगले साल, जब वह बेंगलुरु में पोस्टिंग पर जाने वाले थे, तो उनके आश्चर्य की सीमा नहीं रही जब ऐज़ावल में असम राइफल्स के शिविर में उन्होंने उसी लड़के के पिता को दरवाजे पर एक बड़े कद्दू, कुछ केले, शाल और रुपये के बंडल के साथ खड़े देखा।

उनके बेटे ने ये रुपये कॉलेज में छोटे मोटे काम करते हुए कमाए थे। पर उन्होंने कहा कि अगर आप

FRIENDSHIP SCHOOL
WELCOME YOU ALL

LYZON FRIENDSHI
Sponsored by
PAOLA DAKOJU RAVISHANKA
&
ROTARY BANGALORE O
ROTARY DISTRICT
Under the aegis o
SUNBIRD TRUS
Inaugurated by
MR. RAVISHANKAR D
President, Rotary Bangalo
in presence of
PU PAOKHOHAO LU
Chief of Khamunnan
COL. CHRISTOPHER RE
Director, Sunbird
&
Ms. SAHITA RAVISH
On
27 Sep. 201

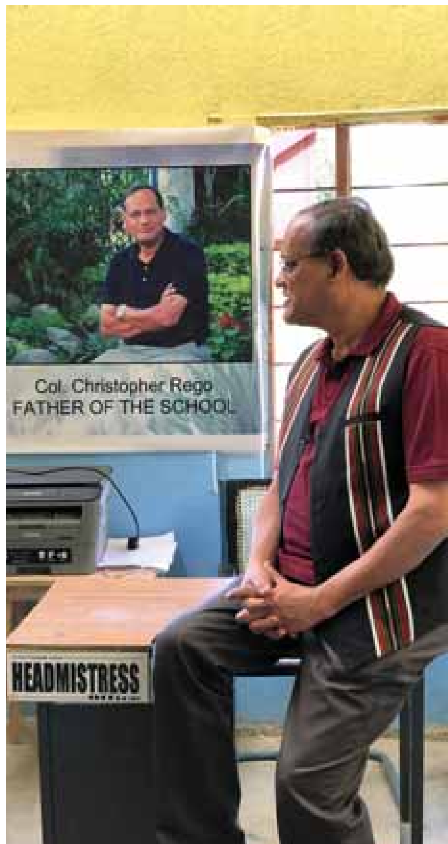
Col. Christopher Rego
FATHER OF THE SCHOOL
HEADMISTRESS

बुरा न मानें तो एक लड़का और है जिसे अपना पीजी कोर्स पूरा करने के लिए पैसे की जरूरत है। उस लड़के ने भी 8 महीने में ही रुपये लौटा दिए दिए, क्योंकि उसे बेंगलुरु की एक आईटी कंपनी में नौकरी मिल गई थी। ''इसलिए हमने सोचा कि जब हम किसी का जीवन बदल सकते हैं तो हम अपना पैसा बैंकों में क्यों जमा रखें? हमारे भाई-बहन, दोस्त आदि भी इसमें जुड़ते गये और ये संख्या बढ़ती गई।''

यह सब चुपचाप तब किया गया था जब वे सेवा में थे। जैसे ही रिटायर होने का समय आया और उन्हें अपनी आखिरी पोस्टिंग चुनने का मौका मिला तो अपना गृहनगर बेंगलुरु चुनने के बजाय, उन्होंने मणिपुर चुना। आर्मी इंजीनियर होने के नाते उन्हें बॉर्डर रोड्स आर्गेनाईजेशन (BRO) में नियुक्त किया गया जिसकी वज़ह से उन्हें इस इलाके में रहने का, मणिपुर के एक कोने से दूसरे कोने की यात्रा करने का और स्थानीय लोगों के साथ जुड़ने का एक और बड़ा अवसर मिला। लेकिन साथ ही हिंसक घटनाएं भी हुई; ''हमारे मुख्यालय के बाहर बम फेंका गया; हमारे कुछ लड़कों का अपहरण कर लिया गया, और इन विवादों का समाधान करने के लिए अक्सर मुझे ही भेजा जाता था।''

लोगों की वास्तविकता, उनकी विविधता, सार्वजनिक धारणाओं, महत्वपूर्ण मुद्दों आदि के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने का यह बढ़िया अवसर था। यहीं से उन्हें स्वयं के एनजीओ की स्थापना का विचार प्रस्फुटित हुआ। सेना से सेवानिवृत्त होने के अगले ही दिन उन्होंने सनबर्ड ट्रस्ट के सीईओ के रूप में कार्यभार संभाल लिया।

जब रवि क्रिस से मिले

आइए, देखते हैं कि रेगो और उनके सनबर्ड ट्रस्ट के लिए रविशंकर और पाओला का ऐंजल निवेशक के रूप में अवतरण कैसे हुआ। पाओला और रेगो बेंगलुरु में स्कूल के समय से दोस्त थे; ''एक साल पहले उसने मेरी मुलाक़ात रवि से करवाई थी, उन्होंने मेरी एक प्रस्तुति देखी थी, मुझे बुलाया और थोड़ी ही बातचीत के बाद मुझे ₹1 लाख का चेक दे कर अचंभित कर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि मैं नार्थ ईस्ट आ कर ये देखना चाहूंगा।''

रोटेरियन ने अपने साथ रेगो की भी उड़ान की टिकट खरीदकर फिर से चौंका दिया। असम में सबसे पहले वे माजुली द्वीप गए, जहाँ सनबर्ड ने 100 बच्चों को प्रायोजित किया है। यहाँ रेगो ने इस से जुडी एक दिलचस्प कहानी सुनाई; महाराष्ट्र के 27 वर्षीय बिपिन धाने की, कुछ समय पहले वो उनकी टीम में शामिल होना चाहते थे। ''जब मैंने बिपिन से कहा कि अभी कुछ और अनुभव ले लो, उसने कहा कि आप मेरी योग्यता के बारे में निश्चिन्त रहें;मैंने आईआईटी खड़गपुर से स्नातक की उपाधि ली है और तीन साल सिंगापुर में काम किया है, लेकिन कॉर्पोरेट जगत में काम करके खुश नहीं था, मैं नार्थ ईस्ट में बच्चों के साथ काम करना चाहता था।''

इसके बाद रेगो ने अपने दानदाताओं से उसका परिचय करवाया, क्योंकि रेगो का प्रशंसनीय उद्देश्य है सिर्फ ''मेरी अपनी टीम बनाने के बजाय कई टीमों का समूह बनाना।'' इसलिए अब धाने अपने आयंग ट्रस्ट के माध्यम से स्थानीय लोगों के साथ अपना स्कूल चलाते हैं, लेकिन उनकी 90 प्रतिशत सहायता सनबर्ड से ही आती है।

माजुली द्वीप में ब्रह्मपुत्र नदी पर स्थित अपनी इस स्कूल की यात्रा को याद करते हुए, रविशंकर कहते हैं मेरे आधे शरीर को मच्छरों ने काट खाया क्योंकि गलती से कर्मचारी ने मच्छर से बचाने वाली क्रीम के बजाय मुझे एक रूम फ्रेशनर दे दिया था। इतने सारे मच्छर थे, मुझे लगा कि वो मुझे

डी रविशंकर, पाओला और शिप्रा (दाएं) कर्नल मुकेश वर्मा की पत्नी स्कूल में बच्चों के साथ।

उठा कर ले जायेंगे!'' लेकिन अगली सुबह, धाने के प्रभावशाली कार्य देखकर, वे पिछली रात मिले आघात को भूल गए और ''उत्तर-पूर्व के उपेक्षित क्षेत्र के लिए और ज़्यादा करने के, अपने इरादे को और मजबूत किया।''

और इसके अंतर्गत एक संपूर्ण परिसर को विकसित करना, जिसमें शिक्षा, शिक्षकों को प्रशिक्षण, कौशल विकास, व्यावसायिक प्रशिक्षण और इन सबसे ऊपर है स्व-वित्त उद्यम के द्वारा महिलाओं का सशक्तीकरण, यहां उन्हें उद्यमी बनने के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा। ''इस प्रकार मुझे समाज से समर्थन मिलता गया और मैं भी एक उद्यमी बन गया क्योंकि समाज ने मुझे स्वीकार लिया था और कई छोटी छोटी बातों में मेरा समर्थन किया। वही सहिष्णुता और समर्थन आज मैं अन्य उद्यमियों को देना चाहता हूं। युवावस्था के दौरान जब मैं संघर्ष कर रहा था, और जब मैं ये कहता हूं कि समाज ने मेरी मदद की है, तो मेरा मतलब है कि मेरे प्रारंभिक वर्षों में ज्यादातर महिलाएं रही हैं, जिनमें मेरी अपनी बहनें भी थीं, जिन्होंने मुझे आज मैं जो कुछ भी हूं, उसे बनाने में उन्होंने बहुत बड़ी भूमिका निभाई है,'' ये कहना था रविशंकर का।

''कन्नड़ में एक कहावत है, एक लड़की को शिक्षित करने का मतलब है एक स्कूल खोलन; लेकिन ऐसा लड़के के साथ नहीं है। मैं महिलाओंका बहुत बड़ा प्रशंसक हूं। उत्तर पूर्व में, आप हर जगह देखेंगे कि महिलाओं की तुलना में पुरुष ज़्यादा ढीले और सुस्त हैं। इम्फाल की कड़ाके की ठण्ड में, हर

मैं गुलबर्गा गया जहाँ बंजारा जातियाँ गरीबी के कारण अपनी बेटियां बेच देते हैं; उधगमंडलम में मैं टोडा जनजाति के लिए कुछ करना चाहता हूं।

डी रविशंकर

जगह बाजार में या सड़कों पर महिलाएं सब्जी और फल बेचते हुए दिख जाएंगी। इसलिए मेरा दृढ़ विश्वास है कि महिलाओं को सशक्त होना ही चाहिए।''

एक संयुक्त उपक्रम

रविशंकर कहते हैं कि माजुली द्वीप पर यह परियोजना उनके क्लब आरसी बंगलुरु ऑर्चर्ड्स और आरसी पामविले की संयुक्त परियोजना होगी, जिसका नेतृत्व रोटेरियन रितेश गोयल, डीजी मुकुल सिन्हा (मंडल 3291) और मंडल 3240 से डीजी सल्थन करेंगे। उन्होंने कहा, ''अभी हाल ही में कोलकाता में पीआरआईडी शेखर मेहता की उपस्थिति में इन सभी ने प्रतिबद्धता जताई है।''

4 दिसंबर को, रविशंकर ने रेगो, गोयल और बिपिन धाने के साथ असम के मुख्यमंत्री सर्बानंद सोनोवाल से मुलाकात की और इस तरह का केंद्र स्थापित करने के लिए, सरकार से 10 एकड़ का प्लॉट आवंटित करवाने के लिए बातचीत जारी है।

माजुली के बाद, रेगो और रविशंकर नागालैंड होते हुए सड़क मार्ग से मणिपुर के इजीरॉन्ग गांव पहुंचे जहां एनजीओ का एक विशाल सेट अप (ढांचा) स्थित है। ''वहाँ रविशंकर ने स्थानीय लोगों के साथ भोजन किया, बच्चों के साथ गाना गाया और आखिरकार हम सिंगिंगत गाँव गए जहाँ बच्चे स्कूल नहीं जा सकते थे क्योंकि बाढ़ से स्कूल जाने वाली सड़क पूरी तरह से साफ़ हो गई थी। इसलिए हमने उस स्कूल को दूसरी जगह स्थानांतरित करने का फैसला किया।''

जब बगल के ग्राम प्रमुख ने इस योजना के बारे में सुना, तो उन्होंने मुफ्त में जमीन दे दी। उन्होंने कहा, ''उन्होंने हमें जमीन तो दे दी थी, लेकिन स्कूल बनाने के लिए रुपये नहीं थे। और फिर मिस्टर सांता क्लॉज़ आये रवि के भेष में और कहा कि चलो स्कूल बनाते हैं। यह बात है नवंबर 2017 की और उस समय मुझे लगा था कि ऐसे वादे तो मैं कई बार सुन चुका हूँ।''

लगभग उसी समय, इजीरॉन्ग गांव में जहां सनबर्ड ने एक खूबसूरत छात्रावास का निर्माण किया है (उस उल्लेखनीय और दिल छू लेने वाली पहल के बारे में अगले अंक में पढ़ें) ''हमें बच्चों के लिए पानी की विकट समस्या हो रही थी और मैंने उनसे कहा कि हमें 75,000 लीटर पानी स्टोर करने का एक

जब यहां के स्थानीय लोग मुंबई के किसी मिस्टर शर्मा या दिल्ली के खन्ना को अपने बच्चों की शिक्षा प्रायोजित करते हुए देखते हैं, तो उन्हें विश्वास होने लगता है कि शेष भारत वास्तव में उनकी परवाह करता है।

क्रिस्टोफ़र रेगो

टैंक बनाना है और उन्होंने कहा: 'ठीक है, बना लो।' फिर हम जैविक खेती में उतरने की कोशिश कर रहे थे और हमारी जमीन से लगती हुई जमीन खरीदना चाहते थे और रवि ने इसके लिए भी कहा कि खरीद लो ! मुझे संशय था, लेकिन जैसे ही वह बेंगलुरु पहुंचे, उन्होंने चेक भेज दिया,'' रेगो बताते हैं।

अभी तक नॉर्थ-ईस्ट में सनबर्ड उपक्रम की मदद के लिए रविशंकर ₹1 करोड़ से अधिक का योगदान कर चुके हैं। और ये कहानी रोटरी फाउंडेशन में ₹100 करोड़ के दान देने की घोषणा से पहले की है। ''जैसा कि मैं रोटरी बैठकों में अक्सर कहता रहा हूँ ... मैं समाज को वापस लौटाना चाहता हूं। यह काम तो मैं कर ही रहा था और ये सब मैं खुद करना चाहता था पर मुझे लगा कि मेरी भी अपनी सीमाएँ हैं। मैं मैक्रो - वृहत्कार्यों में तो अच्छा हूं लेकिन सूक्ष्म में नहीं। यहां प्रवेश होता है डीजी सुरेश हरि का। मैं अपने पैसे कल्याण कार्य में लगाना और विश्वसनीय लोगों के साथ काम करना चाहता था, जिनकी बहुत कमी है। लोगों को पहचानने में मैं बहुत अच्छा नहीं हूं। मैं रुपये के लिए प्रतिबद्ध होने लगा; मैं गुलबर्गा गया जहाँ बंजारा जातियाँ गरीबी के कारण अपनी बेटियां बेच देते हैं; उधगमंडलम में मैं टोडा जनजाति के लिए कुछ करना चाहता हूं।''

हरि ने यहां उन्हें सचेत किया था कि यदि विभिन्न ''परियोजनाओं के लिए वह दूर-दूर की यात्रा करते रहे तो अपने आप को तो ख़त्म करेंगे ही और अपने 10 प्रतिशत सपने भी पूरे नहीं कर पाएंगे।''

इसलिए अचानक उन्होंने 100 करोड़ रुपये दान करने की घोषणा की। अब उनकी दुविधा यह है कि ₹1 करोड़ तो पहले ही खर्च कर चुके हैं और इन उपक्रमों में ₹2 या ₹3 करोड़ और खर्च होंगे। पर मैं इन स्थानों के लिए प्रतिबद्ध हूँ और अपने वादे से पीछे नहीं हट सकता और मैं समझता हूँ कि टीआरएफ से परियोजनाओं तक पैसा पहुँचने में 18 महीने लगेंगे। अब मैं उस पैसे का इंतज़ाम कर रहा हूँ,'' रविशंकर चिंतित हो जाते हैं।

इस बीच, हमारे लिए सिंगंगट स्कूल के बच्चों द्वारा आयोजित शानदार मनोरंजन कार्यक्रम में, 6 सिख लाइट रेजिमेंट के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल मुकेश वर्मा और उनकी पत्नी शिप्रा भी शामिल हुए। माता-पिता और बच्चे अपने सिर पर सजे हुए गजरे के साथ, आदिवासी नृत्य करते हुए मुस्कुरा कर उनका अभिवादन करते हैं। इसके बाद वे हमारे साथ दोपहर के शानदार भोज में शामिल हुए, जिसे गांव की महिलाओं ने बनाया है, बिलकुल साफ़ सुथरी झोंपड़ी में, बावजूद इसके कि चूल्हे में लकड़ी का इस्तेमाल किया गया है ।

देखा जाए तो वास्तव में ये राज्य और भारतीय क्षेत्र के लिए एक बड़ी खबर है जहां लंबे समय से सेना की टुकडियों का स्वागत घात लगाकर आक्रमण और अपहरण आदि के साथ होता रहा है। बेशक उन की सुरक्षा जीप में बंदूकधारीयों से लैस है, लेकिन यह बरकरार है।

वापस लौटते हुए ये देख कर मैं हैरत में हूं, कि भारत के एक कोने/हिस्से में जहां लंबे समय तक मायूसी और निराशा व्याप्त रही थी वहां रेगो ने हमारे सैनिकों और ग्रामीणों के बीच सदभावना और विश्वास का पुल बनाने में कामयाबी हासिल की है। और कई गांवों में वे आदिवासी बच्चों के जीवन को परिवर्तित कर रहे हैं। उनका कहना है : ''जब यहां के स्थानीय लोग मुंबई के किसी मिस्टर शर्मा या दिल्ली के खन्ना को अपने बच्चों की शिक्षा प्रायोजित करते हुए देखते हैं, तो उन्हें विश्वास होने लगता है कि शेष भारत वास्तव में उनकी परवाह करता है।''

(अगले अंक में जारी)

चित्र: रशीदा भगत

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

सूरत ने किया मलोनी का स्वागत

जयश्री

रोटरी क्लब उधना द्वारा आरम्भित मूक और बधिर स्कूल में बच्चों के साथ गे और RIPE मार्क मलोनी।

मुंबई में दो दिन बिताने के बाद RIPE मार्क मलोनी और गे ने उनके गुजरात के सूरत दौरे पर अतीत की कुछ पुरानी यादें साझा की। ''यहाँ वापस आकर बहुत अच्छा लग रहा है। हम यहाँ 2004 में छुट्टियाँ बिताने आए थे। हिमांशु (पीडीजी हिमांशु ठक्कर) और अरुणा ने हमसे आग्रह किया था कि हम यहाँ के निकटवर्ती नियोल गाँव में एक जल परियोजना की नींव रखें,'' मलोनी ने याद किया।

पीडीजी ठक्कर और अरुणा के साथ, दम्पति ने ट्रेन से मुंबई की यात्रा की और शहर के सात रोटरी क्लबों द्वारा कार्यान्वित रोटरी परियोजनाओं का तेज़ी से दौरा किया।

''यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि यह परियोजना बहुत सारे ग्रामीणों को लाभान्वित कर रही है। रोटरी संस्थान चाहता है कि हमारा कार्य संवहनीय हो और रोटेरियनों के जाने के बाद भी लम्बे समय तक जारी रहें। यह परियोजना, इतनी सारी अन्य परियोजनाओं की तरह, उन संपर्कों की मिसाल देती है जिन्हें रोटरी ने दुनियाभर में स्थापित किए है। यह वास्तव में बहुत प्रशंसनीय है,'' RIPE मलोनी ने कहा, और फिर कुछ कम गंभीर होते हुए उन्होंने आगे कहा, ''मुझे याद है 14 साल पहले उस दिन मैं नारियल फोड़ने में असमर्थ रहा था,'' शुभ कार्यों में नारियल तोड़ने की परंपरा का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा।

सूरत का रोटरी क्लब, मंडल 3060, ने रोटरी क्लब एल्मिरा हाइट्स, मंडल 7120, यूएसए, और TRF की सहायता से 2004 में एक मिलान अनुदान के तहत नियोल में एक पेयजल परियोजना का कार्यान्वियन किया था। उसी गाँव से ताल्लुक रखने वाले एक NRI द्वारा चलाया जा रहा नियोल विलेज पब्लिक ट्रस्ट भी इस परियोजना में शामिल हुआ। आज 50,000 लीटर की टंकी 4,000 ग्रामीणों को जल उपलब्ध करवाती है। पूरे गाँव के लिए एक

भूमिगत जल निकासी प्रणाली भी स्थापित की गई। मलोनी, तत्कालीन TRF न्यासी, ने इस परियोजना की आधारशिला रखी थी।

अगला पड़ाव वराछा क्षेत्र में स्थित सावनी मेमोरियल हॉस्पिटल में स्थापित रोटरी डायलिसिस केंद्र था। यह केंद्र, रोटरी क्लब सूरत ईस्ट द्वारा रोटरी क्लब निएंडरथल और रोटरी मंडल 1810, नीदरलैंड, के सहयोग से ₹45 लाख की लागत से स्थापित किया गया है, जो प्रतिदिन चार डायलिसिस मशीनों के माध्यम से 12 मरीज़ों की सेवा करता है। ''जहाँ अन्य अस्पताल एक डायलिसिस के लिए 1,750 लेते है, वहीं यहाँ पर जरूरतमंदों को मुफ्त में यह सेवा प्रदान की जाती है,'' परियोजना के अध्यक्ष डॉ अमुलख सावनी ने कहा। RIDE भरत पंड्या मलोनी दंपति के साथ शामिल हुए और अस्पताल में उनका पारंपरिक स्वागत किया गया।

चार्ली हेल्प यूनिवर्स ट्रस्ट द्वारा संचालित एक बच्चों के घर, ढिंक चिका, पर 35 लड़कियों को अच्छी तरह तैयार किया गया और उन्होंने मनमोहक मुस्कान के साथ एक प्रार्थना और एक साथ मिलकर कहा ''हमारे घर में आपका स्वागत है सर और मैडम,'' के साथ मलोनी और गे का स्वागत किया। इस घर को रोटरी क्लब सूरत वेस्ट का समर्थन प्राप्त है। ''ये बच्चे या तो अनाथ है या इनके एकल माता-पिता है जो बेहद गरीब है। अगर वे इस घर में नहीं होते तो बाहर सड़कों पर भीख मांग रहे होते और प्रताड़ित किए जा रहे होते,'' परियोजना अध्यक्ष सेतु गाँधी ने कहा।

लड़कियों की शैक्षणिक जरूरतों का ध्यान रखने के अलावा, क्लब नियमित स्वास्थ्य और टीकाकरण शिविरों का आयोजन करता है, उसने प्यूरीफायर एवं अन्य उपकरणों को स्थापित किए है, एक पुस्तकालय और कंप्यूटर स्थापित किए है, और ''यह लड़कियों को कंप्यूटर प्रशिक्षण प्रदान करता है। बच्चे बहुत स्मार्ट और समर्पित है और निजी स्कूलों में पढ़ रहे है,'' क्लब अध्यक्ष विवेक गोएल ने कहा। ''मैंने उनकी आँखों में गर्मजोशी और प्रेम देखा,'' गे ने आगे कहा। उन्होंने उनके साथ अंग्रेजी में बात की, जिसका अरुणा ने गुजराती में अनुवाद किया। ''आप को पढ़ाई में कड़ी मेहनत करनी होगी और अपनी ज़िंदगियों को आरामदायक बनाना होगा। शिक्षा निश्चित रूप से आपको आपके गंतव्य तक ले जाएगी,'' उन्होंने सलाह दी।

मानसिक रूप से विकलांगों के लिए ममता स्कूल, जिसे रोटरी क्लब सूरत राउंडटाउन द्वारा गोद लिया गया है, में दम्पति का स्वागत एक सामूहिक नृत्य द्वारा किया गया। यहाँ पर करीब 45 बच्चों को विभिन्न गतिविधियों में प्रशिक्षित किया जा रहा है। मलोनी और गे बच्चों के द्वारा बनाए गए मिट्टी और मोम के हस्तशिल्प एवं रंग गतिविधि को देखकर बहुत खुश हुए क्योंकि वे इतनी तल्लीनता और सटीकता के साथ इतनी अच्छी तरह रंग भर रहे थे ताकि सीमा के बाहर रंग ना फैले।

कार्यक्रम में रोटरी क्लब सूरत रिवरसाइड द्वारा संचालित फिजियोथेरेपी केंद्र अगले स्थान पर है। रोटरी क्लब उढ़ना द्वारा संचालित मूकबधिर विकास ट्रस्ट स्कूल में मलोनी ने बोलने और सुनने में अक्षम बच्चों को संबोधित किया, और उनकी बाते बच्चों को सांकेतिक भाषा में समझाई गई। रोटरी क्लब डार्विन, यूके, की सहायता से क्लब ने एक खेल और व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना की है जो सिलाई, प्रसाधन, मल्टीमीडिया और मोटर रिवाइंडिंग में पाठ्यक्रम उपलब्ध करवाता है।

शाम को दो मुख्य समारोह हुए - DRR कुशल पी शाह द्वारा आयोजित रोटरेक्शन, जिसमें रोटरेक्टरों को RIPE से बातचीत करने का अवसर मिला, और रोटेरियनों के लिए एक बैठक जिसमें 11 रोटरी क्लबों

नियोल में एक जल परियोजना स्थल में RIPE मलोनी, गे के साथ PDG हिमांशु ठाकर और अरुणा।

RIPE मलोनी और गे, RIDE भरत पांड्या के साथ, रोटरी क्लब सूरत ईस्ट द्वारा प्रायोजित डायलिसिस सेंटर में।

के रोटेरियन और भूतपूर्व, नवनिर्वाचित और सेवारत गवर्नर पिंकी पटेल के साथ PRID मनोज देसाई और शर्मिष्ठा एवं RIDE भरत पंड्या शामिल थे।

RIPE मलोनी ने ठक्कर का उनके आतिथ्य के लिए धन्यवाद दिया और कहा, ''हम यहाँ केवल 24 घंटे पहले ही आए थे, लेकिन ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो हम यहाँ कई दिनों से है। सुबह से रोटरी क्लबों की इतनी महान परियोजनाओं का दौरा करके आज का दिन हमारे लिए शानदार था,'' उन्होंने दिनभर के कार्यक्रमों को सूचीबद्ध करते हुए कहा। उन्होंने आयोजन स्थल की प्रशंसा भी की - जो केंद्र में एक महल जैसी संरचना वाला एक भव्य खुला हुआ पार्टी प्लॉट है।

रोटरी के भविष्य के बारे में बात करते हुए, मलोनी ने दोहराया कि पोलियो वास्तव में रोटरी के भविष्य का बड़ा हिस्सा है। जब बात पोलियो की आती है, तो 'इतना करीब' होना भी काफी नहीं है। ''यह बात समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि यदि हम अभी पोलियो उन्मूलन पर कार्य करना बंद कर देते है और कहते है कि हम काफी कर चुके है, तो हम वह सबकुछ खो देंगे जिसका हमने अभी तक निवेश किया है। एक दशक के अंदर हम पोलियो से पीड़ित सैकड़ों बच्चों को देखेंगे, और साथ ही हम अपनी कड़ी मेहनत से बनाई गई 113 सालों की साख को खोते हुए देखेंगे। हमें वहाँ बाहर जाना होगा और यह सुनिश्चित करना होगा कि दुनिया की सभी सरकारों के लिए पोलियो तब तक प्राथमिकता रहें जब तक यह पूरी तरह खत्म नहीं हो जाता।''

अफ़गानिस्तान और पाकिस्तान की सीमा पर खतरनाक पोलियो वायरस केवल एक गढ़, और 2018 में पोलियो के केवल 27 मामलों का सामने आना, बताता है कि ''हमें अभी कार्य जारी रखना है।'' दुनिया में कहीं भी पोलियो वायरस का अंतिम मामला मिलने के बाद, विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा दुनिया को पोलियो मुक्त घोषित करने में कम से कम तीन साल का समय लगेगा। ''उस समय हम दुनिया को दिखा देंगे कि इस सफलता के पीछे रोटरी का हाथ है। एक ऐसे संगठन के रूप में जाने जाना जिसने हमारे बच्चों को एक पोलियो मुक्त दुनिया दी है, यह हमारी सार्वजनिक प्रोफाइल में इतनी वृद्धि करेगा जितनी किसी और कार्य ने नहीं की होगी और अधिक से अधिक लोगों को रोटरी से जुड़ने के लिए सोचने पर मजबूर करेगा,'' उन्होंने कहा।

2019-20 में प्रभावी होने वाली नई रणनीतिक योजना का उल्लेख करते हुए, मलोनी ने प्रत्येक चार प्राथमिकताओं - हमारे प्रभाव को बढ़ाना, हमारी पहुँच को विस्तारित करना, प्रतिभागियों की सहभागिता को बढ़ाना और अनुरूप होने की हमारी क्षमता में वृद्धि करना - को विस्तार में समझाया। क्लब में केवल सदस्यों का होना ही पर्याप्त नहीं है। ''हमारे लिए सदस्यों का रोटरी गतिविधियों में सक्रिय रूप से व्यस्त रहना जरूरी है। रोटरेक्टर हमारे संगठन की एक अद्भुत संपत्ति है। हमें उनसे हमारे संगठन के सदस्यों के बराबर ही बर्ताव करना चाहिए ना कि कार्यक्रमों में भाग लेने वाले प्रतिभागियों की तरह।''

रोटरी की अनुकूलन क्षमता में वृद्धि करने पर, उन्होंने कहा कि रोटरी को हर समय विकासवादी और समय-समय पर परिवर्तनवादी होना होगा। ''हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि रोटरी अनुभव उन लोगों की ज़िंदगी में फिट बैठे जिन्हें हम प्रतिभागियों और नेतृत्वकर्ताओं के रूप में अपने संगठन का हिस्सा बनाना चाहते है। हमें समय की प्रतिबद्धता और नेतृत्व के पद और किसी वरिष्ठ नेतृत्व भूमिका निभाने से पूर्व उस व्यक्ति द्वारा आवश्यक रूप से धारण किए गए पदों की संख्या पर पुन:विचार करने की जरूरत है। निश्चित रूप से इसका अर्थ हमारे कार्यों और संसाधनों को रोटरी की रणनीतिक प्राथमिकताओं से सरेखित करना है ताकि दीर्घकालिक सदस्यता स्थिरता और लक्ष्यों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को मजबूत बनाया जा सके।''

उनके द्वारा किये गए दौरे के सम्मान में, मंडल 3060 ने उसके 3.98 लाख डॉलर के टीआरएफ योगदान को RIPE मलोनी को सौंपा।

चित्र: जयश्री

ADVT

20 YEARS OF DEDICATED HOLY KAILASH & MANASAROVAR YATRA

MUKTINATH KATHMANDU YATRA - 6/10 DAYS

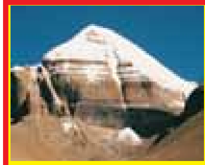

KAILASH, MANASAROVAR - 14 Days

Departure Date : 13.05.19 / 12.06.19 / 11.07.19 / 10.08.19 / 08.09.19

EVERY FULLMOON DAY WE ARE AT MANASAROVAR LAKE

KAILASH, MANASAROVAR - HELICOPTOR 11 Days

Departure Date : 10.05.19 / 08.06.19 / 21.08.19 / 05.09.19

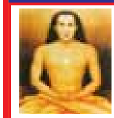

MAHA AVATAR BABAJI CAVE
NAINITAL, HARIDWAR
JIM CORBETT - 8 DAYS

ANDAMAN 4 / 5 Days

KASI, GAYA, ALLAHABAD 5 Days Departure Every Month

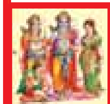

SIVA, SAKTHI, MURUGA, RAMAYANA SRI LANKA YATRA - 8 DAYS
Yazhpanam, Kathirkamam, Thiruketheeswaram,
Thirukoneeswaram, Kandy, Colombo, Nuwara Eliya

CAMBODIA, VIETNAM 7 Days

SRI LANKA 5 DAYS
Colombo, Kandy, Nuwara Eliya, Kathirkamam

GANGOTRI-YAMUNOTRI KEDAR-BADRI
TRAIN - 17 DAYS
FLIGHT - 13 DAYS
Departure : May, June, September

AMARNATH, VAISHNO DEVI

July - 2, July - 15
Train - 12 Days
Flight - 10 Days / Helicopter - 5 Days

Royal Rajasthan 12 Days

MALAYSIA, SINGAPORE

Sentosa, Genting, Batu Caves,
Kuala Lumpur Univesal Studio
6 Days / Departure Every Month

BHUTAN SIKKIM 5 DAYS

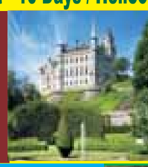

EUROPE 9/12/14 Days

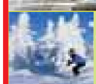

SHIMLA, KULU MANALI 10 DAYS

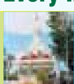

MAURITIUS
5 Days / Departure Every Month

GANGTOK, DARJEELING 10 Days

CHINA, HONG KONG, MACAU - 8 Days

SHIRDI - 2 DAYS (FLIGHT)

NORTH-EAST STATES - 5 / 10 / 15 DAYS

Contact For All Group Tours Any Places... Any Dates....

We Arrange All Domestic & International Tours

MANOHAR TRAVELS

2/176, Periyanna Street, Erode - 638 001. Cell : 94433 80152, 94434 04919
11, Veerasamy Street, Periyamet, Chennai-600003. Cell :95780 38845, 81220 20021
www.manohartravels.com e-mail : manohartravvels@gmail.com

RID सी भास्कर (बीच में) के साथ (दाएं से) DG ए वी पति, PDG गण गिजू अलेक्ज़ेंडर जॉर्ज, ई के सगादेवन, DG ई के उमर और (दाईं और खड़े हुए) डॉ राजेश सुभाष।

रोटरी और एस्टर समूह बाढ़ से तहस-नहस हुए केरल में घरों का निर्माण करेंगे

रशीद भगत

फिर से, एक और महत्वपूर्ण साझेदारी के अंतर्गत रोटरी और स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में अग्रणी कंपनी एस्टर डीएम ग्रुप, केरल के बाढ़ पीड़ितों के लिए घर बनाने के लिए एक साथ आगे आए हैं। दिसंबर में एस्टर ग्रुप के चेयरमैन डॉ आज़ाद मूपन और डिस्ट्रिक्ट गवर्नर्स डॉ इ के उमर (3202), ए वेंकटचलपति (3201) और इ के ल्यूक (3211) ने पीडीजी डॉ जॉर्ज के प्रतिनिधित्व में कोलीकोड में, समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। प्रत्येक ने इन घरों का निर्माण करने के लिए 1 मिलियन डॉलर प्रतिबद्ध किये हैं।

कुल 300 से 500 घरों के निर्माण की योजना बनाई गई है, प्रारंभिक चरण में 75 घरों की एक पायलट परियोजना - रोटरी के तीन मंडलों में - प्रत्येक में 25 घर - जून 2019 तक लागू की जाएगी।

एमओयू पर हस्ताक्षर के दौरान मौजूद रहे रो ई निदेशक सी भास्कर ने तीनों मंडल अध्यक्षों की प्रशंसा करते हुए कहा कि ''वे सहायता और पुनर्वास के क्षेत्र में शानदार काम कर रहे हैं जिसने पूरे रोटरी विश्व का ध्यान अपनी ओर खींचा है। अब जब राहत का दौर खत्म हो गया है, तो रोटरी कॉर्पोरेट साझेदारों की तलाश कर रही है और हमें डॉ मूपन से बेहतर समाज-सेवी नहीं मिल सकता, जो न केवल उनकी कंपनी बल्कि उनके निजी ट्रस्ट द्वारा किए गए धर्मार्थ कार्यों के लिए भी प्रसिद्ध हैं।''

केरल में जो कुछ हुआ उस आपदा की तुलना किसी से नहीं की जा सकती। चूंकि हम केरल से हैं और मेरे करियर की शुरुआत भी केरल में ही हुई थी, हम कुछ ठोस काम करना चाहते थे।

डॉ आज़ाद मूपन
अध्यक्ष, एस्टर ग्रुप

निकट भविष्य में - एक नई रोटरी-एस्टर साझेदारी

एस्टर ग्रुप के चेयरमैन डॉ आज़ाद मूपन ने कहा कि वे बाढ़ से तबाह हुए केरल में घरों के निर्माण के लिए रोटरी इंटरनेशनल के साथ साझेदारी करके बहुत खुश थे। ''लेकिन हम रोटरी के साथ सिर्फ ये एक परियोजना ही नहीं बल्कि आगे कई साझेदारी देख रहे हैं। स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में कई देशों में हमारी सार्थक उपस्थिति दर्ज़ है और एक वर्ष में लगभग 2 करोड़ रोगी देखते हैं। अब हम नाइजीरिया में एक विश्वविद्यालय अस्पताल के साथ साझेदारी कर अफ्रीका में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने जा रहे हैं।''

उन्होंने रोटरी के साथ अफ्रीका में स्वास्थ्य क्षेत्र के अनुभवी लोगों को प्रशिक्षित करने की परियोजना पर काम करने की इच्छा प्रकट की, ''वहां ऐसे प्रशिक्षित पेशेवरों की ज़बरदस्त कमी है। हम अफ्रीकी देशों में काम तो कर रहे हैं, लेकिन हम या कोई अन्य भी तब तक पूरा काम नहीं कर सकते जब तक वहां अंतिम छोर पर प्रशिक्षित लोग ना हों।''

अगर रोटरी ऐसे पेशेवरों की हवाई यात्रा और आवास को प्रायोजित कर सके और केरल ला सके, तो एस्टर समूह प्रशिक्षण देने को तैयार है, जिनके पास - केरल के वायनाड जिले में एक मेडिकल कॉलेज, दो पैरामेडिकल कॉलेज, एक फार्मेसी कॉलेज आदि के साथ प्रशिक्षण की पूर्ण सुविधाएँ उपलब्ध हैं। वर्तमान में, कुछ पेशेवर आते हैं और प्रशिक्षित भी होते हैं लेकिन इसके लिए एक सतत कार्यक्रम बनाये जाने की आवश्यकता है। ''और इस तरह हम एक साल में 300 लोगों को प्रशिक्षित कर सकते हैं; इस लिए हमारे डॉक्टर अफ्रीका जा कर स्वास्थ्य प्रक्रिया करने की अपेक्षा या सीधे मछली उपलब्ध कराने के बजाय, हम उन्हें मछली पकड़ने के तरीके सिखा सकते हैं!''

इसके अलावा, दोनों सहयोगी यहां से अफ्रीकी देशों के सुदूर क्षेत्रो में टेलीमेडिसिन की संभावनाएं तलाश सकते हैं। ''इनमें से कई रोगियों के रोग की पहचान नहीं हो पाती है; अगर हम स्थानीय डॉक्टरों से जुड़ सकें और रोग की पहचान कर पाएं, तो टेलीमेडिसिन के ज़रिये उन्हें काफी मदद मिल सकती है। हम टाटा कम्युनिकेशन के साथ एक टेलीमेडिसिन प्रोजेक्ट कर रहे हैं, जिनकी अफ्रीका में व्यापक उपस्थिति है और रोटरी इंटरनेशनल की जड़ें तो पूरी दुनिया में फ़ैली हुई हैं।''

इस सुझाव पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए रो ई निदेशक सी भास्कर ने यह कहते हुए इसका स्वागत किया ''शानदार विचार, जो रोटरी के लिए सही मायने में एक अंतर्राष्ट्रीय सहयोगात्मक प्रयास होगा और अफ्रीका हमारा फोकस क्षेत्र भी है। कोयंबटूर में गंगा अस्पताल के मालिक एक रोटेरियन, डॉ राजसभापती, इस तरह की पहल कर चुके हैं। वे बांग्लादेश और अफ्रीका के डॉक्टरों को बुला कर उन्हें माइक्रो प्लास्टिक सर्जरी में प्रशिक्षित करते हैं।''

उन्होंने सुझाव दिया कि इस तरह की पहल से अफ्रीका के डॉक्टरों के अलावा, बांग्लादेश, श्रीलंका और फिलीपींस के डॉक्टरों को भी प्रशिक्षण कार्यक्रम के दायरे में लाया जा सकता है।

भास्कर ने डॉ मूपन से इस सुझाव को रो ई बोर्ड और द रोटरी फाउंडेशन तक पहुंचाने और टीआरएफ फंडिंग के अंतर्गत केरल में डॉक्टरों की यात्रा और रहने की संभावना तलाशने का वादा किया, जिन्हे एस्टर समूह के चिकित्सा संस्थानों द्वारा प्रशिक्षित किया जा सकता है।

उन्होंने कहा क्योंकी डॉ मूपन परियोजना को तुरंत शुरू करना चाहते थे इसलिए इस चरण में, विशेषकर, रोटरी फाउंडेशन को शामिल नहीं किया गया क्योंकि आवश्यक मंजूरी लेने में काफी समय लग जाता।

अपने समूह के साथ-साथ रोटरी के प्रतिनिधियों की एक छोटी सभा को संबोधित करते हुए डॉ मूपन ने कहा कि ''केरल में जो कुछ हुआ उस आपदा की तुलना किसी से नहीं की जा सकती।'' दुनिया भर के कई देशों में उनका समूह धर्मार्थ गतिविधियों से जुड़ा हुआ है, विशेष रूप से स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में, जिसमें अफ्रीका और सीरिया भी शामिल हैं। ''चूंकि हम केरल से हैं और मेरे

एस्टर ग्रुप के अध्यक्ष डॉ आज़ाद मूपन और रो ई अध्यक्ष सी भास्कर MoU पर हस्ताक्षर करने के बाद।

करियर की शुरुआत भी केरल में ही हुई थी, हम कुछ ठोस काम करना चाहते थे। केरल में हमारी टीम कई जगह मौजूद थी इसलिए जहां डॉक्टर नहीं पहुँच सके, टीम ने सबसे पहले उन जगहों पर बाढ़ प्रभावित लोगों की चिकित्सा संबंधी ज़रूरतों का ध्यान रखा।''

तत्काल की गई कार्रवाई का एक सकारात्मक परिणाम यह रहा, इसके निवारक उपायों और जानकारी को धन्यवाद, कि ऐसी बाढ़ के बाद आमतौर पर होने वाली महामारी व बीमारियों का प्रकोप टल गया। उन्होंने कहा कि इस बाढ़ में करीब 20,000 घर पूरी तरह से नष्ट हो गए और लाखों घरों में आंशिक क्षति हुई है।

हमें लगा कि ऐसे मौकों पर त्वरित कार्रवाई सबसे महत्वपूर्ण है, ''हमने तुरंत घोषणा की कि हम स्वयं के धन से केरल में 250 घरों का निर्माण करेंगे। इसके अलावा, हमने मुख्यमंत्री राहत कोष में ₹2.5 करोड़ का चेक भी दिया है।''

जब उन्हें अपने करीबी दोस्तों, रो क्लब कालिकट मिडटाउन से 3202 के पूर्व असिसेंट डीजी डॉ राजेश सुभाष और रोटेरियन अब्दुल हमीद से और फिर डीजी उमर से पता चला कि रोटरी भी बाढ़ पीड़ितों के लिए घरों का पुनर्निर्माण कर रही है, ''मुझे लगा कि हमारे काम को विस्तार देने का यह अच्छा अवसर है।''

अफ्रीका में व्यापक उपस्थिति शानदार विचार हैं, जो रोटरी के लिए सही मायने में एक अंतर्राष्ट्रीय सहयोगात्मक प्रयास होगा और अफ्रीका हमारा फोकस क्षेत्र भी है।

रो ई निदेशक **सी भास्कर**

उन्होंने बताया कि भारत के बाहर भी एस्टर समूह ने इस तरह के कई काम किया है। ''नेपाल में आये भूकंप के बाद हमने वहां 500 घर प्रायोजित किये थे। प्रति वर्ष हम MIMNS ट्रस्ट के माध्यम से ₹50 करोड़ परोपकार पर खर्च करते हैं और आम तौर पर इन धर्मार्थ गतिविधियों का प्रचार नहीं करते। लेकिन हाल ही में, बिल गेट्स जैसे धर्मार्थ लोगों से प्रेरणा लेने के बाद हमें लगा कि अगर हम इस तरह के कार्य प्रचारित करें तो अन्य लोग भी इन का अनुसरण कर सकते हैं।''

एस्टर ग्रुप के कार्यकारी निदेशक, विल्सन ने बताया कि समूह के ट्रस्ट द्वारा की गई चैरिटी के अलावा भी डॉ मूपन ने वंचित लोगों की मदद के लिए एक निजी ट्रस्ट में अपनी सम्पत्ति का 20 प्रतिशत अलग से रखा हुआ है।

डॉ मूपन ने इसमें जोड़ा कि भारत में निर्धन लोगों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, उन की मदद करने के लिए, ''मैं रोटरी इंटरनेशनल के साथ जुड़ कर कहीं बड़े काम करने के अवसर देखता हूं, विशेष रूप से स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में क्योंकि उस कार्य के लिए अपेक्षाकृत हम अधिक सक्षम हैं। भारत में हमारे 11 अस्पताल हैं व 12 वां चेन्नई में खोलने जा रहे हैं और रोटरी जैसे संगठनों के साथ साझेदारी करना चाहते हैं ताकि हम लागत मूल्य पर ही काम कर सकें ... निश्चय ही, हमारा उद्देश्य लाभ कमाना नहीं हैं!''

डीजी उमर और पैथी दोनों ने कहा कि वे ऐसी जमीनों की तलाश में हैं जिस पर घर बनाए जा सकें। यह तय किया गया कि एक समूह में घर बनाने के बजाय, लोगों को उन्हीं के क्षेत्रों में घर बना कर दे दिए जाएं, अन्यथा इसका खतरा अधिक है कि इन घरों का उपयोग ही न हो।

चित्र: रशीदा भगत

टीआरएफ न्यासी अध्यक्ष का संदेश

अनुदान - एक बेहतर दुनिया की जीवन रेखा

प्रत्येक दिन के हर क्षण में, रोटेरियन रोटरी संस्थान के माध्यम से दुनिया में अच्छा कर रहे है। वे स्थानीय और वैश्विक दोनों स्तर पर योजनाओं का निर्माण कर रहे है, निधीयन कर रहे है, कार्यान्वित कर रहे है, और उन्हें पूरा कर रहे है। यह हम सभी के लिए बहुत गर्व की बात है।

मेरे लिए यह रोटरी सदस्यता की अनूठी विशेषताओं में से एक है। आप जितना चाहे उतना सम्मिलित हो सकते है। आप एक परियोजना में शुरू से लेकर अंत तक भाग ले सकते है, या आप प्रक्रिया के दौरान कहीं से भी शामिल हो सकते है। लेकिन यह सब आपके और मेरे द्वारा संस्थान को उपहार देने से शुरू होता है ताकि धन उपलब्ध हो सके।

हम में से बहुत लोगों के लिए, अनुदान गतिविधि में भाग लेने के लिए एक मंडल अनुदान सबसे तेज़ और सुलभ तरीका है, क्योंकि इसमें आमतौर पर एक स्थानीय परियोजना शामिल है। एक मंडल अनुदान परियोजना रोटरी को प्रदर्शित करने, प्रचार प्राप्त करने, भावी सदस्यों और लाभार्थियों को शामिल करने, और अपने स्वयं के समुदाय में मूल्य जोड़ने का अच्छा तरीका है।

वैश्विक अनुदान हमें अपने छह क्षेत्रों की एक या उससे अधिक अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाओं में भाग लेने का तरीका प्रदान करता है। जब हम किसी परियोजना का विचार विकसित करते है, तो हमें समुदाय की जरूरतों, आवश्यक संसाधनों और उन तक पहुँचने के तरीकों, एवं रोटेरियनों, साझेदारों, और उस क्षेत्र से संबंधित अन्य लोगों के सहयोग से किसी परियोजना को कैसे कार्यान्वित किया जाए, यह सब जानने के लिए आंकलन करने की आवश्यकता होती है। हम यह सुनिश्चित करते है कि हमारी परियोजना में रोटेरियन भागीदारी हो, इससे बड़ी संख्या में लोग लाभान्वित हो, और इसके पूर्ण होने के पश्चात इसका स्थानीय निवासियों द्वारा प्रबंध किया जा सके ताकि समुदाय हेतु दीर्घकालिक प्रभाव सुनिश्चित हो सके। हम सभी को यह जानकर तसल्ली होती है कि इन सोपानों का सतर्कतापूर्वक पालन किया गया है।

और, इस उचित सुप्रबंधकता और उत्तरदायित्व के कारण, हम सभी अपना समय, प्रतिभा, और निधि का योगदान जारी रखते है। आप देखिए, यह हमारा संस्थान है। हमें इस पर गर्व है, और यह वास्तव में हमारी दुनिया में परिवर्तन ला रहा है!

रॉन डी बर्टन
फाउंडेशन न्यासी अध्यक्ष

सम्मेलन

लोगों के बीच जाएं

गुन्ड्ला मिएथके

हैम्बर्ग शहर की सैर करना बहुत ही आसान है, और इसका संपूर्ण श्रेय इस शहर के सुरक्षित, कुशल सार्वजनिक परिवहन नेटवर्क को जाता है। और जो लोग 1 से 5 जून तक रोटरी अंतराष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेंगे, इसकी अनुशंसा करने के लिए इसके पास कुछ और होगा: यह मुफ्त में उपलब्ध होगा।

सम्मेलन में भाग लेने वाले पंजीकृत लोग हैम्बर्ग के सार्वजनिक पारगमन प्रणाली, जिसे एचवीवी (अंग्रेजी में सिस्टम को देखने के लिए, *hvv.de/en/about-us/overview-service-offer* पर जाएं) के नाम से जाना जाता है, का असीमित लाभ उठा सकते है। बसों, ट्रेनों, और यहां तक कि घाटों पर नावों की सवारी करने के लिए, सभी यात्रियों को एचवीवी लॉगो और पीठ पर मुद्रित उपयोग के लिए वैध तारीखों के साथ अपना कन्वेंशन बैज दिखाना होगा।

बसों के रूट के एक नेटवर्क से चार भूमिगत लाइनें और 28 रैपिड ट्रांजिट और क्षेत्रीय ट्रेन लाइनें जुड़ी हुई हैं। इतने में, सात फेरी लाइनें, बंदरगाह के भीतर और एल्बे नदी में चलती हैं। सिटी सेंटर में प्रमुख ट्रेन और बस लाइनों पर, जर्मन और अंग्रेजी में घोषणाएं की जाती हैं।

सुंदर दर्शनीय स्थलों की यात्रा के लिए, 111 नंबर की बस में बैठ जाएं, जो हाफेनसिटी और एल्टन के बीच एल्बे नदी के किनारे चलती है। आप एलब्फिल्हामीनी, लैंडउन्गस्ब्रुक्केन फ़्लोटिंग डॉक, अल्टोना मछली बाजार, और अपने क्लबों और बार के साथ प्रसिद्ध रेपरबैन सहित दर्शनीय स्थलों को देख सकेंगे।

riconvention.org **पर हैम्बर्ग में**
रोटरी सम्मलेन 2019 के लिए पंजीयन कराएं।

©The Rotarian

माहवारी स्वास्थ्य प्रबंधन WinS के मूल में

रशीदा भगत

निवर्तमान वैश्विक अध्यक्ष (WinS) व रोटरी इंटरनेशनल के अध्यक्ष (मनोनीत) सुशील गुप्ता का कहना है कि "जिस बच्चे को हमने 2014 में जन्म दिया" था उसे पूर्ण संतोष के साथ अपने उत्तराधिकारी पूर्व रो ई निदेशक पी टी प्रभाकर को सौंप रहे हैं। जिस तरह WinS ने हमारे क्षेत्र में चारों तरफ कामयाबी हासिल की हैं, इससे वे प्रसन्न और संतुष्ट हैं, खास तौर से तीन मोर्चों पर; सामूहिक हैंडवाशिंग स्टेशन; स्वच्छता और स्वास्थ्य-रक्षा पर व्यवहार में परिवर्तन लाना; और माहवारी स्वच्छता की अहमियत के बारे में बात करने पर होने वाली हिचकिचाहट और झिझक को दूर करना।

उन्होंने *रोटरी न्यूज़* को बताया, मैं WinS की वर्तमान स्थिति से बहुत खुश हूं, आप यूँ कह सकते हैं कि अब वो ऑटो पायलट पर है, क्योंकि हमारे क्षेत्र के प्रत्येक रोटरी मंडल आज एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं कि वे कितने स्कूल कर सकते हैं जबकि पहले हम संघर्ष करते थे कि किसी प्रकार मंडल इस कार्यक्रम को अपना लें। वे परेशान थे और दुविधा में भी कि वे परियोजना करें, साक्षरता कार्यक्रम करें, या WinS या फिर रोटरी के अन्य फोकस क्षेत्रों में काम करें।"

उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा: "ऐसा कह सकते हैं कि 2014 में जिस बच्चे का जन्म हुआ था, अब वो स्वस्थ है और पैर चलाने लगा है।" WinS के एक और पहलू को देख कर उन्हें प्रसन्नता मिलती है वो है समूह में सही प्रकार से हाथ धोने की वजह से अब विद्यार्थियों और उनके परिवारों के व्यवहार में आया परिवर्तन, जो WinS का प्राथमिक लक्ष्य था।

फिर उन्होंने एक दिलचस्प कहानी सुनाई कि कुछ वर्ष पहले एक सामूहिक हैंडवाशिंग स्टेशन बनाया गया था। यूनिसेफ या शिक्षा मंत्रालय के पास तो ऐसा कोई मॉडल उपलब्ध था नहीं। "अपनी पूर्व निर्धारित यात्रा के दौरान तत्कालीन रो ई अध्यक्ष को एक विद्यालय में रोटरी क्लब द्वारा की गई WinS परियोजना का उद्घाटन करना था। मैंने क्लब के अधिकारियों से कहा कि अपने पास इस यात्रा में सिर्फ दस दिन बचे हैं और एक ग्रुप हैंडवाशिंग स्टेशन बनाने के लिए आपके पास इतना ही समय है। और ये एक सप्ताह के भीतर ही तैयार भी हो गया। हालांकि इसके बारे में यूनिसेफ और सरकार सहित चर्चा तो हर व्यक्ति कर रहा था, लेकिन सभी लोग असमंजस में थे क्योंकि किसी के पास कोई मॉडल नहीं था। इसलिए, फिर हमने एक मॉडल की रचना की!"

इस के साथ ही वे, उनके डिप्टी और वाइस चेयरमैन प्रभाकर और टीम के बाकी सदस्यों के हाथ में जो एक और कठिन कार्य था वो ये ... "हमें रोटेरियनों के मस्तिष्क में यह बात डालनी थी" कि WinS का मतलब शौचालय का निर्माण नहीं है; यह व्यवहार में परिवर्तन लाने और आदत बदलने से सम्बंधित है। "मैं बहुत खुश हूं," अब वह संदेश घर-घर पहुँच गया है।

गुप्ता हर्ष से बताते हैं कि रोटरी द्वारा स्कूलों में लगवाए जा रहे ग्रुप हैंडवॉशिंग मॉडल इतने सफल हुए कि यूनिसेफ के एक अधिकारी ने सुझाव दिया था कि रोटरी को इस उत्पाद को पेटेंट करवा लेना चाहिए। "लेकिन मैंने कहा कि हमारा उद्देश्य प्रसिद्धि या पैसा कमाना नहीं है, बल्कि अधिक से अधिक स्कूलों को हैंडवॉश स्टेशन लगवाने के लिए प्रोत्साहित करना है, जहाँ बच्चे अपने हाथ धोते हुए गाना गा सकते हैं, और व्यवहार में बदलाव ला सकते हैं।"

अब माहवारी की चर्चा पर निषेध नहीं

दूसरा पहलू जिससे वे पूरी तरह प्रसन्न हैं, वो ये कि, आखिरकार माहवारी स्वास्थ्य प्रबंधन (MHM) पर चर्चा करने में झिझक, हिचकिचाहट ख़त्म हुई। "जब हमने बालिकाओं के स्कूल छोड़ने के कारण को खोजा तो पाया कि युवावस्था तक पहुँचने के बाद वे तुरंत स्कूल छोड़ देती हैं, क्योंकि उन्हें, विशेष रूप से महीने के उन दिनों में निजता की आवश्यकता होती है जबकि स्कूल में लड़कियों के लिए अलग शौचालय, माहवारी के प्रबंधन सम्बन्धी व्यवस्था नहीं होती है। लेकिन कोई भी इसके बारे में बात नहीं करना चाहता था। इस विषय पर चर्चा तक वर्जित थी। यहां तक की रोटरी में भी हर किसी को ये कहने में मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ी कि मएमएचएम करोफ !"

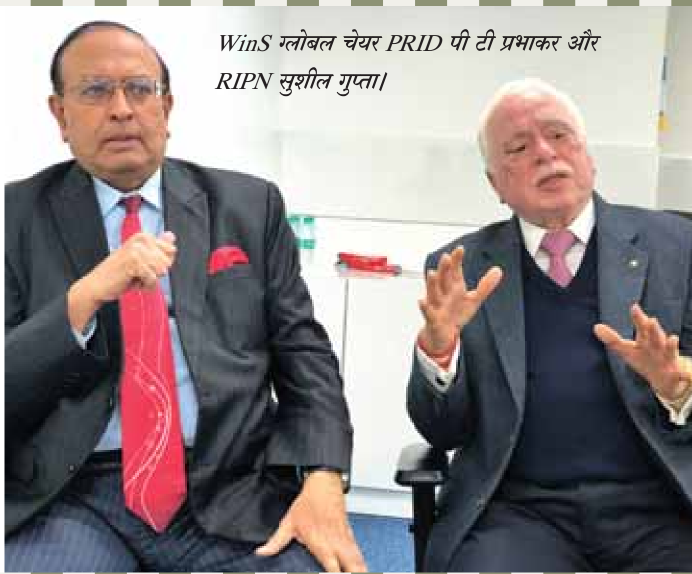

WinS ग्लोबल चेयर PRID पी टी प्रभाकर और RIPN सुशील गुप्ता।

अगला मुद्दा सैनिटरी नैपकिन के इस्तेमाल से संबंधित था। यूनिसेफ की नीति बिलकुल स्पष्ट थी कि वे किसी भी उत्पाद का प्रचार नहीं करेंगे; चाहे वो एक सैनिटरी नैपकिन हो या कपड़े का टुकड़ा। उन्होंने कहा कि जो भी हो, वो साफ होना चाहिए। यह बातचीत न्यूयॉर्क स्थित यूनिसेफ मुख्यालय में चल रही थी, ''लेकिन लिखित में कुछ नहीं था। काफी समय से हम सही उत्पाद के लिए प्रयास कर रहे थे जो टिकाऊ हो और सस्ता भी। मुझे याद है जॉन जर्म ऑस्ट्रेलिया से सैनिटरी नैपकिन का एक बड़ा पैकेट लाये थे और बोले कि 'ये ऑस्ट्रेलियाई महिलाओं ने भेजा है!' महम विचार कर रहे थे कि किस तरह का उत्पाद सबसे उपयुक्त रहेगा और अंततः वो हमें मिल गया।''

प्रभाकर बताते हैं, ''यह सैनिटरी नैपकिन धोने के बाद दुबारा इस्तेमाल के योग्य है जिसका उपयोग दो साल तक किया जा सकता है और प्रत्येक किट का मूल्य सिर्फ ₹200 है जो आज आराम से कोई भी वहन कर सकता है।''

बाजार में उपलब्ध सैनिटरी नैपकिन से होने वाले प्रतिकूल पर्यावरण के खतरों के मद्दे नज़र पूर्व रो ई निदेशक प्रभाकर, जो अब ग्लोबल विन्स चेयर हैं, कहते हैं, ''क्या आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि सिर्फ चेन्नई 90 टन सेनेटरी पैड का उत्पादन करता है, जो कि एक पर्यावरणीय आपदा है। इन नैपकिनों में ऐसी प्लास्टिक सामग्री का उपयोग होता है, जिसे नष्ट होने में 500 साल लग जाते हैं। इसके अलावा बेंगलुरु की स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ मीनाक्षी भरत जिन्होंने इस विषय पर गहन शोध किया है, उन का कहना है कि व्यावसायिक रूप से उत्पादित ये नैपकिन हानिकारक रसायनों का उपयोग करते हैं जिससे गर्भाशय का कैंसर हो सकता है।''

RIPN सुशील गुप्ता आगे जोड़ते हैं: ''ज्यादातर स्कूलों में हमने पाया है कि जब आप सैनिटरी नैपकिन वेंडिंग मशीन लगाने के दो महीने बाद काम नहीं करती हैं। काफी समय से हम डॉ मीनाक्षी और संगीता बंसल सहित महिलाओं की एक टीम के साथ काम कर रहे हैं, और अंत में हमने ये एक सस्ती और पुन: प्रयोज्य (दुबारा इस्तेमाल योग्य) किट बनाई है, जिसमें सूती कपड़े का उपयोग किया जाता है और यह पुन: प्रयोज्य है वो भी दो साल के लिए।''

इस खोज के साथ ही, वह ये जान कर बहुत खुश हैं कि केरल से तमिलनाडु और उड़ीसा तक में, ''लोगों ने एमएचएम के बारे में खुलकर बात करना शुरू कर दिया है।''

प्रभाकर कहते हैं कि ''आखिरकार एमएचएम के बारे में बात करने में पहले जो हिचकिचाहट और शर्म होती थी, ख़त्म हो रही है। इस इको-फ्रेंडली और सस्ते उत्पाद का प्रोडक्शन शुरू हो चुका है और हाल ही में बेंगलुरु में एक विन्स मीट के दौरान, वहां मौजूद वोकेशनल सर्विसेज के निदेशक को मैंने

क्या आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि सिर्फ चेन्नई 90 टन सेनेटरी पैड का उत्पादन करता है, जो कि एक पर्यावरणीय आपदा है। इन नैपकिनों में ऐसी प्लास्टिक सामग्री का उपयोग होता है, जिसे नष्ट होने में 500 साल लग जाते हैं।

WinS ग्लोबल चेयर
PRID पी टी प्रभाकर

सुझाव दिया था कि सेल्फ-हेल्प ग्रुप सहजता से इन सैनिटरी नैपकिन किट का उत्पादन कर सकते हैं। साथ ही अपने क्षेत्र में इन नैपकिनों के उपयोग को लोकप्रिय बनाने के लिए हम इनर व्हील के सदस्यों को शामिल करेंगे।''

उन्होंने स्पष्ट किया कि ये नेपकिन रोटरी द्वारा संभाले जा रहे विद्यालयों में उपलब्ध कराए जाएंगे - कुल 50,000 - ''लेकिन मुफ्त नहीं क्योंकि मुफ्त में दी गई चीज की कद्र नहीं होती।''

चित्र: रशीदा भगत
एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

Wins, रोटरी के लिए
अगली बड़ी गतिविधि

किरण ज़ेहरा

हाल ही में बेंगलुरु, मंडल 3190, में आयोजित हुए एक WinS सेमीनार को संबोधित करते हुए, PRID पी टी प्रभाकर, WinS के वैश्विक अध्यक्ष, ने कहा, ''मुझे कोई आश्चर्य नहीं होगा अगर सुशील गुप्ता उनके अध्यक्षीय वर्ष (2020-21) में दुनियाभर के रोटेरियनों को एक वैश्विक परियोजना के रूप में WinS को करने के लिए प्रेरित करें।'' WinS लक्ष्य चुनौती वर्तमान में बेलीज़, ग्वाटेमाला, होंडुरास, भारत और केन्या के रोटेरियनों को जल, स्वच्छता, और स्वच्छता शिक्षा को सुधारने हेतु साथ लाता है।

प्रभाकर ने कहा, ''अक्सर हम बात करते है 'पोलियो के बाद क्या?' WinS रोटरी के लिए अगली बड़ी गतिविधि हो सकती है। तो, एक मंडल जिसमें आप रोटरी टीटीके ब्लड बैंक और करुणाश्रय, एक आश्रयस्थल जो बीमारों की देखभाल करता है, जैसी मुख्य परियोजनाएं करते है, तो मुझे पूरा यकीन है WinS जैसे सरल कार्यक्रम को कार्यान्वित करना आसान होगा।''

लेकिन WinS केवल शौचालयों के निर्माण से बहुत अधिक है; ''यह भारत के विकास के बारे में है।''

WinS क्यों?

इस सवाल का जवाब देते हुए कि 'किसी क्लब को एक WinS परियोजना क्यों चुनना चाहिए,' उन्होंने संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों का उद्धरण दिया और कहा भारत मानव विकास सूचकांक में पाकिस्तान और बांग्लादेश के नीचे है, मुख्य रूप से शौचालयों की कमी के कारण जिसकी वजह से खुले में शौच करना पड़ता है। ''दुनियाभर में 61 मिलियन बच्चे अविकसित है क्योंकि वे मानव अपशिष्ट के संपर्क में है, जिसमें से 33 प्रतिशत बच्चे भारत के है।'' यदि खाने से पहले और शौचालय जाने के बाद बच्चे हाथ धोये, तो अतिसार से होने वाली मौतों में 44 प्रतिशत की गिरावट आ सकती है, उन्होंने आगे कहा।

WinS कोई महँगी परियोजना नहीं है। ''एक हाथों की धुलाई के स्टेशन की लागत केवल 15,000 आती है। क्लब वैश्विक अनुदान के लिए भी आवेदन दे सकते है क्योंकि 1.5 मिलियन डॉलर तक TRF के माध्यम से उपलब्ध है। मंडल 3211 और 3131 प्रत्येक को पिछले साल 20,000 डॉलर प्राप्त हुए है। एक साझेदार ढूंढिए और वैश्विक अनुदान के लिए आवेदन कीजिए,'' प्रभाकर ने सुझाव दिया, और क्लबों से लिंग आधारित पृथक शौचालय बनाने और मासिक धर्म स्वास्थ्य प्रबंधन पर ध्यान केन्द्रित करने का आग्रह किया।

ऐसे उदाहरणों का जिक्र करते हुए, जहाँ क्लब उत्साहपूर्वक स्कूलों में मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन की शुरुआत, ''सेनेटरी पेड बांटकर, वेंडिंग मशीनें और भस्मक स्थापित करके करते है, लेकिन तीन महीने बाद सब कुछ बंद हो जाता है,'' उन्होंने रोटरी क्लब बैंगलोर वेस्ट, मंडल 3190, की सदस्य डॉ मीनाक्षी भारत द्वारा सुझाए गए विचार, दोबारा उपयोग किये जा सकने वाले पेड दान करना जो 2-3 वर्षो तक चलते है, पर रोशनी डाली। ''इनमें कोई रसायन नहीं होता, यह पर्यावरण-अनुकूल है और इनकी कीमत

किरण ज़ेहरा

बाएं से : PDG के एस नागेंद्रा, RI WinS कमेटी के सदस्य रमेश अग्रवाल, ग्लोबल WinS चेयर पी टी प्रभाकर, DG सुरेश हरि और रोटेरियन मीनाक्षी भरत।

केवल 200 है। एक सुविधाओं से वंचित लड़की की मदद करके, आप पर्यावरण के लिए जो अच्छा करेंगे उसके बारे में कल्पना कीजिए।''

पीडीजी रमेश अग्रवाल द्वारा प्रतिभागियों को इस बात का विवरण दिए जाने से पूर्व कि वास्तव में लक्ष्य चुनौती है क्या, कन्नड़ और अंग्रेजी भाषा में हाथों को धोने की तकनीकों के बारे में एक पोस्टर जारी किया गया।

डीजी सुरेश हरी मंडल के 150 स्कूलों में WinS को लागू करने के लिए प्रतिबद्ध है।

मासिक धर्म को और अधिक प्रबंधनीय बनाना

विश्व बैंक के अनुसार, भारत में, शौचालयों की कमी और मासिक धर्म से जुड़े लांछन के कारण 113 मिलियन से भी अधिक किशोरियां स्कूल छोड़ने की कगार पर है, रोटरी क्लब बैंगलोर वेस्ट की सदस्य और एक स्त्रीरोग विशेषज्ञ, डॉ मीनाक्षी ने कहा। ''मासिकधर्मी समय को कई तरह से समस्या समझा जाता है। कचरे में उसका योगदान अधिक है, उसके कारण लड़कियाँ स्कूल से दूर रहती है, और ये महिलाओं की गतिविधियों में बाधा बनता है।''

उनका क्लब वर्ष 2009 से कचरा प्रबंधन पर कार्य कर रहा है। गीला कचरा खाद बन जाता है और छत के बगीचों में उर्वरक के रूप में उपयोग किया जाता है। उन्होंने बताया कि एक बार उपयोग किये जाने वाले सेनेटरी नैपकिन एक बड़ी चुनौती है, इसलिए उन्होंने निपटान योग्य सेनेटरी नैपकिन के विकल्प के रूप में मासिक धर्म कप का उपयोग करने की सलाह दी। चिकित्सीय दर्जे के सिलिकॉन से बना होने के कारण प्रत्येक कप 10 वर्षों तक चलता है। उसी समय अवधि के दौरान एक महिला औसतन लगभग 5,000 निपटान योग्य सेनेटरी उत्पादों का प्रयोग करती है, कप अधिक किफ़ायती और पर्यावरण अनुकूल होते है। ''मुझे नहीं लगता और कोई चीज़ इतनी अधिक दोबारा उपयोग किये जाने योग्य है; बस धोएं और दोबारा प्रयोग करें। एक बार 1,000 के निवेश से आपको ना खाज होगी, ना पैसा लगेगा, ना ही मासिक धर्म से संबंधित कोई कचरा होगा,'' उन्होंने कहा।

सेनेटरी पेड की उच्च लागत के कारण, वंचित परिवारों की अधिकतर लड़कियाँ अपने स्वास्थ्य के साथ समझौता करते हुए, एक ही सेनेटरी पेड को लम्बे समय तक पहनती है।

कप मासिक धर्म को अधिक आरामदायक बनाते है। ''आप जुम्बा, तैराकी या लंबी पैदल यात्रा कर सकते है। अब समय है कि महिलाऐं होने के नाते हम अपने मासिक धर्म को अधिक प्रबंधनीय बनाने हेतु विकल्पों पर विचार करें। हम अधिक महिलाओं तक पहुँचने की उम्मीद करते है,'' मीनाक्षी ने कहा। ■

ट्रांसजेंडर्स को रोटरी का सहयोग

टीम रोटरी न्यूज़

एक अद्वितीय अभिव्यक्ति के रूप में, रोटरी क्लब मद्रास चेन्नापटना, मंडल 3232, ने एक ट्रांसजेंडर युग्ल - प्रेम और प्रीतिशा - को चेन्नई में एक ऑर्गेनिक ऑयल स्टोर खोलने में मदद करने के लिए ₹50,000 का सूक्ष्म-ऋण उपलब्ध कराया।

दोनों कृषि पृष्ठभूमि से आते हैं, और मूंगफली की खेती करते और मूंगफली से तेल निकालते हैं।

क्लब के अध्यक्ष जी प्रभाकर कहते हैं, ''हम एक एनजीओ के माध्यम से उनसे मिले जो ट्रांसजेंडरों की भलाई के लिए काम करता हैं और उनके साथ विचार-विमर्श करने पर हमने समझा कि इस पैसे को एक ऐसे व्यापार में सुरक्षित रूप से निवेश किया जाएगा, जिसके बारे में वे अच्छी तरह से जानते थे।'' दंपती ने फ़ूड लाइसेंस, पैकेजिंग, ब्रांडिंग और बिक्री करने में पैसे का निवेश करने की इच्छा व्यक्त की।

क्लब के अध्यक्ष आशा करते है कि ''इस सामाजिक कलंक को तोड़ने, बेहतर समावेशिता की शुरूआत करने और लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए कार्य करेंगे।''

18 साल पहले, पी एल मुत्ताइया, चेयरमेन माइक्रो लोन, द्वारा शुरू की गई इस परियोजना के ज़रिये क्लब ने अब तक '₹32 लाख के ऋण द्वारा 182 लोगों की मदद की हैं जो आज हाथ गाड़ी विक्रेता, दर्जी, चाय की दुकान के मालिक और हेयर स्टाइलिस्ट हैं। ■

पी एल मुत्तइया, चेयरमेन माइक्रोलोन्स, प्रेम और प्रीतिशा को चेक देते हुए।

इम्फ़ाल में एक शानदार

रशीदा भगत

अखिल महिला बाज़ार

माना जाता है कि यह एशिया का सबसे बड़ा अखिल-महिला बाज़ार है, और रोटेरियन युगल डी. रविशंकर, रोटरी क्लब बैंगलोर ऑर्चर्ड्स के अध्यक्ष, और उनकी पत्नी पाओला के साथ, जिन्होंने, तुलनात्मक रूप से कहा जाए तो, एक स्कूल का निर्माण करवाकर एवं और भी बहुत कुछ करके मणिपुर का बड़ा समर्थन किया है, मैं एक ऐसी जगह में प्रवेश करती हूँ जो नि:संदेह मेरे द्वारा अब तक देखी गई सबसे रोचक जगहों में से एक है।

माना जाता है कि ईमा कैथल (जिसका अर्थ होता है 'माँ का बाज़ार') 500 साल पुराना है और यह कुछ 4,000 से 5,000 महिला व्यापारियों का घर है, जो आपको विभिन्न सामान प्रस्तुत करती है जिनमें कपड़ों, स्थानीय जेवरों, ताज़ी सब्जियों एवं फलों, ताज़ा पके हुये भोजन से लेकर नए नोट भी शामिल है जिन्हें कमिशन पर पुराने नोटों से बदला जाता है।

जैसे ही आप इसके फाटक से प्रवेश करते है, आप यहाँ होने वाली चहलपहल, जीवंतता, ताज़ा पके हुये भोजन की खुशबू, और बेशक सुंदर, चमकीले रंगों की पोशाक पहनी हुई महिलाओं, जिनमें से अधिकतर महिलाओं ने सर्दी की ठिठुरन से बचने के लिए रंगबिरंगी पारंपरिक सारंग और शॉल पहनी थी, को देखकर प्रभावित हो जाते है। वे सभी तेजी से व्यापार कर रही है; और ध्यान देने योग्य सबसे असाधारण चीज़ है अधिकतर महिलाओं के चेहरों की मुस्कान जो उनके ग्राहकों से मोलभाव कर रही है या सब्जी एवं मछली, ताज़े पकोड़े, स्थानीय कंद, इत्यादि पका रही है।

इम्फ़ाल के बीचों-बीच स्थित, यह रंगबिरंगा, फैला हुआ बाज़ार स्थानीय लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र और मिलन स्थल है। इस बाज़ार, जिसे केवल महिलाएं चलाती है, से सम्बद्ध विभिन्न कहानियों में से एक कहानी के अनुसार इस बाज़ार में केवल महिलाओं के कार्यबल का कारण है *लल्लुप-काबा* का लागू होना

एक मुस्कान के साथ। केवल 10 में, महिला मुट्ठी भर इस गरमागरम पकवान को एक कागज के टुकड़े पर रखकर आपके हाथों में थमा देती है।

यदि आपको मछलियाँ पसंद है, तो यह बाज़ार आपके लिए है। आप विभिन्न प्रजातियों की श्रेणियों में से जीवित एवं मृत मछलियों को चुन सकते है, और उसी स्थान पर पकवा भी सकते है।

चूंकि मेरे पास केवल थोड़ा ही सामान था, मुझे इसे ना खरीदने का सुझाव दिया गया। परंतु अगली बार, मैं इसे बेशक खरीदने वाली हूँ।

जो मणिपुर की एक प्राचीन बेगारी प्रणाली है जिसमें मेईतेई समुदाय के पुरुषों को सुदूर ज़मीनों पर खेती करने एवं जंग लड़ने के लिए भेजा जाता था। अधिकांश समय पुरुषों के दूर रहने के कारण, यह ज़िम्मेदारी महिलाओं पर आई कि वे गांवों में रुके, धान एवं अन्य फसल उगाये, घर एवं बच्चों की देखभाल करें और कामचलाऊ बाज़ार में अपने खेतों की उपज बेचें।

और इस तरह उन बाज़ारों का जन्म हुआ जिनमें महिलाओं ने एक प्रमुख भूमिका अदा की, और इम्फ़ाल शहर में प्रतिष्ठित ईमा कैथल का विकास हुआ। यहाँ तक कि आज भी, विभिन्न केन्द्रों को संभाल रही अधिकांश महिलाएं, भले ही सभी नहीं, मेईतेइ महिलाएं है जिन्हें उनके अत्यधिक गोरे एवं निष्कलंक रंग-रूप से एवं इनमें से अधिकांश महिलाओं द्वारा ठीक नाक के ऊपर से लगाए जाने वाले तिलक से पहचाना जा सकता है।

इस विशाल बाज़ार को घूमने के लिए केवल एक घंटे का समय होने के कारण - मेरी सलाह यही है कि एक पूरा दिन अलग निकालकर पूरे भोजन की योजना यहीं बनाए - हमें थोड़ा जल्दी में दुकानों की घुमावदार कतारों के मध्य से गुजरना पड़ रहा था। बांस, बेंत और फूसी से बने हुये हस्तशिल्प जिनमें टोकरियों से लेकर बक्से शामिल थे, और रंगबिरंगे कपड़ों वाली मणिपुरी गुड़ियाओं के साथ धातु एवं रंग-बिरंगे मानकों वाले पारंपरिक आभूषण आपको आकर्षित एवं मंत्रमुग्ध करते है। और फिर बेशक वहाँ एक दर्जन या उससे अधिक महिलाएं हाथों में बिलकुल ताज़े छपे हुये नए नोटों के बंडल लिए बैठी है और दस प्रतिशत कमिशन पर पुराने नोटों से उन्हें बदल रही है।

हम सब्जियों की दुकानों से गुजरते है, बड़े नींबू के ढेर, पारंपरिक कंदों, मसालों एवं जड़ी-बूटियों को और विशेषरूप से मछली को उबालने एवं सुखाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले बड़े मिट्टी के बर्तनों को यहाँ-वहाँ देखते हुये।

यदि आपको मछलियाँ पसंद है, तो यह बाज़ार आपके लिए है। आप विभिन्न प्रजातियों की श्रेणियों में से जीवित एवं मृत मछलियों को चुन सकते है, और उसी स्थान पर पकवा भी सकते है। इस बाज़ार में दुकानों की पूरी की पूरी पंक्तियाँ ग्राहकों के बेंच पर बैठने के लिए आरक्षित है जहाँ ताज़ा पका हुआ भोजन मेज पर परोसा जाता है... एक मुस्कान के साथ। रविशंकर, पाओला और मुझे ताज़े तले हुये भजिए/पकोड़ों को खाने के लिए लुभाते है। केवल 10 में, महिला मुट्ठी भर इस गरमागरम पकवान को एक कागज के टुकड़े पर रखकर आपके हाथों में थमा देती है। यह स्वादिष्ट है और शीघ्र ही हमारा पेट भर गया!

पाओला ने लाल नागा मिर्च के बारे में मुझे बहुत कुछ बताया था, परंतु चूंकि मेरे पास केवल थोड़ा ही सामान था, मुझे इसे ना खरीदने का सुझाव दिया गया। परंतु अगली बार, मैं इसे बेशक खरीदने वाली हूँ। मणिपुर में मेरे द्वारा खाये गए कुछ भोजनों में, मैंने इसे आजमाया, और मेरा यकीन मानिए, यह आपकी स्वाद कलिकाएँ खोल सकता है, हाँ बिलकुल!

चित्र: रशीदा भगत

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

Rotary PEOPLE OF ACTION

बालिकाओं का सशक्तिकरण

जयश्री

रोटरी क्लब मद्रास ईस्ट की सचिन राधिका सत्यनारायण, रक्षा मंत्री निर्मला सीतारामन का स्वागत करते हुए। चित्र में DG बाबू पेरम और क्लब के अध्यक्ष आर एम नारायणन शामिल हैं।

रोटरी क्लब मद्रास ईस्ट मंडल 3232, ने हाल ही में चेन्नई के हिन्दू मिशन कॉलेज ऑफ़ नर्सिंग को 14 लाख की लागत से 40 कंप्यूटरों और एयर कंडीशनरों से सुसज्जित किया है। कॉलेज को जो सुविधाएं प्रदान की गई है वह नर्सों को तकनीकी ज्ञान की बेहतर समझ प्रदान करेगी जिससे उनकी दक्षता में सुधार होगा और इसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य देखभाल की समग्र गुणवत्ता में सुधार होगा, क्लब के अध्यक्ष मगेश पट्टाभिरमण कहते है।

अस्पताल के चिकित्सा निदेशक, डॉ श्रीराम, आश्वस्त है कि बेहतर बुनियादी ढांचे का मतलब है अगले शैक्षणिक वर्ष से विद्यार्थियों के दाखिले में वृद्धि। विद्यार्थियों की संख्या वर्तमान 200 से 700 तक बढ़ेगी, जिसमें से 80 प्रतिशत लड़कियाँ होंगी, वह कहते है।

परियोजना का उद्घाटन क्लब के सदस्य रमेश अनंतकृष्णन, जो DSM सॉफ्ट, इस सुविधा के प्रमुख प्रायोजक, के निदेशक भी है, और पूर्व अध्यक्ष एम श्रीनिवासन द्वारा किया गया था। यह परियोजना नर्सों के प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए अस्पताल द्वारा निर्मित की गई एक बहु-करोड़ सुविधा का हिस्सा है।

थीम से संबन्धित एवं बैनर *"Empower the girl, energise the world"* 95 लाख की लागत वाली एक वैश्विक अनुदान परियोजना का उद्घाटन रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा किया गया, जिसके द्वारा क्लब का उद्देश्य शहर में रामकृष्ण मिशन शारदा विद्यालय के पांच स्कूलों को विभिन्न सुविधाओं से सुसज्जित करना है। इस प्रयास में मद्रास डिस्लेक्सिया एसोसिएशन द्वारा 1600 स्कूली शिक्षकों को प्रशिक्षित करना शामिल है ताकि उन बच्चों की पहचान की जा सके जिनपर विशेष ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है, क्लब अध्यक्ष आर एम नारायणन कहते हैं। रक्षा मंत्री द्वारा इस समावेशन को काफी सराहा गया।

रामकृष्ण विद्यालय के बच्चों के साथ रक्षा मंत्री निर्मला सीतारामन। चित्र में DG बाबु पेरम भी शामिल हैं।

वैश्विक अनुदान के तहत अन्य पहलों में उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के लिए कंप्यूटर लैब और परिष्कृत प्रयोगशालाएं स्थापित करना, एक प्राथमिक विद्यालय की कक्षाओं को फर्नीचर से सुसज्जित करना, और सभी पांच स्कूलों को बेहतर ऊर्जा बचत करने वाली बिजली फिटिंग से अपग्रेड करना शामिल है जो बिजली की खपत को कम करने में मदद करेगा। बहुत से विद्यार्थी पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी है, एकल माता-पिता के बच्चे है या वंचित परिवारों के बच्चे है, पट्टाभिरमण कहते है।

सैन अंटोनियो का रोटरी क्लब, मंडल 5840, और TRF अंतर्राष्ट्रीय साझेदार है। यह क्लब द्वारा लागू किये गए 19 वैश्विक अनुदान परियोजनाओं में सबसे बड़ी है, और यह सभी पांच स्कूलों की 3700 लड़कियों को लाभान्वित करेगी, वह कहते है। एन्न आर्बर और शिकागो के रोटरी क्लब इस महत्वाकांक्षी पहल में हिस्सा लेने वाले अन्य क्लब है। ■

अध्यक्ष बनने का मार्ग

रोटरी में 1.2 मिलियन सदस्य है; प्रति वर्ष, उनमें से एक संस्थान का अध्यक्ष बनता है। उस पद तक पहुँचने के लिए एक रोटेरियन को क्या कदम उठाने चाहिए? मूलभूत रूप से, सभी उम्मीदवारों के पास अपने स्वयं के रास्ते होते है, लेकिन कुछ सामान्य आवश्यकताएं भी है। हमने रोटरी के उपनियमों को अच्छी तरह देखा और इन निष्कर्षों पर पहुंचे।

क्लब अध्यक्ष

कोई भी सदस्य जिसमें सभी आवश्यक गुण मौजूद हो एक वर्ष के कार्यकाल के लिए क्लब का अध्यक्ष चुने जाने की योग्यता रखता है, हालाँकि अधिकांश अध्यक्ष अपने क्लबों में एक समिति अध्यक्ष या किसी अन्य नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभा चुके होते है।

मंडल गवर्नर

मंडल अपने भावी गवर्नरों का चुनाव या तो एक नामांकन समिति, मेल द्वारा मतदान, या एक मंडल सम्मेलन के माध्यम से करते है। कोई भी क्लब विचार करने हेतु अपने किसी सदस्य के नाम का सुझाव दे सकता है, हालाँकि नामांकन समिति इन सुझावों तक सीमित नहीं है। गवर्नर एक वर्ष का कार्यकाल पूरा करते है।

मंडल गवर्नर के लिए नामित व्यक्ति को कम से कम सात वर्षों से एक रोटेरियन होना चाहिए और साथ ही वह एक क्लब अध्यक्ष के रूप में सेवा दे चुका हो।

रो ई निदेशक

प्रति वर्ष, रोटरी के 34 ज़ोनों में से प्रत्येक आठ या नौ ज़ोन दो वर्ष के कार्यकाल के लिए एक निदेशक का चुनाव करते है। नामांकन समितियां ज़ोन या ज़ोन के किसी क्षेत्र के प्रत्येक मंडल के एक पूर्व गवर्नर से बनती है। समिति के सदस्य उम्मीदवारों का साक्षात्कार लेते है और ज़ोन का प्रतिनिधित्व करने हेतु किसी एक का चुनाव करते है।

पूर्व मंडल गवर्नर योग्य होते है; गवर्नर के रूप में उनके कार्यकाल की समाप्ति को कम से कम तीन वर्ष बीत चुके होना चाहिए। उम्मीदवार का पिछले तीन वर्षों में कम से कम दो रोटरी संस्थानों और एक रोटरी सम्मेलन में शामिल होना आवश्यक है।

रो ई अध्यक्ष

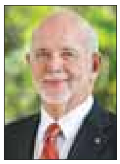

प्रति वर्ष, आधे रोटरी ज़ोनों को 17-सदस्यीय अध्यक्षीय नामांकन समिति में अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से रोटरी के अध्यक्ष का चुनाव करने का अवसर प्राप्त होता है। (प्रत्येक दूसरे वर्ष अध्यक्ष का चुनाव करने हेतु ज़ोन बदलते है।) केवल पूर्व रो ई निदेशक ही नामांकन समिति में सेवा दे सकते है - वर्तमान बोर्ड सदस्य पात्र नहीं होते है। यदि किसी ज़ोन से एक से अधिक पूर्व निदेशक सेवा देने की इच्छा रखते हो, तो उनके ज़ोन के क्लब चुनाव आयोजित करते है।

केवल पूर्व रो ई निदेशक रो ई अध्यक्ष के रूप में सेवा देने के योग्य होते है, और अधिकांश अध्यक्षों ने अतिरिक्त नेतृत्व वाली भूमिकाएँ निभाई है, जिनमें अंतर्राष्ट्रीय अनुभव प्रदान करने वाली समितियों में सेवा देना भी शामिल है। कार्यकाल एक वर्ष का होता है।

अध्यक्ष दूसरे वर्ष के रो ई निदेशकों में से अपने उपाध्यक्ष और कोषाध्यक्ष का चुनाव करते है।

अतिरिक्त सोपान

हालाँकि कागजों पर अध्यक्ष पद तक पहुँचने का रास्ता केवल चार चरणों का है, लेकिन व्यव्हार में, जिन रोटेरियनों ने संगठन का नेतृत्व किया है उन्होंने अपने मार्ग में कई अन्य भूमिकाएँ निभाई है।

मंडल नेतृत्वकर्ता

मंडल समितियों में वित्त, सदस्यता, सार्वजनिक छवि, और रोटरी संस्थान प्रशिक्षण शामिल है। अन्य विषय मंडल के अनुसार परिवर्तित होते है।

क्षेत्रीय नेतृत्वकर्ता

क्षेत्रीय नेतृत्वकर्ताओं में क्षेत्रीय रोटरी संस्थान समन्वयक, रोटरी समन्वयक, रोटरी सार्वजनिक छवि समन्वयक, और अक्षयनिधि/प्रमुख उपहार सलाहकार शामिल है। अन्य नेतृत्वकर्ता रोटरी संस्थानों, गवर्नर-निर्वाचित प्रशिक्षण सेमीनारों, और अन्य कार्यक्रमों में प्रशिक्षकों और सहायकों के रूप में सेवा दे सकते है।

रो ई और संस्थान नेतृत्वकर्ता

रोटरी समितियां दुनियाभर के उन रोटेरियनों और रोटारेक्टरों से मिलकर बनी होती है जो संस्थान के नेतृत्व के साथ कार्य करते है। समिति के साथ सदस्यता की योग्यता भिन्न होती है। आवेदन की जानकारी हर साल *द रोटेरियन* में सूचीबद्ध होती है। रोटेरियन रोटरी संस्थान के न्यासियों के रूप में भी सेवा दे सकते है।

रोटरी संस्थान के न्यासी

ट्रस्टी रोटेरियन होने चाहिए। उम्मीदवारों को रोटरी के अंतर्गत व्यापक अनुभव होना चाहिए और साथ

ही व्यापार, सरकार, परोपकार, या गैर लाभकारी क्षेत्र में नेतृत्व के पद पर होना चाहिए।

पूर्व और वर्तमान रोटरी वरिष्ठ नेतृत्वकर्ता विचार करने हेतु व्यक्तियों के नामों का सुझाव देते है।

रोटरी अध्यक्ष-निर्वाचित द्वारा नियुक्त की गई टास्क फ़ोर्स नामों की समीक्षा करती है और प्रत्येक मुक्त न्यासी पद के लिए कम से कम तीन उम्मीदवारों की अनुशंसा करती है। रोटरी अध्यक्ष-निर्वाचित इन सुझावों में से नामित व्यक्तियों का चुनाव करते है, और रो ई निदेशक मंडल औपचारिक रूप से उन्हें चार वर्षों की अवधि के लिए चुनता है।

न्यासी मंडल अपने वर्तमान सदस्यों में से एक को अपने अध्यक्ष के रूप में एक वर्ष के कार्यकाल हेतु चुनता है।

दिलचस्प अंश

पांच सबसे हालिया रो ई अध्यक्षों में से:

- पांच 30 से भी अधिक वर्षों से रोटरी में थे
- पांच रोटरी संस्थान के न्यासियों के रूप में सेवा दे चुके थे
- तीन अध्यक्ष के सहयोगियों के रूप में सेवा दे चुके थे
- एक आर्च क्लम्फ सोसाइटी के सदस्य थे
- दो ने रो ई वित्त समिति की अध्यक्षता की थी
- तीन ने स्वयं से ऊपर सेवा पुरस्कार प्राप्त किया था
- पांच ने रो ई या रोटरी संस्थान समिति की अध्यक्षता की थी
- पांच एक सम्मेलन समिति के सदस्य रह चुके थे।

© The Rotarian

एक सीएसआर-वैश्विक अनुदान साझेदारी की मदद से स्कूलों का जीर्णोद्धार

टीम रोटरी न्यूज़

मंडल 3212 भारतीय प्रायद्वीप के दक्षिणी छोर पर स्थित मंदिरों के नगर, नागरकोइल के आसपास के 23 स्कूलों को बेहतर स्वच्छता और शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए कमर कस कर तैयार है। मंडल ने कानम लेटेक्स इंडस्ट्रीज़, के साथ साझेदारी की है, जो सर्जिकल और परीक्षण दस्ताने के निर्माता है। यह अंतर्राष्ट्रीय साझेदार और टीआरएफ के रूप में रोटरी क्लब, लेक्सिंगटन, मंडल 6740, यूएस के साथ मंडल की पहली सीएसआर-वैश्विक अनुदान परियोजना है।

सीएसआर के मंडल अध्यक्ष एन कार्तिकेयन ने कहा कि, ''जब पीडीजी चिन्नदुराई अब्दुल्ला ने क्षेत्र के स्कूलों को अपग्रेड करने की योजना के साथ कंपनी के संस्थापक कुरियन अब्राहम से संपर्क किया, तो वे आसानी से सहयोग देने के लिए राज़ी हो गए। अब्राहम विगत 53 वर्षों से रोटरी क्लब नागरकोइल के सदस्य हैं।''

इस परियोजना के अंतर्गत 23 स्कूलों में 40,875 डॉलर की लागत से सेनेटरी नैपकिन वेंडिंग मशीन, इंसीनेरेटर, वॉश स्टेशन और ई-लर्निंग की सुविधा उपलब्ध कराने में शामिल है और परियोजना के अधीन 23 क्लबों में से प्रत्येक ने एक स्कूल को गोद लिया है।

हाल ही में, इन सुविधाओं का उद्घाटन पीडीजी चिन्नादुरई अब्दुल्ला और अब्राहम की उपस्थिति में डीजी के राजगोपालन ने किया। ■

IA में DGE यों ने शुरू

RIPN सुशील गुप्ता और RID सी भास्कर के साथ DGE और उनके जीवन साथी। चित्र में RIDE कमल संघवी की पत्नी सोनल भी शामिल हैं।

RID सी भास्कर और RIDE भरत पांड्या और RIDE कमल संघवी के साथ DGE गण।

की अपनी शानदार यात्रा

फेस्टिवल नाइट में अनेक रंगों में भारतीय दल।

RIPN सुशील गुप्ता और सोनल संघवी।

DGE गण और उनके जीवन साथी RID सी भास्कर, माला, माधवी पांड्या, RIDE कमल संघवी और सोनल संघवी।

बाएं से : RIDE कमल संघवी, सोनल, RIPN सुशील गुप्ता, माधवी और RIDE भरत पांड्या।

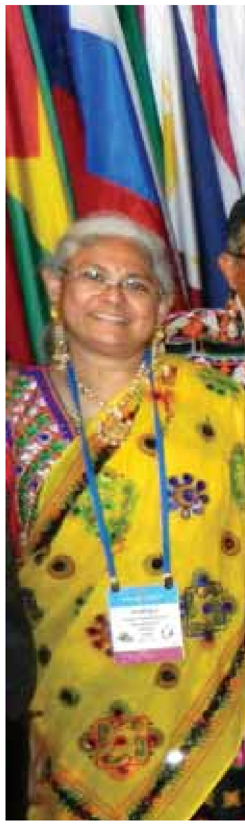

बाएं से : RIDE भरत पांड्या, RID सी भास्कर, RIPN सुशील गुप्ता, TRF ट्रस्टी गुलाम वाहनवटी और RIDE कमल संघवी।

RIPN सुशील गुप्ता के साथ अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि।

बाएं से : विद्या, PDG टी एन सुब्रमण्यन, RIDE कमल संघवी, सोनल, RIPN सुशील गुप्ता, RID सी भास्कर, माधवी, RIDE भरत पांड्या और मंडल 3170 की DRR निशिता पेडणेकर।

चित्र सौजन्य : rotary.org और DGE गण, कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा।

दुनिया को जोड़ना

अर्नोल्ड आर गृहल

RIPE मार्क मलोनी, रोटरी क्लब देकातुर, अलबामा, यूएसए, के सदस्य, ने सेन डिएगो, कैलिफ़ोर्निया, यूएसए, में अंतर्राष्ट्रीय सभा में नवनिर्वाचित मंडल गवर्नरों के लिए 2019-20 अध्यक्षीय थीम, *रोटरी दुनिया को जोड़ती है,* अनावृत की।

''पहली प्रमुखता रोटरी के विकास की है - हमारी सेवा को बढ़ाएं, हमारी परियोजनाओं के प्रभाव को बढ़ाएं, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण, हमारी सदस्यता को बढ़ाएं ताकि हम और अधिक हासिल कर सकें,'' मलोनी ने कहा।

उनका मानना है कि जुड़ाव रोटरी अनुभव के दिल में है। ''(रोटरी) हमें अपने मतभेदों को भुलाकर, गहरे और सार्थक तरीके से एक दूसरे से जुड़ने का मौका देती है। यह हमें उन लोगों से जोड़ती है जिनसे हम पहले कभी नहीं मिले, जो काफी हद तक हमारी तरह है और जिन्हें हम शायद ही कभी जान पाते। यह हमें हमारे समुदायों, पेशेवर अवसरों, और उन लोगों से जोड़ता है जिन्हें हमारी मदद की आवश्यकता है।''

मलोनी ने प्रत्येक रोटरी और रोटारेक्ट क्लब से विविध सदस्यों वाली एक सदस्यता समिति बनाकर उनके समुदाय के उन खण्डों की पहचान करने की दरकार की है जिनका उनके क्लब में प्रतिनिधित्व नहीं है। ''रोटरी के माध्यम से, हम एक वास्तविक अनूठे आधार पर मानवता की अविश्वसनीय विविधता से जुड़ते है, एक सामान्य लक्ष्य की तलाश में गहरे और स्थायी संबंध विकसित करते है। इस अधिक विभाजित दुनिया में, रोटरी हम सभी को जोड़ती है।''

उन्होंने नेतृत्वकर्ताओं से वैकल्पिक अधिवेशन अनुभवों और सेवा अवसरों की पेशकश करने का आग्रह किया ताकि पारिवारिक जिम्मेदारियों वाले

रो ई अध्यक्ष निर्वाचित मार्क मलोनी

Rotary logo and theme for 2019–20

ROTARY
CONNECTS
THE WORLD

हमें एक ऐसी संस्कृति को बढ़ावा देना है जिसमें रोटरी परिवार के साथ मुकाबला ना करें, बल्कि इसका पूरक बन।

मार्क मलोनी
रो ई अध्यक्ष निर्वाचित

व्यस्त पेशेवरों और लोगों के लिए नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभाते हुए सेवा देना आसान हो सके। ''हमें एक ऐसी संस्कृति को बढ़ावा देना है जिसमें रोटरी परिवार के साथ मुकाबला ना करें, बल्कि इसका पूरक बने,'' मलोनी ने कहा। ''इसका अर्थ है मौजूदा संस्कृति को बदलने के लिए वास्तविक, व्यावहारिक कदम उठना: हमारी उम्मीदों पर खरा उतरना, हमारी समय सारणी का ध्यान रखना और हर स्तर पर रोटरी समारोहों में बच्चों का स्वागत करना।''

उन्होंने कहा कई रुकावटें जो लोगों को रोटरी में नेतृत्वकर्ताओं के रूप में सेवा देने से रोकती है वे उन अपेक्षाओं पर आधारित होती है जो अब प्रासंगिक नहीं है। ''यह समय अनुकूल बनाने का, हमारी संस्कृति को परिवर्तित करने, और इस सन्देश को पहुँचाने का है कि आप प्रत्येक क्लब का दौरा किये बिना भी एक महान मंडल गवर्नर बन सकते है, और खुद से हर चीज़ किये बिना भी एक महान अध्यक्ष बन सकते है।''

संयुक्त राष्ट्र से संबंध

वर्ष 2019-20 के दौरान, रोटरी दुनियाभर में अध्यक्षीय सम्मेलनों की एक श्रृंखला की मेजबानी करेगा, जिसमें संयुक्त राष्ट्र के साथ रोटरी के संबंध और संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों पर ध्यान केन्द्रित किया जाएगा जिसका अनेक रोटरी सेवा परियोजनाएं समर्थन करती है। अधिक जानकारी जुलाई में उपलब्ध होगी।

वर्ष 2020 में, संयुक्त राष्ट्र अपने संविधान और शांति को बढ़ावा देने के अपने मिशन की 75वीं वर्षगांठ मनाएगा। रोटरी उन 42 संगठनों में से एक था जिसे संयुक्त राज्य अमेरीका ने 1945 के सेन फ्रांसिस्को सम्मेलन में अपने प्रतिनिधिमंडल के सलाहकार के रूप में आमंत्रित किया था, जिसके कारण संयुक्त राष्ट्र का संविधान तैयार हुआ था। दशकों तक, रोटरी ने संयुक्त राष्ट्र के साथ दुनियाभर में मानवीय मुद्दों को संबोधित करने हेतु कार्य किया है। आज, रोटरी को सर्वश्रेष्ठ सलाहकार का दर्जा प्राप्त है जो संयुक्त राष्ट्र गैर सरकारी संगठनों को प्रदान करता है।

''रोटरी संयुक्त राष्ट्र की स्वस्थ, अधिक शांतिपूर्ण, और अधिक स्थायी दुनिया के लिए स्थायी प्रतिबद्धता को साझा करती है, मलोनी ने कहा। और रोटरी कुछ ऐसा प्रदान करती है जो कोई अन्य संगठन नहीं दे सकता: एक मौजूदा बुनियादी ढांचा जो दुनियाभर के लोगों को सेवा और शांति की भावना से जोड़ता है और उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सार्थक कदम उठाने में मदद करता है।''

चित्र: एलिस हेन्सन

© Rotary.org

Rotary PEOPLE OF ACTION

दिलों को बचाने का आनंद

जयश्री

पीआरआईडी शेखर मेहता का कार्यालय एक मिनी क्रेच के समान है, जहाँ छोटे बच्चे कुर्सियों पर चढ़ते हैं, जबकि कुछ मेज पर फाइलों को 'पढ़ने' की कोशिश करते हैं और नन्हें बच्चें अपनी माताओं की बाहों में आराम से लिपट जाते हैं। मेहता, सेन्टा की तरह, हालाँकि बिना उनकी तरह कपड़े पहने, बच्चों को कुकीज़ और चॉकलेट्स देते हुए उनके साथ बातचीत करते हैं।

वे रोटरी क्लब कलकता महानगर, मंडल 3291 के सदस्य हैं, और मैं उनके क्लब की मुख्य परियोजना - *Saving little hearts* - के बारे में लिखने के लिए उनके कार्यालय में गई थी।

रुखसोना गायिन (3) कमजोर लेकिन हंसमुख दिखती है जब वह अपनी माँ के पल्लू के पीछे छिप जाती है। जब वह केवल तीन महीने की थी, तब उसके दिल में छेद की सर्जरी हुई थी। डॉक्टर ने उन्हें हृदय-रोग विशेषज्ञ से परामर्श करने की सलाह दी, तो सीमित साधनों के कारण, वे अनिश्चय की स्थिति में थे कि कैसे आगे बढ़ा जाएं; और तब उन्हें मेहता जी के कार्यालय में भेजा गया।

''यह केवल दिल की सर्जरी के लिए नहीं है। मैं कभी भी यहाँ मदद के लिए आने वाले किसी भी व्यक्ति को खाली हाथ नहीं भेजता। लोग इस विश्वास के साथ यहाँ आते हैं कि रोटरी उनकी किसी तरह मदद करेगी। आप यह नहीं कह सकते कि यह मेरा कार्यक्रम नहीं है या हमारे पास इसके लिए अलग से रकम नहीं है,'' मेहता समझाते हुये कहते हैं, और साथ ही वे मेरे लिए बंगाली में किशोर आंगुतकों के बातचीत का अंग्रेजी में अनुवाद भी करते है।

एक और माँ थी जिसने बच्चे की सर्जरी के लिए अपने झुमके बेचे थे। मेहता जी ने उससे पूछा, ''क्या तुम्हें अपने झुमके वापस मिल गए?'' उसने उचित उत्तर दिया, ''नहीं, लेकिन मुझे मेरा बेटा वापस मिल गया।''

अपने अपने बच्चों के लिए क्या सपने देखें हैं, मैं माता-पिता से पूछती हूँ। एक पिता कहता है, ''मुझे खुशी है कि मेरा बीटा जीवित और सक्रिय है। वह अभी पढ़ाई कर रहा है और मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि वह जीवन की चुनौतियों का सामना सही तरीके से करने के योग्य बन सके।''

''बड़ी होकर क्या बनेगी - डॉक्टर बनेगी, इंजीनियर बनेगी, पायलट बनेगी, देश का प्रधानमंत्री बनेगी?'' मेहता बड़े बच्चों से पूछते हैं। एक लड़का पायलट बनना चाहता है। आठ साल की एक और लड़की इंजीनियर बनना चाहती है। एक क्रिकेटर बनना चाहता है और उसका आदर्श एम एस धोनी है। एक था जो हीरो बनने के सपने देखता था। और एक छोटे लड़के ने एक सुंदर बंगाली कविता गाकर हमारा मनोरंजन किया।

फारूक गाजी (5) में कुछ छोटी-मोटी जटिलताएँ विकसित हुई है, उसके पिता कहते हैं, और मेहता जी तुरंत रोटेरियन डॉ आर पी विद्धावन के पास जाते हैं जो बैठक के लिए उपस्थित थे।

PRID शेखर मेहता, पूर्व अध्यक्ष आर पी विद्धावन, प्रदीप रावत और रोटरी क्लब कलकत्ता महानगर की अध्यक्ष चित्रा अग्रवाल Saving little hearts प्रोजेक्ट के लाभार्थीयों के साथ।

वहाँ लगभग दस बच्चे थे, जिनमें से सभी रोटरी की पेड्यिाट्रिक हार्ट सर्जरी परियोजना के लाभार्थी थे और वे सभी मेहता के साथ घुले-मिले हुए थे; कुछ उनकी गोद में चढ़ते हैं और फोटो खींचवाने के लिए बैठते हुए एक उनके कंधे पर झुक कर खुश होता है।

''यह सब तब शुरू हुआ, जब आरआईपीएन सुशील गुप्ता ने एक बार मुझसे पूछा, 'जब आप पूर्वी भारत में गिफ्ट ऑफ लाइफ कार्यक्रम क्यों शुरू नहीं करते हैं।' मुझे तब हार्ट सर्जरी के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। मैंने कहा ठीक है।'' मेहता कहते हैं, और उन्होंने जीवनरक्षक परियोजना की उत्पत्ति का पता लगाना शुरू किया। संसाधनों को एकत्र करने में उन्हें दो महीनों का समय लगा। मंडल 3240 के पीडीजी कल्पना खौंड ने सुझाव दिया कि वह पूर्वोत्तर क्षेत्र से 15 बच्चों को ''हमारे हृदय की सर्जरी कार्यक्रम'' के लिए कोलकाता भेजेंगे। लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कर पाते, एक बच्चे की मौत हो गई। ''यह सदमे ने मुझे हिलाकर रख दिया। आगे कैसे बढ़ें, इसके बारे में ज्ञान की कमी के कारण, हमने एक बहुमूल्य जीवन खो दिया।''

रॉबिनहुड डॉक्टर

फिर कुछ दिनों बाद हृदय-रोग विशेषज्ञ डॉ आर पी विद्धावन, जो 2006 में रोटरी क्लब कलकत्ता महानगर के नवनियुक्त अध्यक्ष भी थे, ने मेहता को सुझाव दिया कि वह बच्चों के हृदय की सर्जरी करना चाहते हैं। ''और मैंने सोचा, वाह, यही तो जरूरत थी और यहाँ वे मदद के लिए है।'' विद्धावन जी ने एक वर्ष में छह नि:शुल्क सर्जरी करने का निश्चय किया। लेकिन कार्य के दौरान, 30 सदस्यों ने स्वेच्छा से प्रत्येक बच्चे को सहयोग दिया। ''इस तरह हम 66 बच्चों का उपचार करने में सफल रहें, और यह तब से एक स्थायी परियोजना बन चुकी है। शीघ्र ही वे 'रॉबिनहुड डॉक्टर' के नाम से प्रसिद्ध हो गए।''

CHD से पीड़ित बच्चों के उपचार के लिए विद्धावन जी के जुनून की शुरुआत वार्तालाप के आगे बढ़ने के साथ स्पष्ट होती है। वह अपने जूनून के पीछे की कहानी सुनाते हुए कहते है: बात उस समय की है जब वे 1970 के दशक की शुरुआत में एक युवा मेडिकल छात्र के रूप में अस्पताल में इंटर्न थे, तो वे सीनियर डॉक्टरों की नीले शिशुओं (हृदय में छिद्र वाले बच्चों) के उपचार के लिए ज्ञान की कमी के कारण दो बच्चों के मौत के एक मूकदर्शक साक्षी बने थे। बाद में उन्होंने विदेश जाकर ओपन हार्ट सर्जरी का अध्ययन किया। लेकिन यह उनके पिता, जो अस्थमा के मरीज थे, जिन्होंने उन्हें वर्तमान पेशे को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया, जिसमें वे अभी कार्यरत्त हैं।

उनके और कार्डियोलॉजिस्ट अजय कौल, जो डॉ विद्धावन के प्रिय मित्र है, ने क्लब के लिए वर्ष 2006 से 1,000 अधिक हार्ट सर्जरी की हैं। विधावन कौल की सराहना करते हैं जो एक रोटेरियन नहीं थे, ''फिर भी वह कहते हैं, 'अगर आप कुछ भी चार्ज नहीं कर रहे हैं, तो चलि,' मुझे भी कुछ नहीं चाहिए। यह उस आदमी का उत्साह है। वह आधी रात को भी मरीजों को देखने जाते थे।''

विद्धावन की पत्नी भी इस परियोजना में समान रूप से जुड़ी हुई हैं। ''वे बच्चों को बी एम बिड़ला अस्पताल लेकर जाएंगी, उन्हें अस्पताल में भर्ती करवाएंगी और मुझे कमरा नंबर बताएंगी। मैं बस वहाँ जाता हूँ, चिंतित माताओं को आश्वस्त करता हूँ, सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ और सर्जरी करता हूँ।'' वह कहते हैं, इन बच्चों को अब मेरे और आपके जैसे बड़े होते देखने की खुशी और माता-पिता के चेहरों पर संतुष्टी के मुस्कान के बराबर कुछ भी नहीं है। ''वे उन पाँच बच्चों की शिक्षा को प्रायोजित कर रहे है जो उनके मरीज थे।''

उनका कहना है कि यदि गर्भावस्था के पहले तिमाही के दौरान माँ खसरा, रूबेला या वायरल संक्रमण से पीड़ित होती है, तो बच्चे को रुमेटीय हृदय रोग से पीड़ित होने का जोखिम होता है। ''ये लोग इस तरह की अस्वस्थकर स्थिति में रहते हैं और इसका जोखिम बहुत अधिक होता है।''

यदि गर्भावस्था के पहले तिमाही के दौरान माँ खसरा, रूबेला या वायरल संक्रमण से पीड़ित होती है, तो बच्चे को रुमेटीय हृदय रोग से पीड़ित होने का जोखिम होता है।

डॉ आर पी विद्धावन
पूर्व अध्यक्ष
रोटरी क्लब कलकत्ता महानगर

इन दो देशों के लिए, जिन्होंने 70 वर्षों में तीन युद्ध लडे.हैं, उनके लोगों के बीच शांति स्थापित करने का इससे बेहतर तरीका और क्या हो सकता है?

PRID शेखर मेहता

लगभग चार वर्षों से क्लब अपने सदस्यों के सहयोग से कार्यक्रम को आगे बढ़ा रहा था, जिसके बाद तत्कालीन डीजी उत्पल मजूमदार ने इसे मंडल भर में लागू करने का दायित्व उठाया और उसके बाद रोटरी क्लब चौरंगी और कलकत्ता सक्रिय रूप से इस कार्यक्रम से जुड़ गए। रोटरी क्लब चौरंगी के सेवा परियोजना की निदेशक नीता सेतिया कहती हैं, ''हमने निधि एकत्र कर और रोटरी इंडिया ह्यूमैनिटी फाउंडेशन (RIHF) और अन्य ट्रस्टों की मदद से 100 हार्ट सर्जरी प्रायोजित किया हैं।'' वह पिछले दस वर्षों से इस परियोजना से जुड़ी हुई है।

जब बी एम बिड़ला अस्पताल से डॉ कौल का स्थानांतरण हो गया, तो अस्पताल ने अधिक शुल्क वसूल करना शुरू कर दिया और तब क्लबों ने रबींद्रनाथ टैगोर अस्पताल के साथ साझेदारी की, जो पेड्यिाट्रिक सर्जरी के लिए मशहूर था।

RIHF और वैश्विक अनुदान

शीघ्र ही नव-जीवन देने वाली परियोजना वैश्विक अनुदानों और RIHF के सहयोग से विशाल होती गई, जिसे मेहता जी ने स्थापित किया था जब वे रो ई निदेशक थे, और पहले जो क्लब की मुख्य परियोजना थी, वह अनेकों गुना विशाल हो चुकी थी। RIHF का एक लक्ष्य 3,000 सर्जरी करना था। मेहता जी कहते है, ''RIHF के अधीन हम इसे संपूर्ण भारत में - मुंबई, लुधियाना, हैदराबाद, बेंगलुरु, दुर्गापुर, जयपुर और दिल्ली तक फैलाया।'' मंडल 3030 के पीडीजी मधु रुघवानी ने उन्हें बहुत प्रभावित किया था। ''जब मैं वर्ष 2004-05 में उनके मंडल सम्मेलन में गया था, तो वह रोटरी का 101वां वर्ष था और उनका लक्ष्य 101 हार्ट सर्जरी करना था। वह पलक मुछाल नामक एक लड़की के माध्यम से इस परियोजना के

लिए धन एकत्र करते थे, जो आज एक बड़ी गायिका है। हमने उसे निधि एकत्र करने के लिए अपने क्लब में आमंत्रित किया, और बहुत राशि एकत्र की।''

मेहता बेंगलुरु के नारायण हृदयालय अस्पताल के डॉ देवी शेट्टी और नीडी हार्ट फाउंडेशन के संस्थापक ओ पी खन्ना के संपर्क में आए, और कुछ हार्ट सर्जरी वहाँ किया गया। ''भारतीय सेना के सहयोग से, लुधियाना में 17 बच्चों का सीएचडी के लिए उपचार किया गया।''

निधि एकत्र करने के बारे में मेहता जी अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहते है कि उनके क्लब के सदस्य प्रदीप रावत (70) ने परियोजना के लिए अपनी पेंटिंग्स से प्राप्त आय कैसे दान की। उन्होंने आर्ट फॉर लिटिल हार्ट्स नाम से दो प्रदर्शनियों का आयोजन किया - पहली कोलकाता में बिरला अकादमी ऑफ़ आर्ट एंड कल्चर में, और दूसरी दिल्ली में ललित कला अकादमी में। ''उन्होंने पेंटिंग की कीमत सर्जरी की संख्या के संदर्भ में निर्धारित की - यह पेंटिंग जो आप खरीदेंगे, वह 5 हार्ट सर्जरी, 10 हार्ट सर्जरी, आदि में मदद करेगी और इस तरह पेंटिंग की बिक्री से लगभग 60 लाख रुपये एकत्र करने में सफलता मिली।''

रोटरी के क्षण

पाकिस्तानी बच्चों के लिए सर्जरी दुर्गापुर मिशन अस्पताल में शुरू हुआ, जब कमल संघवी, जिन्होंने आरआईपीआर के रूप में वहाँ का दौरा किया था, ने अमन की आशा कार्यक्रम के लिए अस्पताल के साथ एक MoU पर हस्ताक्षर किया। ''पीआरआईपी कल्याण बनजी, मिशन हॉस्पिटल के डॉ बोस और मैं पाकिस्तान गए थे और हर शहर में हमें एक कार्डियक कैंप में ले जाया गया, जहाँ अनेक बच्चे जाँच के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे।'' कोलकाता से 20 किलोमीटर दूर दुर्गापुर के रोटेरियन ने अमृतसर, दिल्ली, कोलकाता और अंत में दुर्गापुर के माध्यम से पाकिस्तान से अमृतसर तक की यात्रा के लिए पाकिस्तानी बच्चों और उनके माता-पिता की वीजा औपचारिकताओं, परिवहन और आवास की व्यवस्था की। ''एक मामले में सर्जरी के बाद एक बच्चे की मृत्यु हो गई थी। वहाँ जोखिम भी है,'' वह याद करते हुए कहते है।

जब वह अपने 'रोटरी क्षणों' के बारे में बात करते हैं तो उनका चेहरा खुशी से दमक उठता है। जब वे

PRID मेहता, बच्चों के माता-पिता से बातचीत करते हुए।

अपनी पत्नी राशी के साथ दुर्गापुर गए, ''हम पश्चिम पाकिस्तान के असगर अली से मिले। उसकी माँ ने कहा: बहुत खुश हूँ मैं; यह बच्चा दस दिन पहले चल नहीं सकता था; और अब तो यहाँ पर दौड़ रहा है। और फिर उसने जो कहा, वह आज भी मेरे मस्तिष्क में तरोताजा में है। उसने कहा, 'यह बच्चा पाकिस्तान में पैदा हुआ था, लेकिन उसे भारत में एक जीवन मिला।' इसके खून में पाकिस्तान ही नहीं, इंडियन ब्लड भी है। इन दो देशों के लिए, जिन्होंने 70 वर्षों में तीन युद्ध लडे.हैं, उनके लोगों के बीच शांति स्थापित करने का इससे बेहतर तरीका और क्या हो सकता है?''

कार्यक्रम शुरू होने के तीन वर्ष बाद तक, अपने माता-पिता के साथ कम से कम एक बच्चा मेरे कार्यालय के सामने बैठा रहता था। ''और मेरा पहला काम उन्हें बुलाना और उनसे जानकारी प्राप्त करना था और उन्हें डॉ विद्धावन के पास जाँच के लिए भेजना था।'' अब जब सरकार सहयोग दे रही है, बहुत कम लोग रोटरी के पास मदद के लिए आते हैं, वे कहते हैं। ''इसे ऐसा होना चाहिए। क्योंकि सरकार जब ऐसा नहीं कर रही थी, तो हमने इसे शुरू किया। लोग कहते हैं, गवर्नमेंट ने हमरा कॉपी कर लिया। लेकिन आखिरकार यही तो विचार है। अगर हम कहें कि हमने केवल पोलियो को जड़-मूल से समाप्त कर दिया है, तो हम गलत हैं। हमने ऐसा करने के लिए सरकार को प्रोत्साहित किया और इस तरह पोलियो का नामोंनिशान मिट गया।''

यह अंतिम वैश्विक अनुदान हार्ट सर्जरी परियोजना होगी जिसे क्लब पूरा करेगा क्योंकि गत वर्ष हार्ट सर्जरी के लिए उनके पास आने वाले लोगों की संख्या कम हो गई है। ''हमारे पास विगत पाँच महीनों के लिए पैसा है, लेकिन केवल एक ही हार्ट सर्जरी की गई थी।'' उन्होंने मनु चतलानी जैसे भरोसेमंद दाताओं के साथ सहयोग किया है, जिसका परिचय डॉ शेट्टी, और मान्यवर, परिधान के दुकानों की श्रृंखला, ने करवाया था। ''मैं अब पहले की तरह सक्रिय नहीं हूँ और मेरे सहयोगी शुबो और उसकी पत्नी इस परियोजना की देखभाल करते हैं। वे बच्चों से मिलते हैं, माता-पिता से बात करते हैं और देखते हैं कि बच्चे को सुरक्षित रखा जाता है।'' लाभार्थी कभी-कभी पैसे का योगदान देता है और बाकी पैसों को अन्य दानदाताओं से ली जाती है।

यह कार्यक्रम मंडल का दौरा करने वाले किसी भी वरिष्ठ नेतृत्व के लिए तीर्थ यात्रा के समान है। ''यह प्रत्येक अध्यक्ष के लिए प्रथागत है - सकुजी तनाका, जॉन जर्म, कल्याण दा, डी के ली, रवींद्रन - कि वे कुछ बच्चों से मिलते हैं। हम स्मृति चिन्ह नहीं देते हैं। इसके बजाए, हम उनकी यात्रा के सम्मान में 5 या 10 बच्चों के लिए हार्ट सर्जरी को प्रायोजित करते हैं, जैसे कि आरआईपीएन सुशील गुप्ता के अभिनन्दन के दौरान हमने पाँच बच्चों के लिए हार्ट सर्जरी प्रायोजित किया था,'' मेहता जी कहते हैं।

चित्र : जयश्री

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से संदेश

रोटरी इंटरनेशनल दक्षिण एशिया कार्यालय, पुल्मैन/नोवोटेल कमर्शियल टॉवर,
प्रथम तल, एसेट न. 2, आतिथ्य मंडल, एरोसिटी (आईजीआई हवाई अड्डे के निकट), नई दिल्ली 110037

Rotary year 2018–19 AKS members from South Asia as on December 31, 2018:

Zone	District	Donor Name	Recognition Level
4	3141	Nishchal H Israni	Trustees Circle
5	3150	Ravindra Reddy Marri	Trustees Circle
4	3141	Amit Chandra	Trustees Circle
4	3190	Ravishankar Dakoju	Foundation Circle
5	3150	Uday S Pilani	Trustees Circle
4	3141	Taizoon Fakhruddin Khorakiwala	Trustees Circle

जनवरी 2019 क्लब इनवॉइस, 1 जनवरी तक क्लब की प्रतिवेदित सदस्यता के आधार पर, क्लबों को भेज दिया गया है। कृपया ध्यान दें:

- क्लब अपने जनवरी इनवॉइस, जो क्लब विशिष्ट है, में उल्लेखित 'बैंक/इलेक्ट्रॉनिक हस्तांतरण' विवरण के अनुसार ऑनलाइन भुगतान कर सकते है; पिछले इनवॉइस में दी गई जानकारी अब कारगर नहीं है और इससे भुगतान नहीं होगा।
- चेक/डिमांड ड्राफ्ट से भुगतान की स्थिति में, उसे नई दिल्ली में 'रोटरी अंतर्राष्ट्रीय दक्षिण एशिया कार्यालय' के नाम पर देय बनाए और नीचे दिए गए हमारे कार्यालय के पते पर डाक द्वारा भेजें।

  रोटरी अंतर्राष्ट्रीय दक्षिण एशिया कार्यालय: पुलमैन/नोवोटेल कमर्शियल टावर फर्स्ट फ्लोर, एसेट नंबर 2, हॉस्पिटैलिटी डिस्ट्रिक्ट, एरोसिटी (IGI हवाईअड्डे के पास नई दिल्ली 110037
- भारतीय मुद्रा में भुगतान करने के पहले, *https://my.rotary.org/en/exchange-rates* पर जाकर वर्तमान रोई विनिमय दर की जाँच करें।

रोटरी संस्थान (भारत) में योगदान: आयकर अधिनियम 1961 के तहत, सभी दानकर्ताओं को अपने योगदान फॉर्म/पत्र में उनके स्थायी खाता संख्या (PAN) की जानकारी देना आवश्यक है या PAN कार्ड की स्कैन की हुई प्रति हमें भेजें, वर्तमान वित्तीय वर्ष के दौरान प्राप्त रिपोर्टिंग योगदान के उद्देश्य के लिए।

CSR निधि: वित्तीय वर्ष 2018-19 समाप्ति पर है। कई कॉर्पोरेटों के पास अभी भी सामुदायिक विकास पहलों पर खर्च करने के लिए CSR निधि उपलब्ध है। यह सभी रोटेरियनों के लिए कॉर्पोरेटों से CSR किट्स के साथ जुड़ने और उड्ढ योगदान तक पहुँचने का अवसर है। आपके मंडलों के कॉर्पोरेटों को ढूँढने के लिए आप *https://csr.gov.in/CSR/* साईट पर जाना पसंद करेंगे। यह क्लबों/मंडलों की वैश्विक अनुदान लेने और उनके समग्र योगदान को बढ़ाने में उनकी मदद करेगा। CSR किट्स की आवश्यकताओं, सामान्य प्रश्नों और संदर्भ पत्र के साथ-साथ किसी भी प्रकार की सहायता के लिए CSR टीम से संपर्क करें।

वैश्विक अनुदान भुगतान: निम्न औपचारिकताओं को पूर्ण करने के बाद TRF द्वारा वैश्विक अनुदान जारी किया जाएगा। प्रायोजक योगदान रोटरी संस्थान को सौंप दिए गए है; भुगतान आकस्मिकताएं, यदि कोई हो, तो उसका निपटान कर दिया गया है; क्लब अध्यक्ष द्वारा विधिवत रूप से हस्ताक्षरित किया हुआ कानूनी समझौता, मूल रूप में दक्षिण एशिया कार्यालय भेजा जाता है;

अनुदान राशी का भुगतान केवल आवेदन के साथ प्रदान किये गए खाते में ही किया जाएगा और परियोजना पूरा करने वाले को परियोजना व्यय के प्रत्यक्ष भुगतान हेतु उपयोग किये जाने तक यह उसी खाते में रहेगा। भुगतान के समय वर्तमान रोई विनिमय दर पर अनुदान का भुगतान किया जाएगा। परियोजना प्रायोजकों को भुगतान प्राप्त होने के बाद यदि अनुदान परियोजना रद्द कर दी जाती है, तो शेष संपूर्ण अनुदान राशी संस्थान को वापस कर दी जानी चाहिए, जिसे विश्व निधि में जमा कर दिया जाएगा।

ऐसे अनुदान जिनके लिए विश्व निधि अनुदान 50,001 डॉलर और 200,000 डॉलर के मध्य है, का भुगतान खर्च योजना अनुसार किश्तों में किया जाएगा। प्रारंभिक किश्त के बाद, अनुवर्ती किश्तें तब दी जाएगी जब एक बार अनुदान प्रायोजकों द्वारा प्रस्तुत की गई प्रगति रिपोर्ट TRF द्वारा स्वीकार कर ली जाए और तकनीकी सलाहकारों के कैडर द्वारा एक अंतरिम साईट का दौरा कर लिया जाए।

रोटरी की खोज करें: यह *https://www.rotary.org/myrotary/en/document/discover-rotary* पर उपलब्ध है और रोटरी का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करता है, जिसमें वक्ता के शब्द शामिल है, और क्लब विशिष्ट चित्र या जानकारी शामिल करने के लिए संपादन योग्य है। प्रस्तुतीकरण में रोटरी के मूल्य, इतिहास, और सदस्यता के लाभ शामिल है। इन्हें रोटरी से परिचित करवाने के लिए, क्लब द्वारा जनता के लिए आयोजित भावी सदस्य कार्यक्रम या अन्य कार्यक्रम में इसे प्रस्तुत करें। क्लब को प्रतिबिंबित करने वाली जानकारी और चित्रों की स्लाइड को शामिल करने के लिए फाइल को संपादित किया जा सकता है।

सदस्यता विवरण और अन्य सूचनापत्र: सदस्यता विवरण सूचना पत्र ईमेल के माध्यम से आता है, संसाधन, उपकरण और सदस्यता विकास विचारों पर जानकारी प्रदान करता है। यह रोटरी सदस्यता पर नवीनतम शोध भी प्रस्तुत करता है; योग्य और प्रतिबद्ध रोटेरियनों की भर्ती कैसे करें और उन्हें कहा ढूंढे इसके बारे में सुझाव देता है; नए सदस्य अभिविन्यास कार्यक्रमों के निर्माण करने और उन्हें बढ़ावा देने के लिए विचार प्रस्तुत करता है और सदस्यों को रोकने और बनाए रखने के लिए टिप्स और विचारधारा प्रदान करता है। सदस्यता विवरण और अन्य सूचनापत्रों को *My Rotary* के माध्यम से *https://my.rotary.org/en/news-features/newsletters* पर देखा जा सकता है।

रोटरी संस्थान की 2017-18 वार्षिक रिपोर्ट अब रोटरी की वेबसाइट पर उपलब्ध है। रिपोर्ट में रोटरी के वित्तीय विवरणों के साथ-साथ सेवा परियोजनाओं की झलकियाँ है जिनका सकारात्मक, दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा, और दानकर्ताओं की कहानियाँ है कि क्यों वे रोटरी संस्थान में योगदान देते है। वार्षिक रिपोर्ट को देखने का लिंक है *https://www.rotary.org/en/annual-report-2018.* ■

मदुरै में रोटरी जीवंत हो उठी

वी मुत्तुकुमारण

स्नातक के बाद, मेरी महत्वाकांक्षा पैसा कमाना और अमीर बनना था। एक रोटेरियन के रूप में उन शुरुआती वर्षों के दौरान, मैं अकेला और गैर- प्रतिबद्ध था,'' मंडल 3000 के दो दिवसीय मंडल सम्मेलन, अनंतम में रो ई निदेशक सी भास्कर ने कहा। उन्होंने आगे कहा कि उन्हें उनकी इच्छाओं के विरुद्ध, रोटरी में वर्ष 1988 में उनके पिता वी एन चोकलिंगम ने शामिल कराया था, जो एक परोपकारी के रूप में कार्य करने वाले उद्योगपति के रूप में जाने जाते हैं। ''उन्होंने कहा था, केवल अच्छी संगत में ही, आप विश्वसनीय मैत्रीपूर्ण संबंधों को विकसित कर सकते हैं, जो आपके नवीन आदतों और संस्कृति को विकसित करने में सक्षम बनाएगा जो आपके जीवन में सफलता की नींव रखेगी।'' उनकी बातें सच हुई जैसे ''आज मैं जो कुछ भी हूँ, रोटरी की बदौलत हूँ और अब मैं अपने दोस्तों और व्यावसायिक पार्टनर को संस्था से जुड़ने की सलाह देता हूँ।''

लेकिन, वे आगाह करते है, कि केवल रोटेरियन होना ही पर्याप्त नहीं है, ''आपको क्लब की बैठकों में भाग लेना होगा, अपना सुझाव देना होगा और सामुदायिक परियोजनाओं में भाग लेना पड़ेगा।''

परोपकार के जेम्स बॉन्ड

उन्होंने आयरिश अमेरिकी व्यवसायी चक फ़िनी का उल्लेख किया, जिन्होंने विभिन्न प्रकार के परोपकारी कार्यों के लिए 8 बिलियन डॉलर से अधिक दान दिया। जब उनसे इस तरह का विशाल दान देने - क्योंकि उन्होंने अपनी पूरी संपति दान कर दी थी - का कारण पूछा गया, तो फ़िनी ने कहा, ''लोग नंगा पैदा होते हैं और अंत में अकेले मर जाते हैं। कोई भी व्यक्ति उस धन और प्रतिष्ठा को नहीं ले कर जा सकता है जिसके लिए वह जीवन भर प्रयास करता है।''

भास्कर कहते है, ''हमारे पास वॉरेन बफेट, बिल गेट्स और हमारे रोटेरियन रविशंकर में इस तरह के समानताएं हैं।'' एक सादगी और मितव्ययी जीवन जीते हुए, फ़िनी सैन फ्रांसिस्को में एक मामूली किराए के अपार्टमेंट में अपनी पत्नी के साथ रहते हैं। उन्हें आदर से परोपकार के जेम्स बॉन्ड के उपनाम से भी जाना जाता है।

रो ई निदेशक ने उल्लेख किया कि पिछले पाँच वर्षों में, मंडल 3000, उनके गृह मंडल ने, जोन-5 में टीआरएफ में दान देने और सदस्यता में बडी ऊंचाइयों को हासिल किया है।

पीडीजी आर थीनाचंद्रन और उनकी पत्नी वसंती ने टीआरएफ को ₹1.25 करोड़ दान दिए। वे पहले युगल पीडीजी एम मुरुगानंथम और सुमति के बाद मंडल के दूसरे एकेएस युगल हैं। थीनाचंद्रन कहते कि वह *रोटरी न्यूज़* में RID के संदेश को पढ़ने के बाद, उन्हें ऐसा करने की प्रेरणा मिली कि कैसे एक व्यक्ति पैसे को पुण्य में बदल सकता हैं और मृत्यु के बाद भी अमीर बना रह सकता हैं।

मंडल 3120 के पीडीजी प्रमोद कुमार, जो सम्मेलन में रो ई अध्यक्ष के प्रतिनिधी है, ने उपस्थित

रो ई निदेशक सी भास्कर ने PDG आर थिनाचंद्रन और उनके परिवार को AKS में योगदान के लिए सम्मानित किया। चित्र में DG आर वि एन कण्णन और रोटरी क्लब बैंगलोर ऑर्चार्डस् के अध्यक्ष डी रविशंकर भी मौजूद हैं।

मदुरै में इडली का आनंद उठायें ...

बाएं सेः रोटेरियन डी रविशंकर, DG आर वि एन कण्णन और पूर्व मंडल सचिव राजा गोविन्दस्वामी।

एक संवादात्मक सत्र में, रोटरी क्लब बैंगलोर ऑर्केड्स के अध्यक्ष डी रविशंकर, जिन्होंने टीआरएफ में ₹100 करोड़ देने का लक्ष्य रखा है, और अपने सह-पैनलिस्ट, डीजी कन्नन और मंडल के पहले वाले सचिव राजा गोविंदस्वामी के साथ कुछ हास्यप्रद पलों को साझा किया। सत्र के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

आपने टीआरएफ को क्यों चुना?

क्या आप एक बेहतर विकल्प को सुझा सकते है?

आप रोटरी से क्यों जुड़ें?

यह सफलता की यातना से बाहर निकलना है। उन दिनों, मैं अक्सर सवालों से घिर जाता था और चिंताओं से त्रस्त रहता था जब रियल एस्टेट का कारोबार अपनी ऊँचाइयों पर था। मैं रोटरी के माध्यम से मानवता को छूना चाहता था।

आप अपनी सफलता का श्रेय किसको देते हैं?

सरकार की नियंत्रण राज नीति की विफलता मेरी सफलता का मुख्य कारण है। यदि आप अपने जीवन के लिए एक सही साथी प्राप्त नहीं करते हैं, तो आपको शादी नही करनी चाहिए। उसी प्रकार से, यदि आपको व्यापार में सही भागीदार नहीं मिलता हैं, तो एकल व्यवसायी बनें।

आपने अपनी संपत्ति का 70 फीसदी टीआरएफ को दे दिया हैः

यह एक एहतियाती कदम है क्योंकि मैं अपनी दोनों बेटियों के भविष्य को बिगाड़ना नहीं चाहता। यदि आप अपनी आवश्यकता से अधिक पैसे रखते हैं है, तो यह अहंकार में बदल जाता है।

लेकिन फिर टीआरएफ क्यों? फाउंडेशन पर इतना भरोसा करने के लिए आपने क्यों निश्चय किया?

यदि आप तिरुपति हुंडी में नकद या कीमती सामान डालते हैं, या मक्का या वेटिकन में एक बडी राशि दान देते हैं, तो आप दिए गए दान की राशि को नियंत्रित नहीं कर सकते है।

यदि आप प्रधानमंत्री राहत कोष, अनाथालयों, परोपकारी संस्थानों, या गैर-सरकारी संगठनों को दान देते हैं, तो आप सुनिश्चित नहीं हो सकते हैं कि धन अपने लक्ष्य तक पहुँचता है या नहीं। भारत में 50 प्रतिशत से अधिक एनजीओ फजी हैं।

यदि आप बैंकों में पैसा जमा करते हैं, तो निश्चिंत रहें कि नीरव मोदिस और विजय माल्या उसे लेकर विदेश में रफ्फू-चक्कर हो जायेंगें, जबकि इस सब से बेखबर, आप गे एबंड्न में आप पसंदीदा मदुरै की इडली का मजा ले रहे होंगे।

रोटरी में धारणा के विपरीत, मैंने अपनी वसीयत में संपत्ति का लगभग 85 प्रतिशत दान करने के लिए लिखा है, और 70 प्रतिशत नहीं जैसा कि सभी लोग सोचते है।

आपने अपनी बेंज कार को नीलाम करने के बारे में क्यों सोचा?

कार की नीलामी से प्राप्त आय (₹76 लाख) टीआरएफ को दान करने से गरीबों को शिक्षित करने में अनेक प्रकार से मदद मिलेगी। AIDS नियंत्रण और स्कूल की रोकथाम की तरह मैंने मणिपुर-म्यांमार सीमा में स्थापित किया था जिसमें 500 बच्चों ने नामांकन लिया।

रोटरी ने आपको कैसे रूपांतरित किया है?

रोटरी आपको ऊर्जान्वित करती है और रोटेरियन का ह्रदय शुद्ध है। मैं उन्हें एक कदम आगे बढाने और उदारता से दान करने की सलाह देता हूँ। इसने मेरे जीवन को दिशा और उद्देश्य दिया है। मुझे लगता है कि मैंने जो किया है वह बिल्कुल सामान्य है, बस समाज को थोडा-सा वापस दिया है जो उसने मुझे अपने जीवन में अब तक दिया है।

केवल रोटेरियन होना ही पर्याप्त नहीं है, आपको क्लब की बैठकों में भाग लेना होगा, अपना सुझाव देना होगा और सामुदायिक परियोजनाओं में भाग लेना पड़ेगा।

रो ई निदेशक **सी भास्कर**

RIPR प्रमोद कुमार और उनका पत्नी प्रेमलता, RID सी भास्कर और माला के साथ।

लोगों से आग्रह किया कि वे ''अपने समाज के अंदर और यहाँ तक कि अपने घरों में भी प्रेरणा की तलाश करें।'' तमिलनाडु में अनेक प्रेरणादायक आदर्श व्यक्ति हैं।''

मद्रास उच्च न्यायालय के अतिथि वक्ता न्यायमूर्ति आर महादेवन ने वर्षों से रोटरी की निरंतर विकास गाथा की सराहना की। उन्होंने वर्ष 1942 में UNESCO के गठन में रोटरी की प्रमुख भूमिका का उल्लेख किया, और बताया कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, कैसे रोटरी ने अपने रोटरैक्ट, इंटरेक्शन और पोलियोप्लस अभियान को दूर-दूर तक सफलतापूर्वक फैलाया।

डीजी आरवीएन कन्नन ने शेष छह महीनों में सभी विकास के मापदंडों में नए कीर्तिमान स्थापित करने का संकल्प लिया। उन्होंने पीडीजी पी गोपालकृष्णन, एम मुरुगानंथम और स्वयं के बीच पैनल चर्चा से प्रेरित होकर टीआरएफ में इस वर्ष योगदान की राशि को संशोधित कर 1.65 मिलियन डॉलर से बढ़ाकर 2 मिलियन डॉलर कर दिया। उन्होंने पोलियो फंड के लिए ₹7 लाख का चेक भी दिया।

आईपीडीजी मंजूर आर मैसी, आरआईडी 5330, कैलिफोर्निया, अमेरिका, से 'नेटवर्किंग की शक्ति' पर बोलते हुए, मंडल 3000 द्वारा निष्पादित एक वैश्विक अनुदान परियोजना का उल्लेख किया, जिसके अंतर्गत परियोजना डब्ल्यूईईपी (महिला शिक्षा और रोजगार कार्यक्रम) के तहत रोटरी क्लब सैन बर्नार्डिनो क्रॉसरोड, उनके गृह क्लब की साझेदारी में 15 सिलाई केंद्रों की स्थापना की गई।

गोपालकृष्णन कहते है कि ''पिछले वर्ष 900,000 डॉलर भारत के सभी सीएसआर फंडों में से, हमारे मंडल ने 340,000 डॉलर प्राप्त किया, जो राष्ट्रीय आंकड़े के एक तिहाई से अधिक है। कर्क्षीर वैश्य बैंक, टीवीएस श्री चक्र, जेवीएस एक्सपोर्ट्स और कावेरी मेडिकल जैसे कॉरपोरेट्स के साथ डायलिसिस सेंटर, मेडिकल फैसिलिटीज गाँवों को गोद लेने के साथ, हमने एक आशाजनक शुरुआत की थी।''

टर्म गिफ्ट्स और एंडॉवमेंट फंड्स देने के बजाए, रोटेरियन एनुअल प्रोग्राम फंड (APF) में निवेश कर सकते हैं, मुरुगनाथम ने सुझाव देते हुए कहा। वे कहते है, ''तीन वर्ष के बाद, आधी राशि वापस आ जाएगी, जबकि अपने वैश्विक साझेदार के साथ हम टीआरएफ फंड का इस्तेमाल कर सकते हैं, जो हमारी परियोजनाओं को आगे बढ़ाने में मदद करेगा,'' और उन्होंने फाउंडेशन को ₹10 लाख का योगदान दिया और इस तरह उनका कुल दान ₹2 करोड़ हो गया।

यदि आप अपनी आवश्यकता से अधिक पैसे रखते हैं है, तो यह अहंकार में बदल जाता है।

डी रविशंकर
अध्यक्ष, रोटरी क्लब बैंगलोर मंडल 3190

जबकि रोटरी क्लब तेनी मेट्रो ने 32,000 डॉलर का टर्म गिफ्ट दिया, उसके बाद थेनी के सभी क्लबों ने संयुक्त रूप से टीआरएफ में 100,000 डॉलर का योगदान दिया। रोटरी क्लब तिरुचि डायमंड सिटी ने आठ रंगीन, फ्रेमयुक्त चित्रों को बोली लगा कर बेचा और प्राप्त आय फाउंडेशन को दिया।

मंडल 3300, कुआलालंपुर से रो ई निदेशक दत्तो शिव अनंतन ने भाग लिया। रोटेरियन परिवारों द्वारा आयोजित किए जा रहे रोटरी यूथ एक्सचेंज में चार ब्राजीलियाई छात्रों ने सांबा नृत्य किया।

डीजीई जमीर पाशा ने अपनी टीम रॉयल का परिचय उस कार्यक्रम में करवाया जिसमें 2,500 से अधिक पंजीकरण किया गया था।

चित्र : वी मुत्तुकुमारण

Rotary PEOPLE OF ACTION

नेपाल के मंदिरों में विषाक्त कुमकुम-मुक्त अभियान

टीम रोटरी न्यूज़

काठमांडू के मौतीदेवी मंदिर में एक मूर्ति।

नेपाल में मंदिर की मूर्तियों को विषैले सिंदूर पाउडर (हिंदी में अबीर) से मुक्त रखने के उद्देश्य से, आरआई मंडल 3292 ने रोटारेक्टरों, इंटरेक्टर्स और स्थानीय सत संघ आश्रम के साथ मिलकर जागरूकता सत्रों और कार्यक्रमों की एक श्रृंखला आयोजित किया हैं। विषैले अबीर से होने वाले हानिकारक प्रभावों के बारे में भक्तों और मंदिर के अधिकारियों को बताया जाएगा।

पारंपरिक सिंदूर का निर्माण हल्दी और फिटकरी या चूने या अन्य जड़ी-बूटियों को मिलाकर किया जाता है। लेकिन हाल के दिनों में इसके निर्माण में लाल शीशा और मर्क्यूरिक सल्फाइड (सिनेबार) का उपयोग किया जाता है। ये दोनों विषाक्त पदार्थ हैं और त्वचा को गंभीर नुकसान पहुँचा सकते हैं, पर्यावरण और धरती बचाओ समिति, मंडल 3292 के अध्यक्ष उदय आर शर्मा समझाते हैं। वे कहते है कि नेपाल के मंदिरों में मूर्तियाँ अबीर से लदी होती हैं और भक्त इसे अपने माथे पर लगाते हैं।

रोटरी क्लब दिल्ली बाज़ार - काठमांडू स्थानीय व्यापारियों को उचित मूल्य पर मंदिरों में गैर विषैले अबीर की आपूर्ति करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए, मंदिर के अधिकारियों से एक उपयुक्त नीति अपनाने का आग्रह किया गया था ताकि मंदिर परिसर में विषैले सिंदूर पाउडर के उपयोग पर प्रतिबंध लगाया जा सके। ऐसा प्रतिबंध बुधनिलकंठ मंदिर में लागू किया गया है।

रोटरी क्लब किसानों को सिंदूर के पौधे उगाने के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध करा रहा हैं और उन्हें पौधों की आपूर्ति के लिए नर्सरी तैयार की जा रही हैं। इस पौधे की फली में एक रंग (लाल-नारंगी मसाले) जैसा होता है जो विषरहित लाल रंग का एजेंट होता है। ■

रोटरी बेघरों के बीच गमी की खुशी फैलाती है

वंचितों और लोगों, जिन्हें सर्दियों में ठंड से सुरक्षा की जरूरत होती है, रोटरी क्लब नागपुर विज़न, मंडल 3030, ने अपने विंटर प्रोजेक्ट - *रोटरी गर्मी की खुशी फैलाती है* - के अंतर्गत बेघर और अस्थायी आवासों में रह रहे लोगों के बीच 1,300 से अधिक नए कंबल वितरित किए।

रोटेरियन ने 200 घरों में कंबल वितरित करने के लिए शहर के सदर पुलिस स्टेशन की रात्रि गश्ती दल के साथ सहयोग किया। क्लब के अध्यक्ष राजीव बहल ने कहा, ''इससे हमारी आँखें नागपुर पुलिस के मानवीय चेहरे को देखती हैं, जिसे जनता आम तौर पर अनजान है।'' क्लब ने पुलिस स्टेशन को अपना प्रतिष्ठित नागपुर आइकन्स अवार्ड देकर सम्मानित किया।

एक अन्य उल्लेखनीय परियोजना *Soul to Sole* के अंतर्गत, रोटेरियन ने स्कूली बच्चों से इस्तेमाल किए हुए और नए जूते एकत्र कर उन्हें गर्मी के महीनों के दौरान वंचित परिवारों के बीच वितरित करते हैं। ■

क्लब द्वारा दिए गए ऊनी कंबल के साथ एक बुज़ुर्ग लाभार्थी।

सुविधाओं से वंचित बच्चों के लिए शिशु सदन बनाने में एक इंटरेक्टर मदद करता है

किरण ज़ेहरा

अप्रैल 2017 में, तन्वी रॉय और नेशनल पब्लिक स्कूल, बेंगलुरु, के 34 अन्य विद्यार्थियों ने एक ऑनलाइन क्राउडफंडिंग मंच, *फ्यूल अ ड्रीम* के माध्यम से 9 लाख से अधिक इकठ्ठा किये। पैसे तन्वी के माता-पिता - नवीन कुमार रॉय और प्रियंका पांडे को दिए गए जो रोटरी क्लब बैंगलोर लेकसाइड, मंडल 3190 के सदस्य है। क्लब ने इन पैसों का उपयोग नौकरों और दिहाड़ी मज़दूरी करने वालों के बच्चों की देखभाल करने के लिए शहर के इब्लूर इलाकें में एक शिशु सदन बनाने के लिए किया।

तन्वी, सन सिटी इंटरेक्ट क्लब की एक इंटरेक्टर, ने बहुत ही दिलचस्पी और लगन के साथ उन बच्चों की मुश्किलों पर शोध और अध्ययन किया जो उनके माता-पिता के बाहर कमाने जाने पर घर में अकेले रह जाते है... ''आमतौर पर एक से अधिक बच्चों के होने पर नौकरानियों को काम जारी रखने में मुश्किल होती है, क्योंकि वे बच्चों को घर में अकेले नहीं छोड़ सकती। कई मामलों में पति पियक्कड़ होते है और पत्नी की कमाई का सारा पैसा उड़ा देते है। कुछ अन्य मामलों में, निर्माण श्रमिकों के पास कार्यस्थल पर अपने बच्चों को ले जाने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं होता जो बेहद खतरनाक होता है। हमने छोटे बच्चों को खतरनाक निर्माण स्थलों पर पूरे समय खेलते देखा है,'' वह कहती है, एक शिशुसदन विशेष रूप से नौकरानियों

और दिहाड़ी मजदूरों के बच्चों की देखभाल करने वाला एक खेल स्कूल या डेकेयर है। हालाँकि मध्यम वर्गीय और उच्च मध्यम वर्गीय परिवारों के बच्चों के लिए शिशु सदन होते है, लेकिन मजदूर वर्ग के बच्चों के बारे में कोई नहीं सोचता... ''लोग अक्सर पर्यावरण या स्वास्थ्य के लिए काम करते है। नौकरानियां और दिहाड़ी मजदूर गरीब होते है और इस तरह के खेल स्कूल की स्थापना से इतनी विशिष्ट उम्र में उन नन्हें बच्चों के विकास में मदद मिलेगी,'' वह कहती है।

जयंता तिवारी, रोटरी क्लब बैंगलोर लेकसाइड के अध्यक्ष, ने उन्हें नवजीवन महिला प्रगति केंद्र नामक एक गैर सरकारी संगठन के बारे में बताया जो शहर भर में सुविधाओं से वंचित पृष्ठभूमि के बच्चों के लिए सात शिशु सदन चलाता है। इसके बाद तन्वी ने बड़े फण्ड जुटाने के लिए सबसे अच्छे तरीकों की खोज की। उन्होंने महसूस किया कि ''एक बेक सेल या नींबू पानी की बिक्री करने से हमें ज्यादा पैसे इकट्ठे करने में मदद नहीं मिलेगी।'' इसलिए, उन्होंने बड़ी राशी इकठ्ठा करने के सबसे अच्छे तरीकों पर शोध और अध्ययन शुरु किया। विभिन्न ऑनलाइन निधि संचयन करने वाले पोर्टलों से गुजरने के बाद, उन्होंने रंगनाथ थोटा, *फ्यूल अ ड्रीम* (FAD), एक ऑनलाइन निधि संचयन पोर्टल, के सीईओ के पास जाने का निश्चय किया जिन्होंने उन्हें सिखाया कि कैसे इस मंच का उपयोग धन इकठ्ठा करने में करते है।

सिद्धांत गुप्ता, एक विद्यार्थी जिन्होंने परियोजना को समन्वित करने में उनकी मदद की, की सहायता से, तन्वी और उनके 34 सहपाठियों ने इस पोर्टल के माध्यम से प्रत्येक ने लगभग ₹20,000 इकठ्ठा किये। उनमें से प्रत्येक ने ₹20,000 – ₹45,000 तक की राशी जुटाई, जिसमें तन्वी ने स्वयं ₹62,000 इकठ्ठा किये थे। तीन हफ़्तों के इस अभियान के अंत में 9.08 लाख की एक बड़ी राशी इकठ्ठा हो गई थी, जो उनकी अपेक्षित ₹5 लाख की राशी बहुत अधिक थी। कृतज्ञ तन्वी ने रोटेरियन टी वी श्रीनिवासन को ₹75,000 के उनके उदार दान के लिए विशेषरूप से धन्यवाद दिया।

इस राशी का उपयोग नवजीवन ट्रस्ट द्वारा इब्लूर में चलाए जा रहे आठवें शिशु सदन को स्थापित करने के लिए किया गया, जिसमें अगले दो वर्षों के लिए शिशु सदन को चलाने की लागत भी शामिल है।

जब निर्माण कार्य पूरा हो गया, तो तन्वी ने अपने इंटरैक्ट क्लब और कोंसल्ट कला अकादमी के साथ मिलकर सभी के लिए एक खुले स्वैच्छिक अवसर का आयोजन किया जिसमें बेल्लान्दूर के सभी उम्र के लोगों को शिशु सदन की दीवारों की पुताई करके उसे एक खेल स्कूल जैसे वातावरण का रूप देने के लिए आमंत्रित किया गया था। ''हमने सफलतापूर्वक उस स्थान को नया रूप दे दिया, वह मुस्कुराती है।''

यह शिशुसदन अब लगभग 60 बच्चों की माताओं की मदद करता है। तन्वी खुश है कि ये मजदूर अब शांति से अपने कार्यस्थल पर काम कर सकेंगे। बच्चों को बुनियादी शिक्षा, खेलने का समय, स्वस्थ भोजन, टीकाकरण और चिकित्सीय आवश्यकताएं प्रदान की जाती है।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

इंटरेक्टर तन्वी रॉय।

बीएसएफ़ जवानों की कलाइयों पर रोटेरियनों ने बांधी राखी

टीम रोटरी न्यूज़

रक्षाबंधन, या भाई की कलाई पर राखी बांधना हमेशा से भारत में एक पवित्र त्यौहार रहा है। देश के अन्य हिस्सों में चाहे इसे भाऊबीज या समा चकेवा कहा जाए, पर इस सुंदर रस्म के पीछे का मनोभाव एक सा ही है - भाई के लिए बहन के प्रेम और विश्वास के प्रतीक के रूप में बहन उसकी कलाई पर राखी - रंगबिरंगी डिज़ाइन वाली एक सजावटी डोर - बांधती है और भाई वादा करता है कि वह हमेशा उसकी रक्षा करेगा।

''यद्यपि यह पूर्व में केवल पारिवारिक उत्सव होता था जिसमें बाद में करीबी मित्रों के परिवारजन भी सम्मिलित होने लगे, इन दिनों चलन रोटेरियनों द्वारा आदिवासी क्षेत्रों के स्कूलों या अस्पताल में जाकर क्रमशः छात्रों और मरीजों की कलाइयों पर राखी बांधने का है। कभी-कभी स्वयंसेवकों का एक समूह जेल के कैदियों या वृद्धाश्रम

का दौरा करते है और उनके लिए मिठाइयाँ एवं तोहफे ले जाकर उनके साथ आनंद के कुछ घंटे व्यतीत करते है,'' रोटरी क्लब बुलसर, मंडल 3060, के पूर्व अध्यक्ष अक्षय वकील कहते है।

इस बार उनके क्लब ने अनूठे अंदाज में रक्षाबंधन मनाने का सोचा; 100 लोगों का एक समूह जिनमें रोटेरियन और उनके परिवारजन शामिल थे, ने गुजरात के कच्छ के रेगिस्तानी इलाकों में पाकिस्तान से लगी हमारी सीमा पर पहरा देने वाले बीएसएफ़ जवानों के साथ रक्षाबंधन मनाने के लिए बस एवं कार से लगभग 600 किमी की यात्रा की।

''एक विशेष अनुमति और बहुत सी जांच करने के बाद, हमें सीमा क्षेत्र का दौरा करने की इजाजत दी गई जहाँ एक अकेला जवान या कुछ जवान अक्सर उनकी चौकी पर होते है। वहाँ की अवस्थाएँ उनके लिए प्रतिकूल एवं अप्रिय है। हम हमारे साथ मिठाइयाँ एवं तोहफे ले गए थे और हमारे समूह की महिलाओं ने जवानों एवं अफसरों की कलाइयों पर राखी बांधी,'' रोटरी क्लब बुलसर के एक सदस्य, डीजीई अनीश शाह कहते है, जो डीजी पिंकी पटेल के साथ समूह में शामिल थे। दोनों के परिवारजन उनके साथ थे।

बीएसएफ़ जवानों के चेहरों पर प्रसन्नता देखने लायक थी। जवान वास्तव में खुश थे कि किसी ने 'धन्यवाद' कहने के लिए इस प्यारे से तरीके के बारे में सोचा।

DGE अनीश शाह

पूर्व संध्या में जवानों, अफसरों और उनके परिवारों के लिए एक संगीत एवं नृत्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। ''बीएसएफ़ जवानों के चेहरों पर प्रसन्नता देखने लायक थी। चूंकि यह पाकिस्तान से लगी सीमा का क्षेत्र है इसलिए यह अत्यंत प्रतिबंधित क्षेत्र है और जवान वास्तव में खुश थे कि किसी ने 'धन्यवाद' कहने के लिए इस प्यारे से तरीके के बारे में सोचा,'' वह आगे कहते है।

इस परियोजना हेतु उनके क्लब की सहायता करने के लिए रोटरी क्लब भुज का धन्यवाद करते हुए, वकील ने आगे कहा कि मनोरंजन कार्यक्रम भुज में टाउन हाल में आयोजित किया गया था और कच्छ के सांसद विनो चावड़ा के आलावा वरिष्ठ अफसर जैसे डीआईजी (बीएसएफ़), कलेक्टर रेमया मोहन ने हिस्सा लिया था। ''परियोजना के समापन पर हमने महसूस किया कि रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ाने के लिए हमने सही कार्यक्रम का आयोजन किया था,'' वह आगे कहते है। ■

ADVT

CELEBRATING HUMANITY
"Celebrating Humanity"
XXXV District Conference
Of R.I.Dist. 3160
On 8th, 9th & 10th February, 2019. At Chennai Convention Centre, Chennai
Guests & Speakers
K.R. Ravindran
Past R.I. President
Will Inaugurate the Conference
Gulam Vahanavaty
TRF Trustee
Will give address in Inaugural Session on 9th Feb
C. Basker
R.I. Director
Will give motivational Speech on 10th Feb
PDG. M.N. Subramanian
R.I. President's Representative
Sister Beena Behan B.K.
Will Give address in inaugural session
"Experiencing Happyness"
Swami Prathameshananda
Chinmaya Mission
Speaks on "Ethics in daily life"
Jaya Prakash Narayan
Founder, "Lok Satta"
Speaks on "Moving India"
R. Gopinath
CEO and MD, Gopast Centre for Learning,
"The Human Potential"
Sridhar K.V
Founder & Chief Creative Officer, Hypaer Collective
"Branding NGO"
Sneha
Film Actress,
Will be the Special Guest
The Rotary Foundation Session
Jayashree Jayaraman
R I South Asia Office
Corporate Social Responsibility
Ravi Shankar Dakoju
100 Crores Donor to TRF
"Think Big" - Talk Show
PDG. Sam Movva
RI Dist. 3020
Foundation for the Future
PDG. B. Surendra & Mrs. Mydhili
Conference Chairman
PDG. K. Muni Girish & Mrs. Anitha
District Governor & First Lady

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी द्वारा फांक तालु शिविर का आयोजन

वी मुत्तुकुमारण

फटे होंठ और तालु वाले मरीज, जिसमें ऐसी विकृति वाले नवजात शिशुओं के माता-पिता भी शामिल हैं, सभी रोटरी क्लब ऑफ कोयम्बटूर मिलेनियम, मंडल 3201 द्वारा प्रति वर्ष दिसंबर माह के पहले शनिवार को आयोजित किए जाने वाले एक दिवसीय विशेष शिविर में सुधारात्मक सर्जरी की प्रतीक्षा करते हैं। स्थल, माइकल कैथेड्रल शहर के बीचों-बीच, मरीजों, डॉक्टरों और चिकित्सा उपकरणों से गुलजार हो जाएगा, और यह उपासना स्थल एक दिन के लिए अस्पताल में परिवर्तित हो जाएगा।

परियोजना के अध्यक्ष डब्ल्यू पॉल विलियम, जिन्होंने 2011 में प्रेसिडेंट के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान फटे होंठ और तालु के लिए सर्जरी शिविर लगाने की शुरुआत की थी, परियोजना के बारे में बताते हुए कहते हैं: ''मैं अनेकों रोटरी सम्मेलनों और कार्यक्रमों में भाग लेता था। इस तरह मुझे फटे होंठ और तालु की विकृति से ग्रस्त लोगों की मदद करने की इच्छा जागृत हुई और विनायक मिशन अस्पताल, सलेम के डॉ। एस प्रभाकरन ने विकृत चेहरे वाले पैदा हुए बच्चों के लिए एक विशेष शिविर आयोजित करने का विचार दिया,'' वह याद करते हुए कहते हैं। पहले शिविर में 67 बच्चों की जाँच की गई और चरणबद्ध तरीके से उनका सफल ऑपरेशन किया गया।

यूएस-आधारित एनजीओ स्माइल ट्रेन सम्यक जांचोपरांत प्रति बच्चे एक निश्चित नाममात्र की राशि प्रदान करती है। विलियम कहते है, ''रोटरी कैंप में चिन्हित गए बच्चों की सर्जरी के लिए अस्पताल को राशि दी जाती है। हमारे लिए, कार्य 14 नवंबर को, शिविर के आयोजन से 15 दिन पहले शुरूहोता है।'' एक टैक्सी किराए पर लेते हैं, और अपने रोटरेक्टरों के साथ कोयम्बटूर के आसपास के 30 - 35 गाँवों में 50,000 लीफलेट बाँटते हैं। प्रत्येक दिन तीन स्वयंसेवकों को ₹500 का प्रोत्साहन-भत्ता दिया जाता है।फ़्फ़ क्लब मरीजों और उनकी देखभाल के लिए भोजन और परिवहन पर लगभग ₹1 लाख खर्च करता है।

एक बच्चे का जाँच अपचार।

वहाँ फटे होंठ और तालु वाले लोगों को बहुत सामाजिक लांछनों का सामना करना पड़ता है। ''इस विकृति के कारण बच्चों और बडों को सामाजिक बदनामी से पीडति देखना दयनीय है। सामाजिक आलोचनाओं के कारण परिवार वाले ऐसी विकृतियों से ग्रस्ति सदस्यों को छिपाने की कोशिश करते हैं।''

> पिछले वर्ष दिसंबर माह में शिविर में 32 बच्चों की जाँच की गई, जिनमें से 26 बच्चों को शहर के गंगा अस्पताल में ऑपरेशन के लिए चुना गया। स्थापना के बाद से, शिविर ने 370 से अधिक मरीजों का सफलतापूर्वक उपचार किया है।

वह इस तरह की विकृति के साथ पैदा होने वाली संतानों के लिए मुख्य कारण रक्त संबंधों के बीच विवाह होना मानते है। ''नवजात शिशु माँ का दूध नहीं पी सकते है क्योंकि यह छेद के माध्यम से उनके नाक से बाहर निकल जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों से लेकर 60 साल के बुजुर्गों में फटे होंठ और तालु की समस्या सामान्य है, लेकिन इसे सर्जरी द्वारा आसानी से ठीक किया जा सकता है।''

पिछले वर्ष दिसंबर माह में शिविर में 32 बच्चों की जाँच की गई, जिनमें से 26 बच्चों को शहर के गंगा अस्पताल में ऑपरेशन के लिए चुना गया। स्थापना के बाद से, शिविर ने 370 से अधिक मरीजों का सफलतापूर्वक उपचार किया है। सर्जरी के बाद मरीजों को स्पीच थेरेपी उपलब्ध कराया जाता है।

विलियम, रूटस इंडस्ट्रीज में कार्यरत्त बालसुब्रमण्यम का हवाला देते है, जो बहुत प्रसन्न हुए जब उनके बच्चे का ऐसे ही एक शिविर में सफल उपचार किया गया। ''तब से, वह हमारे अभियानों का हिस्सा है और अनेक मरीजों को शिविर में लेकर आए है।'' ■

आदिवासी ग्रामीणों के लिए स्वास्थ्य शिविर और हैप्पी स्कूल

किरण ज़ेहरा

जबलपुर से 30 किमी दूर स्थित एक आदिवासी गाँव नवरगवां के शासकीय माध्यमिक स्कूल के कुछ विद्यार्थियों ने ''कभी जूते नहीं पहने। इनके परिवार इतने गरीब है कि वे इन बच्चों के लिए नए कपड़े नहीं खरीद सकते। वे उनकी यूनिफ़ॉर्म को विशेष मौकों पर पहनते है। यदि वह फट जाती है या तार-तार हो जाती है, तो वे पैबंद लगाकर उन्हें पहनना जारी रखते है,'' स्कूल के प्रधानाचार्य गिरिश चन्द्र मौर्य कहते है। पिछले वर्ष जब रोटरी क्लब जबलपुर, मंडल 3261, ने गाँव का दौरा किया, तो बच्चों को फटी हुई यूनिफ़ॉर्म पहने, टूटे-फूटे फर्श पर बैठे एवं बिना किसी अध्ययन सामग्री के देखकर रोटेरियन उदास हुए। ''परंतु फिर भी वे स्कूल आए,'' क्लब की अध्यक्ष रचना त्रिवेदी ने कहा। यह स्कूल तीन आदिवासी गाँवों के विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करता है।

इन विद्यार्थियों की ज़िंदगियों को बेहतर बनाने एवं अध्ययन परिणामों को बढ़ाने के लिए क्लब ने इन स्कूलों को हैप्पी स्कूलों में परिवर्तित करने का निश्चय किया। सदस्यों ने अच्छी तरह सुसज्जित कक्षाएँ बनाने, शौचालय खंडों को सुधारने, हाथों की धुलाई का एक स्टेशन एवं एक आरओ प्लांट स्थापित करने पर काम किया। स्कूल की दीवारों को TEACH एवं WinS जैसी रोटरी थीमों से रंगा गया। ''एक कक्षा का इस्तेमाल लकड़ियाँ इकट्ठा करने के लिए किया जाता था और वह बहुत ही बुरी हालत में थी। हमने उसे एक पुस्तकालय में परिवर्तित कर दिया,'' रचना ने कहा। परियोजना की लागत ₹2 लाख आई।

क्लब से ''नए जूते एवं मोज़े मिलने पर, कक्षा 3 के नन्हें बद्रीनाथ ने प्रधानाचार्य से पूछा 'इसका क्या करना है?' मैं उसकी मासूमियत पर केवल मुस्कुरा सकता था क्योंकि उसने अपनी ज़िंदगी में कभी मोज़े नहीं देखे थे। मैं बैठा और उसे मोज़े पहनाए और वह मुस्कुराया। मैं वो मुस्कान कभी नहीं भूलूँगा। इन नन्हें बच्चों की ज़िंदगियों को बेहतर बनाने के लिए हम रोटरी का धन्यवाद नहीं कर सकते है।''

भारतीय सूचना सेवाओं, फील्ड आउटरीच ब्यूरो, और सूचना एवं

बच्चों को स्कूल बेग और जुते वितरित किए गए।

नए जूते एवं मोज़े मिलने पर, कक्षा 3 के नन्हें बद्रीनाथ ने प्रधानाचार्य से पूछा 'इसका क्या करना है?' में उसकी मासूमियत पर केवल मुस्कुरा सकता था क्योंकि उसने अपनी ज़िंदगी में कभी मोज़े नहीं देखे थे।

आनंदम नामक प्रदर्शनी में एक स्टॉल।

प्रसारण मंत्रालय के साथ साहचर्य में, क्षेत्र के तीन आदिवासी गाँवों में एक चिकित्सीय शिविर आयोजित किया गया। नवरगवां गाँव में आयोजित हुये इस चिकित्सीय शिविर में दो अन्य गाँवों – डूंगरगवां और कुलमुहि – के 800 लोगों की जांच की गई। चूंकि हम पहले ही हैप्पी स्कूल पर काम कर चुके थे, नवरगवां के सरपंच ने शिविर में आने वाले ग्रामीणों के लिए खाना पकाने एवं परोसने की पेशकश की, रचना ने कहा। शिविर का उद्घाटन न्यायाधीश संजय द्विवेदी ने किया था। दंत, सामान्य दवाई, हृदय, जठरान्त्र, कर्करोग, हड्डी, स्त्रीरोग एवं नेत्र संबंधी समस्याओं के लिए मरीजों का इलाज़ किया गया।

एक स्वास्थ्य शिविर।

स्थानीय आँगनवाड़ी कार्य-कर्ताओं की मदद से क्लब ने मासिक धर्म स्वच्छता पर जागरूकता पैदा की। उन्होंने गाँव की महिलाओं को कपड़े के पैड बनाना सिखाया और मूत्र पथ के संक्रमण से बचने के लिए सर्वोत्तम आदतों को अपनाने पर बात की। एक गैर सरकारी संगठन रचना संस्था द्वारा स्थानीय भाषा में किए गए एक नुक्कड़ नाटक ने घर के अंदर एवं आसपास की सफाई और व्यक्तिगत स्वच्छता की महत्ता समझाई। आनंदम, एक विशेष मंच का आयोजन किया गया जहाँ रोटेरियनों ने काउंटर पर ग्रामीणों की जरूरतों के अनुसार उनके द्वारा चुने जाने के लिए कपड़े, सामान और बर्तन प्रदर्शित किए।

एल गुनाशेकरण द्वारा रुपांकन

रोटरी शांतिनिर्माता रोहिंग्या मुस्लिम शरणार्थियों की मदद करती है

निक्की कालियो

अगस्त 2017 से, लगभग एक मिलियन रोहिंग्या मुसलमान शरणार्थी म्यांमार के रखाइन राज्य में हिंसा से भागकर बांग्लादेश के कॉक्स बाज़ार क्षेत्र में भरे हुये है। महिलाओं और बच्चों को विशाल शरणार्थी शिविरों में कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें पर्याप्त आश्रयस्थल, स्वास्थ्य और शिक्षा स्त्रोतों की कमी, और यौन हिंसा का बढ़ता खतरा भी शामिल है।

सकुन गजुरेल ड्यूक विश्वविद्यालय में रोटरी शांति केंद्र पर और चैपल हिल में नार्थ कैरोलिना के विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय विकास नीति की पढ़ाई करने के पहले संयुक्त राज्य एजेंसियों के साथ इटली और उनकी जन्मस्थली नेपाल में काम करती थी। रोटरी शांति निर्माण के तहत, सकुन ने 2018 की गर्मियां कॉक्स बाज़ार में यूएन वीमेन नामक एक संस्था के साथ काम करके बिताई थी जो शरणार्थी शिविरों में महिलाओं को प्रत्यक्ष सहायता प्रदान करती है।

महिलाऐं और लड़कियाँ हिंसा की चपेट में ज्यादा आती है। संकट की परिस्थिति में, 70 प्रतिशत से भी अधिक महिलाओं ने लिंग आधारित हिंसा का अनुभव किया है।

कॉक्स बाज़ार में सहायता प्राप्त करने में सबसे बढ़ी चुनौती क्या है?

एक वर्ष से भी कम समय में लगभग 900,000 शरणार्थियों ने सीमाओं को पार किया है। मॉनसून के समय, हालात और भी बदतर हो गए। बांस के ढांचे और तिरपाल से बने तम्बू भारी बारिश या हल्का भूस्खलन नहीं झेल पाते। बारिश के बाद हर हफ्ते कई हज़ार घर नष्ट हो गए।

मानवीय एजेंसियों के लिए, ख़राब सड़कों के कारण हर एक व्यक्ति तक पहुंच पाना एक अन्य चुनौती है। शरणार्थियों की भारी मात्रा प्रभावी समर्थन को जटिल बनाती है।

विशेषरूप से महिलाओं और लड़कियों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है?

महिलाऐं और लड़कियाँ हिंसा की चपेट में ज्यादा आती है। संकट की परिस्थिति में, 70 प्रतिशत से भी अधिक महिलाओं ने लिंग आधारित हिंसा का अनुभव किया है। महिलाऐं अक्सर रात में या मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता सुविधाओं तक पहुँचने में होने वाली कठिनाइयों के बारे में बताती है। वे उच्च खतरों के साथ-साथ बढ़ते हुए देखभाल संबंधी कार्यों का सामना करती है जैसे कि अपने परिवारों को भोजन और पानी प्रदान करना और बीमारों की देखभाल करना।

सहायता प्रदान करने के तरीकों को परंपरा और संस्कृति कैसे प्रभावित करते है?

रोहिंग्या मुस्लिम आबादी में लिंग आधारित भेदभाव आम बात है? यह पर्दा प्रथा, या महिला के पति के अलावा किसी और मर्द द्वारा उसे देखे जाने से रोकने की प्रथा से नजदीक से जुड़ा है। महिलाओं और लड़कियों को घर में या उनके परिवार के साथ रखा जाता है, जबकि आदमी और लड़के सार्वजनिक क्षेत्र में अधिक मौजूद रहते है।

बहुउद्देशीय महिला केन्द्रों के माध्यम से, यूएन वुमेन इन महिलाओं को व्यस्त रखती है और उन्हें सशक्त बनाती है। महिलाऐं और लड़कियाँ कॉक्स बाज़ार में मौजूद केंद्र की तरह किसी भी केंद्र में जाकर शिविर में मिलने वाली सेवाओं और अवसरों के बारे में जानकारी ले सकती है। लगभग

चित्रण: विक्टर मिलर गॉसा।

शकुन गाडुल।

20 महिलाऐं कॉक्स बाज़ार के केंद्र में आउटरीच कार्यकर्ता के रूप में सेवा देती है। ये रोहिंग्या महिलाएं है जो अन्य महिलाओं से बात करती है और उनके मुद्दों और चुनौतियों को केंद्र के साथ-साथ शिविर अधिकारियों की बैठकों में भी सामने रखती है।

किस प्रकार की सहायता की सबसे अधिक आवश्यकता होती है?

शिक्षा सबसे बड़ी जरूरतों में से एक है। कॉक्स बाज़ार में शिक्षा साझेदारों ने दो घंटे के पाठों के लिए तीन शिफ्ट प्रदान करने वाले शिक्षण केंद्र स्थापित किए है। हालाँकि, यह पर्याप्त नहीं है। महिलाएं और पुरुष अक्सर नए कौशल सीखने की इच्छा व्यक्त करते है।

संयुक्त राष्ट्र पहले ही घोषणा कर चुका है कि रोहिंग्या शरणार्थी संकट एक दीर्घकालिक मुद्दा होगा। इतिहास से पता चलता है कि एक बार शरणार्थी संकट दीर्घकालिक हो जाता है, तो शरणार्थी अक्सर बंदोबस्त शिविरों में दशकों बिताते है। इस बात को सुनिश्चित करने के लिए कि पूरी पीढ़ी शिक्षा या बेहतर ज़िंदगी जीने के अवसरों के बिना समाप्त ना हो जाए, एक दीर्घकालिक समाधान की आवश्यकता है।

© The Rotarian

आपके गवर्नरों से मिलें

जयश्री

वैश्विक अनुदान परियोजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए उत्साहित

अरुण कुमार जैन, जीवन बीमा, रोटरी क्लब हथरास हेरिटेज, रो ई मंडल 3110

जब वह युवा थे तब उन्होंने एक लियो के रूप में शुरुआत की थी और 1994 में एक रोटेरियन बने।

अरुण कुमार जैन ने वैश्विक अनुदान की मदद से की जा रही चार परियोजनाओं का विवरण दिया - मथुरा में एक डायलिसिस केंद्र, बरेली में विकलांगों के एक स्कूल के लिए कंप्यूटर, हथरास में वेंटीलेटर से सुसज्जित एक एम्बुलेंस और चार हैप्पी स्कूलों को बनाना और उन्हें फर्नीचर, शौचालय खण्डों, हाथों की धुलाई के स्टेशनों और पुस्तकालय से सुसज्जित करना। इसके अलावा मंडल के सभी 21 क्लबों में से प्रत्येक को मंडल अनुदानों में से 1,000 डॉलर दिए गए ताकि ''सदस्यों को उनके समुदाय में कुछ सार्थक परियोजनाएं करने हेतु प्रेरित किया जा सके। यह बहुत सफल रहा क्योंकि क्लबों ने काफी सारी गतिविधियाँ की,'' वह कहते है।

वह महिलाओं की संख्या बढ़ाने को लेकर काफी उत्साही है जो, वह कहते है, कुल सदस्यता का केवल छह प्रतिशत थी। उनकी पत्नी सीमा रोटरी क्लब हथरास आस्था की एक सदस्य है, जो एक अखिल महिला क्लब है। ''वह एक बहुत ही अच्छा सहारा है और यहाँ तक कि वह क्लबों द्वारा कार्यान्वयन करने हेतु परियोजनाओं का निर्धारण भी करती है।'' उनका लक्ष्य मौजूदा 3,938 रोटेरियनों में 400 नए सदस्यों को जोड़ने का और उन क्षेत्रों में नए क्लबों की स्थापना करने का है जिनका अभी तक प्रतिनिधित्व नहीं किया गया है।

वह मंडल में रोटरेक्ट गतिविधि को कारगर बनाना चाहते है। 52 रोटरेक्ट क्लबों में से केवल 6 क्लब ही सक्रिय है, और उन्होंने 12 नए क्लबों को अधिकृत किया है।

टीआरएफ योगदान के लिए उनका लक्ष्य 450,000 डॉलर का है। ''हमने अभी तक 100,000 डॉलर इकठ्ठा कर लिए है लेकिन मैं लक्ष्य के पूरा होने को लेकर आश्वस्त हूँ क्योंकि हमारे पास 4 या 5 सीएसआर परियोजनाएं है,'' जैन कहते है।

वह 40 रोटरेक्ट क्लबों की स्थापना करना चाहते हैं

अभिनन्दन शेट्टी

होटल व्यवसायी, रोटरी क्लब कुंदापुरा साउथ, रो ई मंडल 3182

वह गर्व के साथ कहते है कि वह उसी क्लब से ताल्लुक रखते है जिसमें उनके पिता, दादा एवं नाना सदस्य थे। अभिनन्दन शेट्टी 2002 में एक DRR थे और वह 2005 में रोटरी से जुड़े। उनके दिल के करीब रहे अंतर्राष्ट्रीय RYLA के लिए वह एक सलाहकार का पदभार संभालते है।

वह गुणवान रोटेरियनों को शामिल करने के इच्छुक है और उनका मानना है कि रोटरेक्टर अच्छे रोटेरियन बनेंगे क्योंकि वह रोटरी और उसके सिद्धांतों से अच्छी तरह वाकिफ है। इसलिए वह वर्तमान में रोटरेक्टरों को रोटेरियनों में परिवर्तित करने पर ध्यान केन्द्रित कर रहे है। दो साल पहले द्विभाजित होने के बाद अब मंडल के पास केवल दो रोटरेक्ट क्लब है। ''मैं 40 क्लब स्थापित करना चाहता हूँ और अभी 25 रोटरेक्ट क्लबों के लिए चार्टर तैयार है,'' शेट्टी कहते है।

वर्ष के लिए उनकी चिन्हक परियोजना युवाओं के मध्य सड़क सुरक्षा जागरूकता पैदा करने की है और संदेश को प्रसारित करने के लिए नुक्कड़ नाटक और रैलीयां करने हेतु रोटरेक्टरों को शामिल किया जा रहा है।

मणिपाल में एक स्किन बैंक स्थापित करना और ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूलों को बुनियादी ढांचा प्रदान करना उनकी अन्य योजनाएं है। ''मेरे पास इसके लिए तीन वैश्विक अनुदान अनुमोदन है,'' वह कहते है। उन्होंने मंडल के प्रत्येक 85 क्लबों को स्कूली बच्चों में हाथ धोने की आदत को बढ़ावा देने के लिए तीन हाथों की धुलाई के स्टेशन दिए है।

उनका ध्यान साक्षरता पर है

भबानी प्रसाद चौधरी,
यांत्रिकी कांट्रेक्टर, रोटरी क्लब भुबनेश्वर एक्सीलेंस, रो ई मंडल 3262

रोटेरियनों के एक परिवार से होने के नाते, वह 2004 में रोटरी से जुड़े। ''मैं अपने समाज की साक्षरता दर को बढ़ाना चाहता हूँ। एक साक्षर व्यक्ति कभी गरीबी नहीं देखेगा और वह अपना और अपने परिवेश का अच्छी तरह ध्यान रखना जानता है,'' भबानी प्रसाद चौधरी कहते है। शहर के एक अस्पताल का दौरा करने के बाद वह रोटरी से अच्छी तरह से जुड़ने हेतु प्रेरित हुए। ''एक हरित रोटेरियन होने के नाते मैंने मरीजों को फल और पौष्टिक भोजन वितरित करने में अन्य सदस्यों का साथ दिया, और उनके दर्द भरे चेहरे पर कृतज्ञता की अभिव्यक्ति ने मुझे इस बात का एहसास दिलाया कि रोटरी लोगों की जिंदगियों के लिए कितना कुछ कर सकती है।''

उनकी सभी परियोजनाएं साक्षरता के इर्द-गिर्द घूमती है और उन्हें ख़ुशी है कि उनके मंडल में वयस्क निरक्षरों को पढ़ाने के लिए बहुत सारे स्वाभिमान केंद्र स्थापित किये गए है। उनका ऐसे 1,000 लोगों को भर्ती करने का लक्ष्य है और क्लबों को इस कार्यक्रम के लिए पहले ही 680 वयस्क मिल चुके है। वह चाहते है कि उनके क्लब स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की शिक्षा को प्रायोजित करने हेतु आशा किरण कार्यक्रम पर ध्यान केन्द्रित करें।

डीजी ने सभी 91 क्लबों के लिए उनके क्षेत्र के एक स्कूल में एक ई-लर्निंग केंद्र स्थापित करने हेतु मंडल अनुदानों को अलग रख दिया है। ''हमारे पास स्कूली स्वच्छता और स्वास्थ्य व्यवस्था को बढ़ाने हेतु WinS तत्वों को लागू करने के लिए दो वैश्विक अनुदान है,'' वह कहते है।

टीआरएफ के लिए 500,000 डॉलर के लक्ष्य के लिए, चौधरी क्लबों का 100 प्रतिशत योगदान हासिल करने के लिए अनुयाचन कर रहे है। पिछले पांच वर्षों में देने के लिए मंडल ने उर्ध्वमुखी प्रवृत्ति दिखाई है, वह कहते है।

उनका लक्ष्य सदस्यता में 10 प्रतिशत की वृद्धि करने का है और वह अधिक रोटारेक्ट क्लबों को अधिकृत करने पर ज़ोर दे रहे है।

उनकी पत्नी प्रतिभा भी उसी क्लब की सदस्य है।

रोटरी में दिलचस्पी जगाना उनकी प्राथमिकता है

दीपक जैन, शिक्षाविद, रोटरी क्लब शामली, रो ई मंडल 3100

दो वर्ष के अन्तराल के बाद मंडल पुनर्जीवित हुआ है और दीपक जैन विभिन्न रोटरी पहलुओं में भाग लेने के लिए अपनी टीम को तैयार करने में व्यस्त है। ''रोटरी जागरूकता की कमी सभी मुद्दों का मुख्य कारण है। लोगों को एक रोटेरियन होने पर गर्व होना चाहिए,'' वह कहते है।

अपने पेशे के प्रति समर्पित होने के नाते उन्होंने क्लबों को मंडल के स्कूलों को फर्नीचर, कंप्यूटर और ई-शिक्षण सुविधाएँ प्रदान करके अध्ययन वातावरण में सुधार करने हेतु प्रेरित किया है। वर्तमान में उनका ध्यान कम से कम 100 स्कूलों में थळपड तत्वों को स्थापित करने पर है।

सदस्यता में 20 प्रतिशत की वृद्धि के लक्ष्य के साथ, वह अभी तक 10 प्रतिशत सदस्यों को जोड़कर लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर है। ''मैं महिला रोटेरियनों की टीम में 100 तक की वृद्धि करने को लेकर उत्साहित हूँ, जो फ़िलहाल 69 है। लेकिन गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं किया जाएगा।'' वह रोटरेक्ट क्लबों की संख्या में भी वृद्धि करने के इच्छुक है, जो अभी 20 है, और वह इस बात को साझा करते हुए उत्साहित है कि 12 वर्षों के बाद मंडल RYLA का आयोजन कर रहा है।

टीआरएफ योगदान के लिए, डीजी थोड़े संशयात्मक है, क्योंकि, ''उन्हें रोटेरियनों को देने हेतु प्रेरित करना है। मंडल के पास 50 पॉल हेरिस सदस्य है।''

जैन 1993 में रोटरी से जुड़े और एक रोटेरियन बनकर खुश है, ''क्योंकि इसने मुझे सबकुछ दिया है - दोस्त, समाज की सेवा हेतु बहुत सारी गतिविधियाँ और अवसर। इसने बेहतर के लिए मेरी ज़िंदगी को परिवर्तित किया है।'' उनकी पत्नी गीता भी इसी क्लब की सदस्य है।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

Rotary News Subscription Remittances

You can pay the
Rotary News / Rotary Samachar
subscription online

Our Bank details:

Bank : HDFC Bank
SB Account
Branch : Egmore, Chennai
A/c Name : Rotary News Trust
A/c No. : 50100213133460
IFSC Code : HDFC0003820

E mail us following details:

Name of Club

President/Secretary's name

Amount/Date of transfer/UTR Number

For physical payment by cheque or cash in bank, write **Club Name only** without prefixing "Rotary club of". Eg. Rotary Club of Delhi Central should be written: Delhi Central.

RI Exchange Rate - February 2019

$1 = ₹71

Rotary at a glance

Rotarians	: 1,209,792
Clubs	: 35,729
Districts	: 538
*Rotaractors	: 153,154
Club	: 9,641
*Interactors	: 544,341
Clubs	: 23,667
RCC	: 10,165

*Estimated

As of January 17, 2019

Membership Summary

As on January 2, 2019

RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians	Rotaract Clubs	Interact Clubs	RCC
2981	114	4,699	209	40	232	198
2982	68	3,047	151	64	113	53
3000	128	5,326	503	231	679	199
3011	81	3,446	723	47	115	25
3012	89	3,590	789	51	130	56
3020	76	4,009	223	54	466	349
3030	91	4,880	598	75	314	165
3040	95	2,066	220	33	124	142
3053	68	3,042	542	9	56	96
3054	127	6,166	1,065	77	322	474
3060	101	4,256	548	59	131	141
3070	103	3,073	310	45	164	58
3080	79	3,363	263	72	224	109
3090	76	1,950	52	35	37	122
3100	77	1,915	112	10	77	146
3110	115	3,797	326	25	52	104
3120	75	3,196	386	31	63	52
3131	130	5,372	1,175	90	308	90
3132	96	3,828	392	38	214	151
3141	95	5,562	1,321	109	265	84
3142	94	3,435	639	72	206	65
3150	95	3,505	343	60	242	109
3160	72	2,470	138	22	48	81
3170	124	5,633	609	56	346	164
3181	76	3,402	298	48	252	110
3182	84	3,322	254	24	278	95
3190	127	5,002	679	122	367	52
3201	142	5,340	345	92	134	49
3202	130	5,015	252	74	441	47
3211	139	4,393	279	6	91	127
3212	99	4,053	309	92	283	142
3231	78	3,212	254	48	216	293
3232	113	4,638	707	111	339	82
3240	88	3,077	390	43	160	166
3250	101	3,910	690	58	216	176
3261	73	2,645	353	6	104	43
3262	90	3,379	416	37	75	75
3291	145	3,675	710	82	135	600
India Total	**3,754**	**146,689**	**17,573**	**2,248**	**8,019**	**5,290**
3220	71	1,999	287	75	204	73
3271	84	1,434	242	51	19	15
3272	145	2,395	359	49	38	38
3281	203	5,587	811	220	94	188
3282	147	4,201	481	112	48	42
3292	117	4,497	676	121	127	113
S Asia Total	**4,521**	**166,802**	**20,429**	**2,876**	**8,549**	**5,759**

Source: RI South Asia Office

Rotary
PEOPLE OF ACTION

नाशिक की महिलाओं को समस्त अधिकार

वी मुत्तुकुमारण

वर्ष 2002 में स्थापित, रोटरी क्लब नासिक ग्रेपसिटी रो ई मंडल 3030 में पहली बार महिला रोटेरियन कॉन्फ्रेंस की मेजबानी करने वाला प्रमुख क्लब था। ठीक ही तो है, क्योंकि इसकी कुल सदस्यता में महिलाओं की हिस्सेदारी 60 प्रतिशत है, जो मौजूदा 49 से बढ़कर जून 2019 तक कम से कम 55 सदस्यों तक पहुँच जाएगी। नासिक क्लबों के लिए एन्क्लेव के अध्यक्ष नरेश शाह कहते है, ''हमने आदिवासी महिलाओं को माइक्रो-क्रेडिट प्रदान करने जैसी अनेकों महिला-उन्मुख परियोजनाएँ शुरू की हैं, जिनसे प्रति वर्ष 50-60 महिलाएँ लाभान्वित होती हैं। वर्ष 2008 के बाद से छोटे उद्यमियों के मध्य लगभग ₹1.25 करोड़ वितरित किया गया है। स्वास्थ्य देखभाल में आदिवासी महिलाओं को कम हीमोग्लोबिन की जाँच की गई और उन्हें मुफ्त दवाइयाँ दी गई।'' वह रोटरी क्लब नासिक ग्रेपसिटी के चार्टर अध्यक्ष भी थे। साक्षरता के विषय पर, पिछले पाँच वर्षों के दौरान मंडल परिषदों के स्कूलों में 20-30 ई-लर्निंग किट वितरित किए गए।

मैमोग्राफी बस के सामने खड़े, रोटरी क्लब नासिक के अन्य रोटेरियन।

मैमोग्राफी बसें

जबकि दो मैमोग्राफी और सर्वाइकल कैंसर का पता लगाने वाली बसें (वैश्विक अनुदान परियोजना द्वारा वित-पोषित) विगत तीन वर्षों से कार्यरत्त हैं, तीसरा ऐसा वाहन जिसकी कीमत ₹1.5 करोड़ है और जिसे रोटरी क्लब अमरावती मिडटाउन द्वारा प्रायोजित किया गया था, ने छह महीने पहले कार्य करना शुरू किया। ''विशेष रूप से सुसज्जित बसें, जिसमें एक डॉक्टर और एक प्रबंधक सहित छह-सदस्यीय चालक दल होते हैं, ने नासिक और उसके आसपास के क्षेत्रों में 72,000 से अधिक महिलाओं की जाँच की होगी,'' शाह आगे कहते हैं।

ऐसा देखा गया है कि कोटुम्बी और वाघचौडा पदस (आदिवासी बस्तियों) में आदिवासी लोग त्वचा रोगों से पीड़ित पाए गए थे, ''इसलिए, उन्हें बुनियादी स्वच्छता और सफाई के महत्त्व की विधि सिखाई गई। साथ ही, इन महिलाओं को नीम की पत्तियों, एलोवेरा और हल्दी का इस्तेमाल कर साबुन बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है,'' क्लब के अध्यक्ष दुर्गा साली कहती है।

शीघ्र ही एक व्यावसायिक केंद्र निम्न-आय वाले परिवारों की महिलाओं को प्लंबिंग, घरेलू उपकरणों की मरम्मत करने और ड्राइविंग जैसा कौशल सिखाएगा। क्लब किशोर सुधरालय नाम क एक किशोर गृह के जीर्णोद्धार करने के लिए प्रयत्नशील है।

क्लब की सेवा निदेशक संध्या जैन ने मलिन बस्तियों में लडकियों को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण देने के लिए शिविर आयोजित करने का प्रस्ताव पेश किया है।

रोटरेक्टरों को प्रखर बनाना

अभी तक, क्लब ने एक रोटरेक्टरों क्लब और तीन इंटरेक्ट क्लब को प्रायोजित किया हैं। पुणे से 70 किलोमीटर दूर रास्ते में संगमनेर में एक अंतर-मंडल RYLA, का आयोजन किया गया, जिसमें 57 किशोरों ने हिस्सा लिया। मार्च 2019 में बहु-मंडलीय रोटरेक्टर सम्मेलन आयोजित करने की योजना बनाई गई है।

DGND रमेश मेहर कहते हैं, 12 वर्षों में एक बार आयोजित होने वाले कुंभ मेले के दौरान, नासिक के अन्य क्लबों के साथ मिलकर, ''हम मेडिकल कैंप लगाते हैं, गुमशुदा लोगों को पुलिस की सहायता उपलब्ध कराते है, और यात्रियों के मध्य भोजन और जलपान के पैकेट वितरित करते हैं।'' इस शुभ माह के दौरान त्र्यंबकेश्वर में गोदावरी नदी में एक पवित्र डुबकी लगाने लिए शहर देश भर से लगभग 12 लाख भक्त आते है।

क्लब ने इस वर्ष टीआरएफ में 6,000 डॉलर देने का लक्ष्य रखा है और अपनी स्थापना के समय से 75,000 डॉलर का योगदान दिया है। अब तक, इसके पास चार प्रमुख दाता हैं। ■

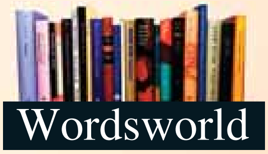

Truth is beauty, beauty truth

Sandhya Rao

The best poetry reaches into the deep recesses of the heart and stimulates the mind in a myriad ways.

Haq achchha. Par uske liye koi aur marey toh aur achchha. The packed hall burst into laughter when chief guest Arun Shourie recited these lines by Pakistani poet Faiz Ahmed Faiz which declare that it's good to have rights but if someone else dies upholding them, it's even better! This was at the inauguration of the just-concluded *Lit For Life* in Chennai, promoted as the sharpest literary festival in the country, and Shourie was making an impassioned plea for the freedom of speech and creative expression, urging that we stand together and speak up when fundamental rights are threatened or violated. Faiz's lines instantly resonated, proving yet again that there's nothing like poetry to reach directly to the heart.

The discovery of a collection of Subramania Bharati's poems simultaneously published in Tamil and English goaded me to climb a short ladder at home to reach up to two shelves of poetry coated with the dust of years. Sneezing and snorting I brought the books down and embarked on a nostalgic trip. Swirling around in my head were lines from Bharati. In one he thunders *Acchamillai, acchamillai, acchamenbadillaiyey / ucchimeethu vaanidinthu vizhuginra bothinum / acchamillai, acchamillai, acchamenbadillaiyey* (We have no fear, no fear at all, even if the skies break and fall on our heads, we have no fear). In another he tells children to run about and play together: *Odi vilaiyaadu paappa… koodi vilaiyaadu paappa*. He burned with the desire for freedom and the emancipation of women, even as he sang about wiping out discrimination of every kind, stomping up and down streets, reciting his poems in an impassioned frenzy — all this by the time he was 39, when he died (in 1921) following complications after having been trampled upon by a temple elephant.

Bharati naturally leads to Kabir. Anybody who has studied Hindi in school will know the *doha* (couplet): *Kasturi kundali basey, mrig dhoondai ban mahi /Aise ghat ghat Ram hai, duniya dekhe nahi* (the deer roams

the forest following the scent of musk which actually lies within itself, even as we seek god outside ourselves). Or this one: *Bura jo dekhan main chala, bura na miliya koy / Jo dil khoja aapana, mujhsey bura na koy* (I sought the bad in others but discovered, when I looked within, that there was no one as bad as myself).

The search naturally led to the master who wove pure magic with his words: Rabindranath Tagore who turned down a knighthood from the British in protest against the Jallianwala Bagh massacre, saying the bejeweled necklace did not become him, it hurt him to wear it (*Ei monihaar aamaay naahi shaajay / Erey porthey geley laagey, erey chheenthey geley baajey*).

This brought back memories of a late evening in Ooty (now Udagamandalam), sitting on a low wall by a sloping road just outside the home of a dear friend's aunt, singing Rabindra Sangeet to our heart's content. One of the poems her uncle recited that evening was about a dusky beauty called Krishnakali whom the whole village calls 'dark', in which every stanza ends with the line: *Kaalo? Taa shey jotoee kaalo hok, dekhechhi taar kaalo horin chokh* (Dark? No matter how dark she may be, I have seen her black gazelle eyes). This line sends a shiver of delight up my spine each time I recall it.

Ho Chi Minh, the venerable Vietnamese leader, former prime

minister and president, who led the independence movement of the Democratic Republic of Vietnam and who worked towards the unification of North and South Vietnam, wrote a series of poems when he was a prisoner of the Chinese in 1942–43. He was smart enough to write in Chinese so that his captors could read what he was writing and thus would not be suspicious, as we often are even when we hear people speak in a language we do not understand. The edition of *Prison Diary* on my bookshelf has the poems in Chinese, Vietnamese and English! Here's one small sample from Uncle Ho:

Neither high up nor far away/On neither emperor's nor king's throne/ You're only a little slab of stone/ Standing on the edge of the highway.

People ask you for guidance/You stop them from going astray/And tell them the distance/O'er which they must journey.

The service you render is no small one/People will remember what you've done.

Some of you may remember reading in the papers in 2002 about a young man unfurling the Tibetan national flag and a banner screaming 'FREE TIBET' from the 14th floor of Mumbai's Oberoi Towers when the Chinese Prime Minister Zhu Rongji

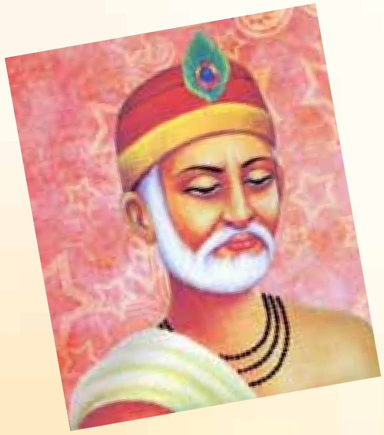

was addressing business people inside the building. In 2005, you may have read about this young man protesting similarly when the then Prime Minister, Wen Jiabao, was in Bengaluru. The young man was Tenzin Tsundue, born in a refugee camp in India, and yearning for his homeland. I happened to meet him some years ago in Rajkot where he presented me with a slim collection of his writings, titled *Kora*. The first entry in that book is a poem that brings a lump to the throat every time. Here it is, 'Horizon':

From home you have reached/the horizon here.

From here to another/Here you go.

From there to the next/next to the next/horizon to horizon/every step is a horizon.

Count the steps/and keep the number.

Pick the white pebbles/and the funny strange leaves.

Mark the curves/and cliffs around/ for you may need/to come home again.

The need to find your home and the unstoppable passage of time are only two of the myriad themes that run through poems. The best remain impressed upon your heart forever. Actor Meena Kumari's inner life and churning permeate every poem in the collection, *Meena Kumari Ki Shayari*, introduced and collated by lyricist Gulzar to whom she willed her entire body of writing upon her passing. This poem is called *Lamhe* (Moments):

Kayi lamhe /Barsaat ki boondein hain/Naakaabiley-giraft/Seeney par aakar lagtey hain/Aur haath baddhaa/ Ki issey pehley/Phisal kar toot jaatey hain (Moments are like raindrops, they cannot be held. They fall upon you and before you can catch them, they slip away and break).

In *One Hundred More Poems From the Japanese* by Kenneth Rexroth (translation, obviously), there is this gem by Saigyo, which seems somehow connected to Meena Kumari:

Why should I be bitter/About someone who was/A complete stranger/ Until a certain moment/In a day that has passed.

Wow! In Japanese, just for the sound of it and of course for those who know the language, it goes (transliterated in the Roman script): *Utoku naru/Hito wo nanitote/Uramuramu/ Shirarezu shiranu/Ori mo arishini*

As the 17th–18th century Sufi poet Bulleshah, writing in Punjabi, says: *Sab ikko rang kapayee da / Ik aapey roop vataayee da* (Cotton is always white, and cloth of different colours is made from this cotton). So simple, so true, completely unforgettable. They say truth is beauty, beauty truth. This is the beauty of poetry, this is the truth of poetry. A brilliant collection of "remembered verses from pre-modern South India" called *Poem at the Right Moment* reminds us of this sentiment in a short Sanskrit poem:

Samsaara-visha-vrikshya dvey phaley amrutopamey/Kaavyaamruta-rasasvaada sangatthi saj-janaih saha

In other words: *The Tree of Life is bitter/but it has two sweet fruits:/good poetry/and a good friend.*

Indeed. Good poetry and a good friend. What more could we want?

The columnist is a children's writer and senior journalist.

रोटरी क्लब पांडिचेरी सेंट्रल - मंडल 2981

इस क्लब ने मुत्तुपेट्टई गाँव और नागपट्टीनम जिले के अन्य क्षेत्रों के गाजा तूफ़ान से पीड़ित 200 परिवारों तक घरेलु सामान और खाद्य सामग्री पहुंचाकर ₹2 लाख तक की राहत सामग्री वितरित की।

रोटरी क्लब तिरुचेनगोड़े - मंडल 2982

सलापलायम गाँव में एक पशु चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया जिसमें पशुपालन विभाग के एक सरकारी अधिकारी की मौजूदगी में 500 से अधिक पशुओं की विभिन्न बीमारियों के लिए जाँच की गई।

रोटरी क्लब चोपड़ा - मंडल 3030

क्लब द्वारा आयोजित एक गायन प्रतियोगिता का उद्घाटन सामाजिक कार्यकर्ता प्रभाबेन गुजराती द्वारा किया गया। प्रतियोगिता में उन्नीस विद्यार्थी समूहों ने भाग लिया।

रोटरी क्लब श्रीरंगम - मंडल 3000

पर्यावरण को हरित करने के उनके उद्देश्य के अंतर्गत म्युनिसिपल स्कूल में एक बीज गेंद बनाने की परियोजना का आयोजन किया गया। रोटेरियनों द्वारा विद्यार्थियों के पहचान पत्र बनाने के लिए एक मुफ्त रक्त समूहीकरण का भी आयोजन किया गया।

विधियाँ

रोटरी क्लब कॉस्मोपॉलिटन अहमदाबाद - मंडल 3054

₹1.65 लाख की कीमत की तीस तिपहिया साइकिलें अपंग मानव मंडल, एक गैर सरकारी संगठन, के विकलांग बच्चों को उपहार में दी गई। इन विशिष्ट बच्चों के जीवन को आसान बनाने के उद्देश्य से धन क्लब के भीतर ही जुटाया गया।

रोटरी क्लब बरेली मेट्रो - मंडल 3110

मुंडिया अहमद नगर में आयोजित किये गए एक चिकित्सा शिविर ने बड़ी संख्या में वहाँ आने वाले निवासियों को लाभान्वित किया। क्लब इस क्षेत्र में नियमित शिविरों का आयोजन करके समुदाय से वाहवाही प्राप्त करता है।

रोटरी क्लब चंडीगढ़ मिडटाउन - मंडल 3080

शहर के विभिन्न औषधालयों में वितरण के लिए राज्य टीबी सेल को 90 पैकेट दान किये जाने सहित टीबी के 150 मरीज़ों को पोषक तत्व अनुपूरक प्रदान किये गए। ज़ोन की एजी रितु सिंघल ने मरीजों और उनके परिवारों से ज्ञानवर्धक वार्तालाप किया।

रोटरी क्लब पूना डाउनटाउन - मंडल 3131

दिम्बे खुर्द गाँव में एक नेत्र शिविर आयोजित किया गया। विभिन्न बिमारियों के लिए आसपास के क्षेत्रों से करीब 200 वयस्कों की जाँच की गई। 120 लोगों को चश्में दिए गए और 20 लोगों की मोतियाबिंद के ऑपरेशन हेतु पहचान की गई।

रोटरी क्लब फरीदकोट - मंडल 3090

क्लब द्वारा एक सरकारी माध्यमिक शाला में मेधावी विद्यार्थियों को किताबें और पदक वितरित किये गए और पर्यावरण पर एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें प्रतिभागियों की अच्छी संख्या थी।

मंडल गति

रोई मंडल 3132

मराठवाड़ा क्षेत्र के लातूर, ओस्मानाबाद, बीड़, नांदेड़, परभानी, जालना, औरंगाबाद के रोटरी क्लब, सतारा, सोलापुर और अहमदनगर मंडलों ने दिवाली के पांचवे दिन सेनेटरी कर्मचारियों सहित 50,000 जरूरतमंद महिलाओं को साड़ी और ब्लाउज सामग्री देकर भाऊबीज उत्सव मनाया।

रोटरी क्लब बॉम्बे बेव्यू - मंडल 3141

रोटरी क्लब रामलाह, इज़राइल, मंडल 2490 और TRF के साथ साझेदारी में एक वैश्विक अनुदान के तहत ₹40 लाख के चिकित्सीय उपकरण सैंट एलिज़ाबेथ अस्पताल को दान किये गए। अस्पताल में एक विशाल स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया जहाँ 500 लोगों की विभिन्न बिमारियों के लिए जाँच की गई।

रोटरी क्लब पंडारीपुरम - मंडल 3150

क्लब की प्लास्टिक विरोधी मुहिम के अंतर्गत डीजी रमेश वान्गला ने एक सब्जी बाज़ार में 5,000 कपड़े के थैले वितरित किये। उन्होंने महिला सशक्तिकरण परियोजना के तहत एक सिलाई मशीन केंद्र का भी उद्घाटन किया।

रोटरी क्लब बीदर फोर्ट - मंडल 3160

डीजी के मुंशी गिरीश ने राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक स्वागत बोर्ड का उद्घाटन किया जिसने क्लब की प्रत्यक्षता में वृद्धि की। बोर्ड का प्रायोजन क्लब के सदस्य सुभाष बशेटी द्वारा किया गया।

रोटरी क्लब मैसूर - 3181

अपनी प्लैटिनम जयंती को चिन्हांकित करने के लिए, क्लब ने एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया जिसका उद्घाटन तीन प्रमुख धर्मों के प्रतिनिधियों द्वारा किया गया। रोटरेक्टरों के साथ, सदस्यों ने कुष्ठ रोग केंद्र पर बच्चों को कपड़े दिए।

विधियाँ

रोटरी क्लब मुरीकासेरी - मंडल 3201

एक अनाथालय, असीसी संतोष भवन और एक वृद्धाश्रम, स्नेहातीर्थम के निवासियों को उपहार दान देने के लिए क्लब अध्यक्ष सनी पैमबिलिल के नेतृत्व में रोटेरियनों ने वहाँ का दौरा किया। बाढ़ से बुरी तरह प्रभावित तीन आंगनवाड़ियों के बच्चों का मनोबल बढ़ाने के लिए क्लब द्वारा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

रोटरी क्लब कोलोनचेरी - मंडल 3211

बाढ़ राहत प्रयासों के हिस्से के रूप में क्लब कुए का निर्माण और पुराने कुओं की सफाई ₹3 लाख खर्च कर के निर्मित कर रहा हैं। स्नैहाविडु के तहत ₹5 लाख का एक घर एक लाभार्थी के लिए बना रहा हैं।

रोटरी क्लब वनियमबाड़ी मिडटाउन - मंडल 3231

चेत्तीनाद सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल के सहयोग से एक हृदय जाँच शिविर का आयोजन किया गया। 150 लाभार्थियों में से 10 को सर्जरी के लिए चुना गया।

रोटरी क्लब ग्रीन लैंड सिलचार - मंडल 3240

एक स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया जिसमें एक प्रतिष्ठित चिकित्सक द्वारा रक्त शर्करा और रक्तचाप जैसे मापदंडों का परीक्षण किया गया। शिविर में मरीज़ों को मुफ्त में दवाइयां वितरित की गई।

रोटरी क्लब बेलूर - मंडल 3291

क्लब की वैश्विक अनुदान परियोजना के तहत कोलकाता के एक नर्सिंग होम में एक 17 वर्षीय सहित पांच फटे-होंठ वाले मरीज़ों का ऑपरेशन किया गया।

वी मुत्तुकुमारण द्वारा संकलित
एल गुणाशेकरण द्वारा रुपांकन

मीठी पत्तियों वाला नीम का पेड़

जी सिंह

परिवार के साथ नारायण नस्कर (बाएं से दूसरे) और उनकी पत्नी मानती।

नारायण चंद्र नस्कर अब 85 वर्ष के है और दशकों से उनके होठों पर केवल एक ही प्रार्थना रही थी - अपने उन रिश्तेदारों से मिलने की जिनके ठिकाने का उन्हें पता नहीं था।

70 सालों बाद उनकी प्रार्थनाएं सुनी गई जब वह अपने परिवार के सदस्यों से मिले जिन्हें लगा था कि वह जिंदा नहीं है। पिछले साल जब वह अक्टूबर में अपने घर लौटे तो उन्हें अपनी किस्मत पर यकीन नहीं हो रहा था।

नस्कर दस बच्चों में सबसे छोटे थे। ''मेरे पिता के पास ज़मीन का एक छोटा सा टुकड़ा था जो हमें पालने के लिए पर्याप्त नहीं था। हमें उचित शिक्षा नहीं मिली और मेरे भाइयों ने बहुत छोटी उम्र में ही काम करना शुरू कर दिया था। फिर मैंने भी उनका हाथ बंटाने का निश्चय किया,'' वह कहते है। जब वह 15 साल के थे, तो वह अपने भाई के गेराज में काम करने हेतु कोलकाता चले गए। ''मैं कोलकाता जाने के लिए छोटी लाइन वाली ट्रेन पकड़ता था जिसमें यात्रा के लिए 50 पैसे लगते थे। आजकल, उसी यात्रा के लिए लगभग 10 लगते है। जल्द ही मुझे नेपाल के गेराज से एक अच्छा प्रस्ताव प्राप्त हुआ और मैं बिना अपने भाई को सूचना दिए कोलकाता से निकल गया। तब से मैंने अपने परिवार के साथ संपर्क खो दिया।''

उन्होंने कुछ माह नेपाल में एक मैकेनिक के रूप में कार्य किया और फिर 1984 में रेणुसागर जाने से पूर्व, जहाँ वह एक एल्युमीनियम निर्माण कम्पनी में प्रथम श्रेणी के ऑटो मैकेनिक के रूप में नियुक्त हुए थे, उन्होंने विभिन्न अन्य जगहों पर कार्य किया। तब तक उनका उनके परिवार से संपर्क पूरी तरह टूट गया था। उन्होंने पश्चिम बंगाल के नादिया जिले में रहने वाली मिनाती से शादी की।

रेणुसागर में वह दिलीप दास से मिले जो हावड़ा जिले का रहने वाला था और उससे उन्होंने उनकी जड़े तलाशने की विनती की। नस्कर को अपने घर के बारे में कुछ याद नहीं था सिवाय इसके कि वहाँ के रेलवे स्टेशन का नाम पन्तिहल था और उनके घर के आंगन में एक नीम का पेड़ था जिसकी पत्तियाँ मीठी थी। वह याद करते है कि उनके माता-पिता उस पेड़ को लगाने के लिए झगड़ रहे थे और कैसे उनकी माता दावा कर रही थी कि उसकी पत्तियाँ मीठी होंगी। उनके शब्द भविष्यवाणी बन गए।

दिलीप दास कहते है कि उस नीम के पेड़ ने उनके परिवार का पता लगाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की, ''मैंने यहाँ आकर लोगों से उस पेड़ के बारे में पूछा, लेकिन किसी को भी उसके बारे में कोई जानकारी नहीं थी। बल्कि वह मुझे पागल समझ रहे थे जो मैं मीठी पत्तियों वाले नीम के पेड़ की तलाश में था। अंत में, एक बूढ़े आदमी ने मुझे बताया कि इस तरह का पेड़ डांगा गाँव के इचापुर सियाल में है। मैं तुरंत वहाँ पहुंचा और सोमनाथ नस्कर से मिला, जो नारायण के ही एक रिश्तेदार है,'' वह कहते है।

सोमनाथ (55) अपने चाचा के बारे में सुनकर फूट-फूटकर रोने लगे जिनके बारे में उन्होंने अपने पिता से सुना था। ''मैं तब पैदा भी नहीं हुआ था जब वह घर छोड़कर चले गए थे हालाँकि मेरे पिता ने मुझे मेरे एक चाचा के बारे में बताया था जो गायब हो गए थे और कभी नहीं लौटे। जब

मैंने सुना कि वो जिंदा है तो मुझे बहुत ख़ुशी हुई,'' वह कहते है।

वापस लौटने के बाद नारायण नस्कर ने उस नीम के पेड़ को गले लगा लिया और घंटों तक रोते रहे क्योंकि उस पेड़ ने ना सिर्फ उनकी घर वापसी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी बल्कि उनके माता-पिता से जुड़ी यादों को भी ताज़ा कर दिया था।

वह अब अपना अधिकांश समय उस तालाब के पास बिताते है जहाँ वह बचपन में अपने दोस्तों के साथ तैरा करते थे और एक स्थानीय राजनैतिक पार्टी कार्यालय के बरामदे में भी बैठते है जो कभी ब्रिटिश राज के दौरान कचहरी (कर संग्राहक कार्यालय) था। ''हमारा देश तब ब्रिटिश शासन के अंतर्गत था। देशभक्ति की लहर हमारे गाँव तक भी पहुँची। स्वतंत्रता सैनानी एक गाँव से दूसरे गाँव तक अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ नारे लगाते हुए कूच करते थे। हम उनका अनुसरण करते थे, नारे लगाते थे, हालाँकि हमें उन दिनों आज़ादी का व्यापक अर्थ नहीं पता था। मुझे याद है बुजुर्ग लोग अख़बार पढ़ते थे और महात्मा गाँधी एवं सर पर मंडरा रहे विभाजन पर चर्चाएँ करते थे,'' वह कहते है, यादों के गलियारों में जाते हुए।

नस्कर को अपने घर के बारे में कुछ याद नहीं था सिवाय इसके कि वहाँ के रेलवे स्टेशन का नाम पन्तिहल था और उनके घर के आंगन में एक नीम का पेड़ था जिसकी पत्तियाँ मीठी थी।

''मेरी हमेशा से ही इच्छा थी कि मेरा अंतिम संस्कार उस गाँव में ही हो जहाँ पर मेरे दादा-दादी जिए और खत्म हो गए। मैं चाहता था मेरा शरीर मेरे गाँव की ही मिट्टी में जा मिले जहाँ मैं पैदा हुआ था और खेलता था। आखिरकार भगवान को मुझपर दया आ गई और मेरी दुआ कबूल हुई। अब मुझे और कुछ नहीं चाहिए, वह कहते है, जब काले बादल धरती को भिगोने के लिए बरसते है।'' ■

नायन पटेल को लेप्रा का ट्रस्टी नियुक्त किया गया

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब वेस्टमिंस्टर वेस्ट, मंडल 1130 लंदन, के एक सदस्य नयन पटेल को यूके स्थित विशेषज्ञ चैरिटी लेप्रा के न्यासी बोर्ड में नियुक्त किया गया है, लेप्रा भारत, बांग्लादेश और मोजाम्बिक में कुष्ठ रोग के उन्मूलन के लिए निरंतर कार्यरत्त है।

इसके अतिरिक्त, पटेल राष्ट्रमंडल में एक शिक्षा परिषद के ट्रस्टी हैं, जो एक संसद-आधारित एनजीओ है और साथ ही वे रोटरी इंडिया साक्षरता मिशन के सलाहकार परिषद और ऑक्सफोर्ड इंडिया सेंटर फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट फॉर सोमरविले कॉलेज, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में सेवारत हैं। संगठन में उनके योगदान और वैश्विक स्तर पर धर्मार्थ कार्यों के लिए, उन्हें हाल ही में रोटरी इंटरनेशनल के *'Service Above Self'* पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया था।

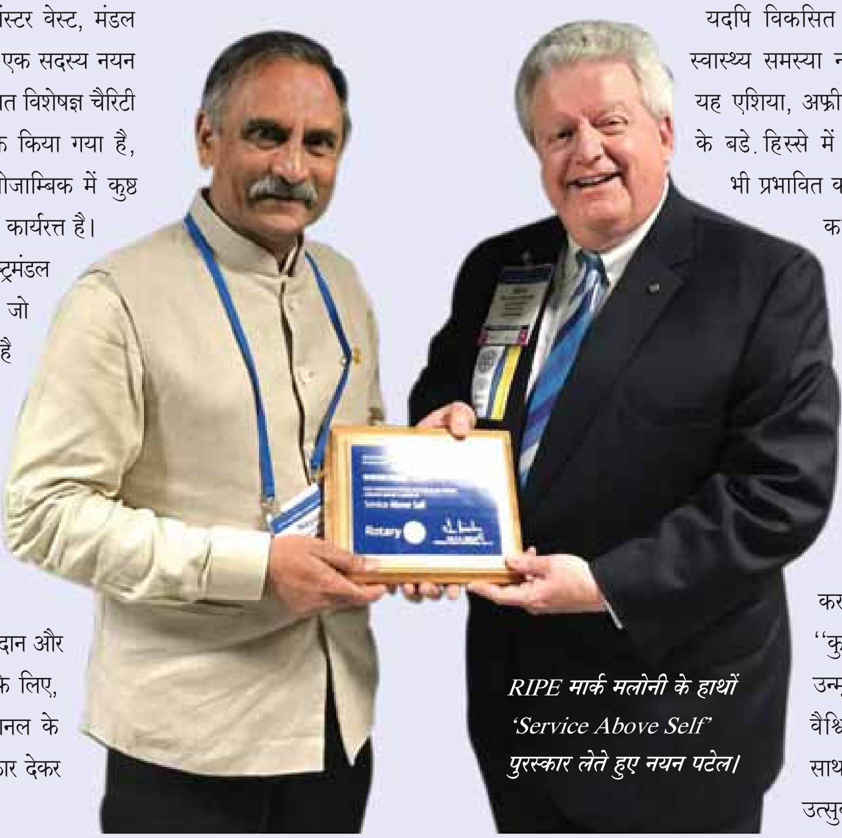

RIPE मार्क मलोनी के हाथों 'Service Above Self' पुरस्कार लेते हुए नयन पटेल।

यदपि विकसित देशों में कुष्ठ रोग अब स्वास्थ्य समस्या नहीं रह गई है, तथापि यह एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के बडे हिस्से में लाखों लोगों को आज भी प्रभावित करता है। जागरूकता की कमी, काल्पनिक बातों, सामाजिक सांस्कृतिक मान्यताओं और कुष्ठ रोग से जुडे कलंक, आज सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के सामने सबसे अधिक अहम चुनौतियाँ हैं। अपने नए दायित्वों को स्वीकार करते हुए, पटेल ने कहा, ''कुष्ठ रोग को जड़-मूल से उन्मूलित करने के लिए इस वैश्विक लड़ाई में बोर्ड के साथ काम करने के लिए मैं उत्सुक हूँ।'' ■

जब दिल और दिमाग संतुलन

भरत और शालन सवुर

अक्सर हम अपने दिमाग की सुनते है और दिल की बात को नज़रंदाज़ करते है। क्या कोई अंतर है? हाँ। दिल हमारे सहजज्ञान के काफी नज़दीक होता है, हमारे मन को महसूस हो जाता है कि किसी स्थिति में क्या सही है और क्या नहीं। विडंबना है, जहाँ दिमाग बिना सोचे समझे भागता रहता है, वहीं दिल धीमी, अधिक नपी-तुली, सचेत चाल से चलता है। दिमाग परखता है और असहिष्णु हो सकता है, दिल स्वीकारता है और अनेक मौके देता है। जहाँ अहितकर आदतों को दिमाग हाँ कहता है, वहीं दिल उन्हें ना कहता है। जहाँ दिमाग बेताबी से झल्ला उठता है, वहीं दिल प्रतीक्षा करने को तैयार होता है।

सच यह है कि एक संतुलित जीवन के लिए दिल और दिमाग का होना जरूरी है। उन्हें राज़ी होने की जरूरत नहीं है, लेकिन वे हमें विचार करने, चिंतन करने और सुरक्षात्मक कदम उठाने का समय देते है। जबकि जीवन के उतार-चढ़ाव के सामने समर्पण करने की आवश्यकता के समय दिल हमारा प्यारा साथी होता है। और जब चीज़ें बदलती है तो दोनों हमारे निर्णय को परिवर्तित करने में मदद करते है।

याद करो और सुनो

आपके पास एक अन्तर्निहित निजी मार्गदर्शन सेट अप है; आपको बस उसे सुनने की ज़रूरत है। यह आपको आपकी स्वयं की चेतना से जोड़ता है कि आपके लिए क्या सही है - एक मूलभूत स्थिरता जो आपको समझदारी से आचरण करने देती है।

हम में से अधिकांश लोग बिना सोचे समझे जो भी हमारे दिमाग में आता है बोल देते है, विशेषरूप से तब जब हम अपने प्रियजनों के साथ होते है। जब यह नकारात्मक होता है, तो यह रिश्ते में असामंजस्य पैदा कर देता है और हमारी स्वयं की स्थिरता को हिला देता है। दूसरी ओर, बोलने से पहले, यदि हम

में हो...

शांति से अपने दिल की आवाज़ को सुने और सवाल करने की सुकरात की विधि को लागू करे: ''क्या यह मदद करेगा? क्या यह वास्तव में जरूरी है? क्या मैं अपने अहंकार को बढ़ावा दे रहा हूँ?'' तो हमारी स्थिरता एक भव्य ऑर्केस्ट्रा में एक परिचालक की तरह होती है और समरसता इसकी मधुर, अनसुनी धुन को गुंजाएमान करता है।

दिल और दिमाग के बीच के संबंध को पोषित करें। दिमाग केवल हमारे अहंकार, सूचना और अनुभव को संयम में रखता है, हमारे ज्ञान और स्थिरता को नहीं। दिल हमारी आत्मा, गहरे ज्ञान और बुद्धिमत्ता को नियंत्रित करता है। जब दोनों में से प्रत्येक एक दूसरे के पुल को पार करते है, तो हम स्थिर और संतुलित रहते है।

सुबह का एक मंत्र

दिल और दिमाग को साथ लाने के लिए, एक योग शिक्षक द्वारा दिए गए इस प्रतिज्ञान के साथ दिन की शुरुआत करें: ''हम स्वयं को अच्छे तरीके से केवल तब विकसित करते है जब हम हर समय दिल और दिमाग की संतुलित अवस्था को बनाए रखते है।''

फिर प्रत्येक कर्तव्य, कार्य या क्रिया कलाप को ऐसे करें जैसे आपने उसे चुना हो। उसे पूरी शिद्दत से बिना किसी द्वेष के, केवल प्रेम के साथ करें। भले ही समाज द्वारा इसे 'तुच्छ' समझा जाए, आप इसे श्रेष्ठ समझकर सम्मान दें क्योंकि उच्चतम संवेदन के हिसाब से: सभी काम बड़े है। प्रत्येक गतिविधि पर ऐसे ध्यान केन्द्रित करें जैसे कि यह एकमात्र गतिविधि है जो आपको करनी है। पूरे ध्यान से इसे करें। उसपर उसी मधुर तल्लीनता के साथ ध्यान केन्द्रित करें जैसे एक खिलौने से खेलते वक्त एक बच्चा करता है।

जब आप इस दृष्टिकोण के साथ दिन-प्रतिदिन कार्य करते है, तो एक निश्चल खुशहाली का मधुर भाव आपमें संग्रहित होता है - इस बात का गहराई से बोध होना कि आप उसी स्थान पर है जहाँ आपको होना चाहिए। यह जानना एक आशीर्वाद है - आप पूर्ण रूप से मुक्त हो जाते है। जहाँ भय था, वहाँ व्यापक परिपूर्णता होती है; जहाँ आतंरिक सिहरन थी, वहाँ असीम शांति होती है; जहाँ आक्रोश था, वहाँ विस्तृत, मंद स्वीकृति होती है। भावनात्मक तनावों से छुटकारा पाने से अत्यंत राहत, गहन शांति और आत्मनिर्भरता की गरिमा के साथ एक सुखद आनंद की प्राप्ति होती है।

एक खुशहाल दिल

स्पष्ट दिल और दिमाग के साथ, शारीरिक तनाव से निपटना भी आसान होता है। शोध से पता चला है कि जब पेट वसा से मुक्त होता है तो दिल बहुत खुश होता है, पूरी तरह से चिंतारहित और प्रसन्नचित। अच्छा दिखने से इसका कोई लेना-देना नहीं है, बल्कि अच्छा महसूस करने से है। और इसका पूर्ण रूप से संबंध दिल का दौरा ना पड़ने से है।

शोधकर्ता कहते है कि मध्यपट में वसा का होना इस बात सूचक है कि हमारी आंतों में अवांछित वसा है। अवांछित वसा से होने वाला खतरा है दिल, किडनी और यकृत जैसे हमारे अंगों के चारों तरफ जमा होने की इसकी प्रवृत्ति। यह एक रोड़ा है। यह उनपर बोझ डालता है, उन्हें आसानी से कार्य करने से रोकता है और उनपर दबाव अत्यधिक है। इसलिए, इस तनावपूर्ण वसा को नित्य 42 मिनट पैदल चलकर या 30 मिनट आर्मचेयर साइकिल चलाकर कम करें। इसके बाद 30 बार क्रंच करें। उसके बाद, 30 बार अधिक खिंचाव वाले पांच व्यायाम करें: भार लेकर, पीठ के बल लेटें। हाथों को ऊपर उठाते हुए भार को ऊपर की ओर इंगित करें। जब तक आप अपने पेट पर खिंचाव महसूस ना करें तब तक अपने दोनों हाथों को फर्श पर पीछे की ओर रखें। फिर से उठाएं।

मीठा बंद करें

चीनी रक्तप्रवाह में इन्सुलिन को बढ़ाती है जो वसा को जलने से रोकता है। वसा, शराब और नमक से भी दूर रहें। जब इनकी मात्रा पहले से ही अधिक है जिसे हमें कम करना है तो इसे और क्यों लेना।

व्यायाम के सत्र को इस सरल और मददगार आसन से साथ खत्म करें: खड़े हो जाएँ, पंजो को एक साथ रखें, हाथों को बगल में रखें। आँखें बंद करें, दिमाग को शांत करें। दोनों हाथों को ऊपर की ओर तब तक उठाए रखें जब तक उंगलियां छत की ओर इंगित ना हो जाए और दोनों हथेलियाँ एक दूसरे को स्पर्श ना करने लगे। इस अवस्था में एक मिनट तक रहें। यह सभी अंगों को उनके नियत स्थान पर कटकने में सक्षम बनाता है। हाथों को नीचे कर लें।

मस्तिष्क पर ध्यान दें

इन सबसे ऊपर, इस सनक, सोचने, अनुमान लगाने, हर स्थति में चिंता करने और बुरा देखने की इस बुरी आदत का त्याग करें। एक नाराज़ दिमाग सभी चीज़ो और सभी लोगों को नीरसता, क्लेश और भय से भर देता है। एक चिड़चिड़े दिमाग को एक प्यारी सी मुस्कान भी उपहास नज़र आती है, एक सुन्दर व्यक्ति भद्दा नज़र आता है, एक लयबद्ध ढोल शोर नज़र आता है। मेरी प्रार्थना है कि सभी का मन प्यार, आशीर्वाद, स्वीकृति और गर्मजोशी से भरा हो।

यहाँ मस्तिष्क के तीन नियम है जो हृदय के नियमों के साथ तालमेल बैठाते है जिनका मैं अभ्यास करता हूँ और बहुत अच्छी तरह प्रभावी पाता हूँ:

- कल्पना ना करें बल्कि तथ्यों को जानें।
- आँकें नहीं बल्कि कारणों को समझे या उसे जाने दें।
- किसी को भी चोट पहुँचाने से पहले सौ बार सोचें और उनके और अपने दर्द को महसूस करें जिसका एहसास बाद में होना ही है।

जब आप दिल और दिमाग में तालमेल बैठा लेते है, तो फिर ऐसा लगता है मानो पूरा ब्रह्माण्ड आपकी आवृत्ति के हिसाब से चल रहा हो और एक अदृश्य लौकिक वाहक पट्टी पर आपको शानदार सामग्री भेज रहा हो।

लेखक फिटनेस फॉर लाइफ, *और* बी सिम्पली स्पिरिचुअल - यू आर नैचुरली डिवाइन *के लेखक है और फिटनेस फॉर लाइफ कार्यक्रम के शिक्षक है।*

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

मैसूर में एक रोटरी सर्कल

टीम रोटरी न्यूज़

गांधी जयंती दिवस के अवसर पर, रोटरी क्लब मैसूर मिड्टाउन, मंडल 3180 ने मैसूर शहर के बाह्य क्षेत्र में एक आवासीय क्षेत्र में एक सर्कल के सौंदर्यीकरण का कार्य आरंभ किया, क्योंकि इसका जीर्णोद्धार करना अत्यंत आवश्यक था तथा यातायात का दबाव भी कई गुना बढ़ गया था। क्लब के अध्यक्ष प्रह्लाद ने इस परियोजना की पहचान की और सदस्यों ने इसके लिए योगदान दिया और तीन माह की अल्पावधि में ₹3.5 लाख की लागत से सर्कल का निर्माण किया गया और इसे जनता को समर्पित किया गया।

सौंदर्य की दृष्टि से तैयार किए गए सर्कल में रोटरी द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली विभिन्न सेवाओं को दर्शाते हुए भित्ति चित्रों का निर्माण किया गया था और उद्घावटन के दिन रंगीन तरीके से सजाए गए सर्कल ने बहुत से लोगों का ध्यान आकर्षित किया जिससे रोटरी की सार्वजनिक छवि को बेहतर बनाने में मदद मिली। ■

वर्ष 2019-20 के लिए मंडल 3110 अपने AGयों को तैयार कर रहा है

AG's और PDG's के साथ, DGE किशोर कटरू।

रोटरी वर्ष 2019-20 के सहायक गवर्नरों के लिए मंडल 3110 ने एक कार्यशाला आयोजित किया। बैठक की अध्यक्षता डीजीई किशोर कटरू ने की। इस बैठक में आगामी वर्ष के लक्ष्यों पर चर्चा की गई और पहले महीने के दौरान शुरू आती 30,000 डॉलर के साथ एजीएफ टीआरएफ के लिए पर्याप्त योगदान करने पर सहमति व्यक्त की गई। कटरू का लक्ष्य वर्ष के दौरान बरेली में एक डायलिसिस यूनिट, एक कैथ लैब और एक आई केयर सेंटर की स्थापना करना है।

टीम ने निरंतर स्क्रीनिंग शिविरों का आयोजन करते हुए परिवर्जनीय अंधापन को दूर करने का संकल्प लिया, जो आईआईपीएन सुशील गुप्ता के सपने के अनुकूल है। कत्रु ने कहा, ''हमने ताइपे सम्मेलन से पहले 10,000 गाँवों को अंधापन-मुक्त बनाने का लक्ष्य निर्धारित है, और अगले वर्ष 150 गाँवों को गोद लिया जाएगा।'' वह मोहन आई इंस्टीट्यूट और श्रेष्ठ नेत्र चिकित्सालय के साथ एक MoU पर हस्ताक्षर करेंगे, जिसका उद्देश्य ग्रामीणों के नि:शुल्क मोतियाबिंद और रेटिना डिटैच्मन्ट की सर्जरी करना है। ■

On the racks

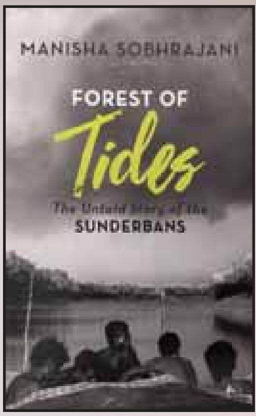

Forest of Tides: The untold story of the Sunderbans

Author : **Manisha Sobhrajani**
Publisher : **Hachette India**
Pages : **166; ₹399**

In *Forest of Tides*, Manisha Sobhrajani recounts her experience of living and working in the Sunderbans supervising the construction of a charitable hospital. Adjusting to a life without basic amenities, getting to know the local people, from honey-gatherers, wood collectors, forest officials to even a former poacher, this deeply personal account paints a richly nuanced picture of a challenging yet extraordinary land.

The most enigmatic of India's landscapes, the Sunderbans is a land where dense mangrove forests, a sprawling delta and rare wildlife come together to form a biodiverse region.

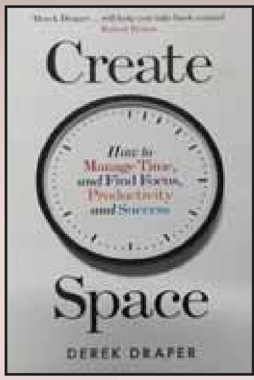

Create Space

Author : **Derek Draper**
Publisher : **Hachette India**
Pages : **306; ₹399**

This book shows how to push back against the tide and create space in your life to think, relate and act at deeper levels. Learn to focus, manage time and take control of your mental and physical space to excel in anything. The author shows how to do just that, drawing on real-life examples and the best of both classical and cutting-edge psychological thinking. You'll find here tips used by some of the biggest organisations to set strategy, raise productivity and create change.

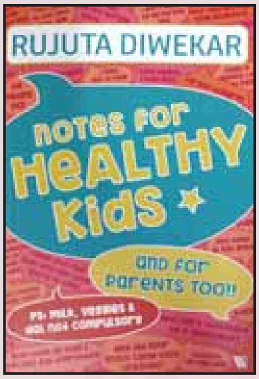

Notes for Healthy Kids and for parents too

Author : **Rujuta Diwekar**
Publisher : **Hachette India**
Pages : **246; ₹350**

A book for both parents and kids, *Notes for Healthy Kids* focuses on clearing the underlying food confusion that leads to endless diet trends. It empowers kids to make the right food choices for themselves. Targeted and misleading advertisements, and policymakers failing to protect children's interest are featured here. It combines the latest in nutrition science with time-tested wisdom of our grandmothers, and offers easy-to-follow advice for all aspects of a child's life.

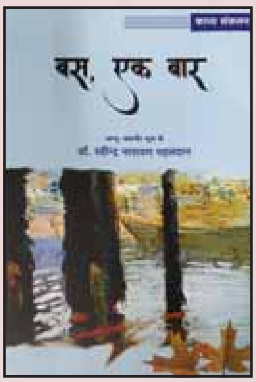

Bus ek baar

Poet : **Dr Ravindra Narayan Pehalwan**
Langage : **Hindi**
Genre : **Anthology**
Publisher : **Neeraj Book Centre**
Pages : **200; ₹200**

This is a composition of 200 short, beautiful and real-life inspired Hindi poems. The author writes about relationships and responsibilities, love, peace, life and death, celebration, agony, and many other human aspects. *Bus ek baar* covers a range of topics that can connect both children and adults. Ravindra Narayan Pehalwan draws parallels between real life incidents and his own experiences. The simple compositions will touch your heart.

Compiled by Kiran Zehra
Designed by Krishnapratheesh S

भूतपूर्व छात्र सम्मेलन की अग्नि परीक्षा

LBW

टी सी ए श्रीनिवासा राघवन

उम्रवृद्धि के भी अपने कई फायदे है, जिनमें से एक है आपके द्वारा आराम करते समय अन्य लोगों को काम करते हुए देखना। लेकिन दूसरो की परेशानी देखकर खुश होने के बदले में, आपको कुछ दुख-दर्द भी होता है। ये, हालाँकि, उस अन्य समस्या के आगे फीकी है जो भूतपूर्व छात्रों का पुनर्मिलन समारोह रखने के पूर्ण रूप से हतोत्साहित करने वाले चलन के रूप में सामने आती है। मैं पहली बार ऐसे समारोह में 12 साल पहले गया था जब हम में से कोई भी सेवानिवृत्त नहीं हुआ था, और इसलिए वह पूर्ण रूप से निरर्थक था। वह स्कूल की बात थी। मैंने उस स्कूल में केवल एक वर्ष या और थोड़ा बहुत समय ही बिताया था और मैं इस को लेकर आश्वस्त नहीं था कि मैं एक 'भूतपूर्व छात्र' में गिना जाऊंगा या नहीं। परंतु फिर भी उन्होंने मुझे आमंत्रित किया। पहले तो मैंने मना कर दिया था लेकिन उस समारोह की प्रभारी एक भूतपूर्व छात्रा के बार-बार आग्रह करने पर मैं मान गया।

वेन्यू एक पुराना, मरम्मत किया गया महल था, जो अब एक खूबसूरत लॉन वाला बुटिक होटल है। मैं कुछ देर थोड़ी ठीक-ठाक विस्की को पीते हुए यहाँ-वहाँ घूमकर लोगों को पहचानने की कोशिश कर रहा था। एक भी चेहरा थोड़ा भी जाना-पहचाना नहीं लगा और उस उलझन में और अधिक बेइज्जती तब महसूस हुई, जब मैं अपनी दूसरी ड्रिंक लेने के लिए गया तो एक भूतपूर्व छात्र, जो बार को संभाल रहा था, ने मुझसे पूछा कि मैं कौन हूँ। ऐसे ही शब्दों में नहीं, लेकिन बेशक अस्पष्ट रूप से।

जब मैंने उसे बताया, वह हँसने लगा और कहा कि मैं जिस पार्टी के लिए आया हूँ ''वह पास वाले लॉन में चल रही है। लेकिन तुम अपनी ड्रिंक खत्म करो,'' उसने कहा। उनके लॉन के पास एक्साइज लाइसेंस नहीं है, इसलिए वहाँ कोई शराब नहीं मिल रही। हम बात कर रहे थे क्योंकि वह एक सज्जन व्यक्ति प्रतीत हो रहा था इसलिए मैंने उसके साथ तीसरी ड्रिंक भी ले ली।

करीब 20 मिनट बाद मैंने बगल वाले लॉन में जाने का निश्चय किया और उन दोनों लॉन को पृथक करने वाली हेज को उलांघ कर जब मैं वहाँ गया, तो वहाँ भी मुझे कोई जाना-पहचाना चेहरा नहीं दिखा। अंततः वह भूतपूर्व छात्रा जिसने सबको एक साथ मिलवाया था उसने पूछा क्या मैं फलाना व्यक्ति हूँ। मैंने कहा हाँ और उसने कहा उसे ऐसा इसलिए लगा क्योंकि वह मैं ही था जिसे पहचानने में उसे मुश्किल हो रही थी! बाकियों के साथ, उसने कहा, उसने स्कूल में 11 साल बिताए थे इसलिए उन्हें पहचानने में कोई मुश्किल नहीं थी। कुछ देर बाद मैं लोगों के सवालों से थक गया कि मैं कौन हूँ और फिर रात्रिभोज की घोषणा होने से पहले ही वहाँ से निकल गया।

अगला निमंत्रण कुछ माह पहले ही आया था, इस बार वह मेरे कॉलेज के एक भूतपूर्व छात्र द्वारा भेजा गया था। मुझे नहीं पता था कि वह कौन है इसलिए मैंने उसे नज़रंदाज़ कर दिया था। वह तब तक प्रतिदिन मुझे सन्देश भेजता रहा जब तक कि, एक बार फिर, मेरी मर्जी के खिलाफ जाकर, मैंने जाने का निर्णय नहीं लिया। नियत तिथि पर, ट्रैफिक में दो घंटे फंसे रहने के बाद मैं एक पांच सितारा होटल में पहुँचा। इस बार सबके द्वारा पहचाने जाना ही मेरी समस्या बनी। सब मुझे पहचानते थे और सभी मुझसे हाथ मिलाना चाह रहे थे। लेकिन मुझे यह पश्चिमी संस्कृति बिल्कुल पसंद नहीं है क्योंकि भगवान ही जाने वे हाथ कैसे थे। वह एक भयानक अग्नि परीक्षा थी। मैं उन लोगों से औपचारिक नमस्ते नहीं कर सका जो तब 16 साल के थे जब मैंने उन्हें पहली बार देखा था। कुछ देर बाद सबको देखकर जबर्दस्ती मुस्कराने और हमारी पहली मुलाकात के लगभग पचास सालों बाद एक दूसरे को देखकर ज़ोर से नकली हंसी हँसने से कि कौन अब कैसा दिखने लगा है, मेरा मुँह भी दर्द करने लगा। बहुत सारे भूतपूर्व छात्र अब दादा बन गए थे और बहुत से लोगों के बच्चे विदेश में कार्य कर रहे थे। सौभाग्य से, पत्नियों को तो नहीं लेकिन भूतपूर्व छात्राओं को आमंत्रित किया गया था। अधिक मायूसी।

बच्चों का विदेशों में काम करना और पोते-पोतियों के होने का संयोग, किसी अज्ञात कारण से, प्रतिष्ठा का प्रतीक और डींग मारने का विषय बन गया था। यदि आपके पास इनमें से कोई एक है तो आप दूसरे दर्जे पर होंगे और यदि आपके पास इनमें से एक भी नहीं है तो आप कुछ नहीं है। एक या दो बेचारे व्यक्ति जिन्होंने समझदारी दिखाते हुए कभी शादी नहीं की या जिन्होंने दूरदर्शिता दिखाते हुए, जल्दी तलाक ले लिया, उन्हें भीड़ से अलग कर दिया गया और वह जल्द ही चले गए थे। यह मेरे सबसे भयानक अनुभवों में से एक था जो एक दशक पहले हुए स्कूल के पुनर्मिलन से भी बदतर था।

मैंने वहाँ से भागने का निश्चय किया, लेकिन एक व्यक्ति बाहर निकलने वाले द्वार पर चंदा मांग रहा था, केवल ₹ 5,000, ''सर'', उसने धृष्टता के साथ कहा। मैं अपने पेट को पकड़कर बाहर निकल गया, यह कहते हुए कि मैं केवल बाथरूम जा रहा हूँ और इस तरह स्वयं को और अपने छोटे से बटुए को राहत पहुंचाकर मैंने चैन की साँस ली। मेरा यकीन मानिये, पेशाब रोकने से भी बदतर है एक कमरे में भूतपूर्व छात्र और छात्रीओं के साथ होना। ■

IA में भारतीय रंग

निर्वाचित मंडल नेताओं के जीवनसाथी, गे मलोनी के साथ IA में। चित्र में सोनल संघवी और माला भास्कर भी शामिल हैं।

ऊपर : (बाएं से) माला भास्कर, वानती रवींद्रन, सोनल संघवी और माधवी पांड्या।

बाएं : RIPE मार्क मलोनी और गे भारतीय प्रतिनिधियों के साथ।

चित्र सौजन्य : rotary.org और DGE गण, कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा।

Regn. No. TN/CCN/359/2018-2020
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP-421/2018-2020
Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: ₹35
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/05271 Rotary Samachar Published on 1st of every month

ADVT